॥ श्रीः ॥

श्री अतिहरिहरयागमाहात्म्यम्

श्री केदारदत्तः जोशी

श्री गोयनका परिवार

कलकत्ता-१

॥ श्रीः ॥

श्री अतिहरिहरयागमाहात्म्यम्
हवनाङ्गविधानं च

सम्पादकः

श्री केदारदत्तः जोशी

अवकाशप्राप्त प्रमुखाध्यापक (ज्योतिष)

का० हि० वि० वि०—वाराणसी-५

'हरिहर्ष निकेतन'

१/२८ नगवा—वाराणसी

२२१००५

[मूल्यं—सभक्ति मननम्]

फाल्गुन कृष्ण द्वितीया, बुधवार
सम्वत्—२०४५
दि० २२-२-८९

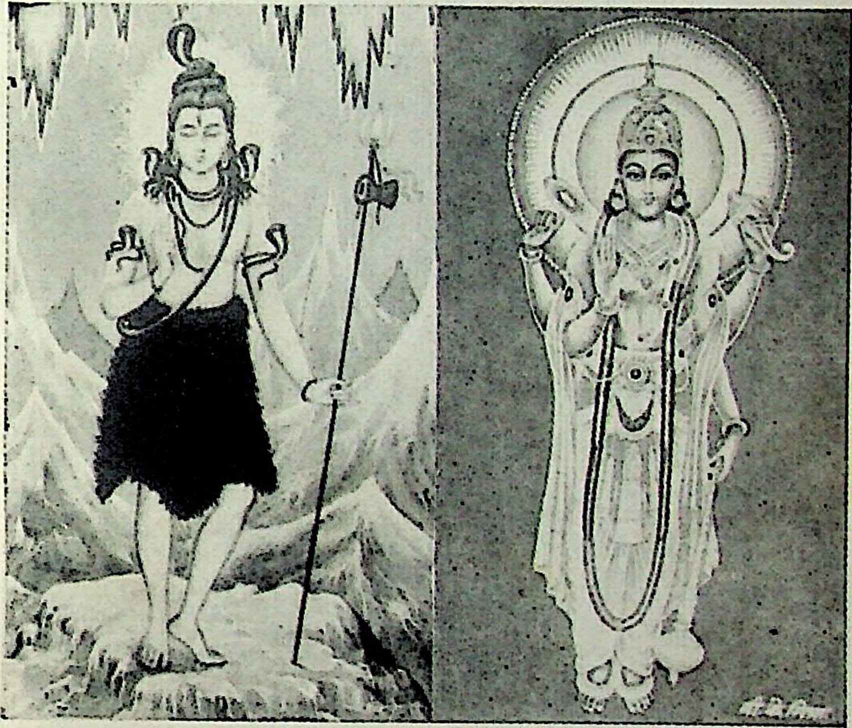
प्रकाशक
श्री गोयनका परिवार

मुद्रक
तारा प्रिंटिंग वर्क्स
कमच्छा-वाराणसी

॥ श्रीः ॥

॥ श्री हरिहराभ्यां नमः ॥

नमोऽस्तु नित्यं शिवकेशवाभ्यां स्वभक्तसंरक्षणतत्पराभ्याम् ।
देवेश्वराभ्यां करुणाकराभ्यां जगत्त्रयीनिर्मितिकारणाभ्याम् ॥



धर्मार्थकाममोक्षाख्यचतुर्वर्गप्रदायिनौ ।
वन्दे हरिहरौ देवौ त्रैलोक्यपरिपायिनौ ॥

॥ श्रीः ॥

॥ श्रीं हरिहराभ्यां नमः ॥

प्राक्कथन

'यज्ञ' शब्द के अनेक अर्थों में अध्यात्मिक दृष्टि से उच्चतम मानवता प्राप्ति के लिए जीवन-पर्यन्त शास्त्रों में वर्णित मानव आचरण का परिपालन करने में जीवन की आहुति देना अर्थात आवश्यकता पड़ने पर आत्मत्याग करना भी 'यज्ञ' कर्म है। कहा भी गया है—

सत्येन ब्रह्मचर्येण व्यायामेनाथ विद्यया।
देशभक्त्यात्मत्यागेन सम्मानार्हः सदा भव॥

अर्थात विश्व कल्याण के लिए आत्मत्याग करना भी एक सुन्दरतम 'यज्ञ' है।

अनन्त कोटि जीवों में मानव योनि भौतिक दृष्टि की एक विशेष उत्तम योनि है। ब्रह्माण्ड के सूक्ष्म से स्थूल तक की जीव योनियों में मानव योनि का स्थान सर्वोपरि है, तदुपरि देव या देवता योनियाँ सर्वोत्कृष्ट योनियाँ कही गई हैं।

भूमण्डल की भौतिक जीव योनियों के अतिरिक्त अनन्त ब्रह्माण्डनायक सर्वशक्तिमान सर्वैश्वर्य सम्पन्न उस परमात्मा की चन्द्रलोक में चान्द्री, भौम लोक में भौमिकी, बुध लोक में बौद्धिकी, जीव लोक में जैविकी एवं सौरी, शौक्री आदि अनन्त सृष्टियाँ हैं, इन सृष्टियों के ज्ञान के लिये मानव बुद्धि अध्ययन रत है, इस ज्ञान 'यज्ञ' की प्राप्ति में बुद्धि का सदुपयोग हो रहा है, यह भी एक बुद्धि 'यज्ञ' है जिसे शब्दों से नहीं आँका जा सकता है। इस प्रकार स्पष्ट है 'यज्ञ' शब्द के अनंत पर्याय हैं अर्थात् 'यज्ञ' ही 'ब्रह्म' है या ब्रह्म ही 'यज्ञ' है।

मानवीय दैनन्दिन प्रत्येक समीचीन कर्म का नाम भी 'यज्ञ' है। दिव्य देही देवता को अग्नि में स्वाहाकारपूर्वक आहुति देने में तथा अदृष्ट दिव्य शक्तियों की सन्तुष्टि से व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र का हित साधन होता है, अतः ये सभी 'यज्ञ' कर्म कहे जाते हैं। इसलिए कहा भी है कि— "यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म"।

वेदों का मुख्य विषय 'यज्ञ' है, यज्ञों के सम्पादन में वेदमन्त्रों का उच्चारण किया जाता है। यही नहीं यज्ञों से ही देवताओं की सृष्टि भी हुई है, कहा भी गया है—"यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवाः" इति।

वैदिक कर्मकाण्ड-निष्णात महामनीषियों ने तन्त्र एवं पुराणवचनों के प्रमाणिक आधार से अग्नि में हवनात्मक पूजा अनुष्ठानों का प्रचालन कर श्रद्धालु एवं धर्मानुरागी सज्जनों के लिए 'यज्ञ'

कर्म का सरल मार्ग प्रशस्त किया है। इस रीति के अनुसार विष्णुयाग, रुद्रयाग, चण्डीयाग, लक्ष्मी-नारायण याग, हरिहरयाग आदि ये सभी तत्तद्देवता की प्रधानता को स्वीकृत करते हुये प्रचलित हैं। इन यज्ञों में 'हरिहरात्मक यज्ञ' का अति विशिष्ट स्थान है। 'हरिहरात्मक यज्ञ', 'हरि' एवं 'हर' दो शब्दों में है किन्तु कालान्तर में 'हरिहर' के एकत्व रूप को न समझकर 'हरि' के उपासकों ने अपने को 'वैष्णव' एवं 'हर' के उपासकों ने अपने को 'शैव' कहकर ये दो सम्प्रदाय प्रचलित कर दिये। जो शास्त्र एवं समाज की एकता में बाधक हैं। वस्तुतः 'हर' (शिव) एवं 'हरि' (विष्णु) परब्रह्म के एक ही रूप हैं। जैसे शास्त्रों में कहा भी गया है—

शिवाय विष्णु रूपाय विष्णवे शिवरूपिणे।
दक्षयज्ञविनाशाय हरिरूद्राय वै नमः॥

अर्थात 'हरिहर' (भगवान विष्णु व भगवान शिव) को स्मरण करने वाले प्राणियों के पापों को दूर कर 'हरिहर' स्वर्ग देते हैं या पाप बन्धनों से मुक कर जोव मात्र को अपने में समाहित करते हैं। और भी कहा गया है—

यौ द्वौ शंखकपालभूषितकरौ मुक्तास्थिमालाधरौ,
देवौ द्वारवतीश्मशाननिलयौ नागारिगोवाहनौ।
द्वित्र्यक्षौ बलिदक्षयज्ञमथनौ श्री शैलजावल्लभौ,
पापं मे हरतामुभौ हरिहरौ श्री वत्सगंगाधरौ॥

देवी भागवत में भी 'हरिहरात्मकौ वा हरिहर्यात्मको' कह कर स्पष्ट कहा है। इसी आशय को समझते हुये महात्मा तुलसीदास जो ने भी श्री रामचरित मानस में श्री राम के द्वारा स्पष्ट करा दिया है—

शिवद्रोही मम भगत कहावा, सो नर सपनेहुँ मोहि न पावा।

शास्त्रों में ब्रह्म का हरिहरात्मक अद्वैत रूप व्यापक है। कहा भी गया है—

"हरिहरयोः प्रकृतिरेका प्रत्ययभेदेन रूपभेदो ऽयम्,
एकस्यैवनरस्यानेकविधा भूमिकाभेदात्।
उभयोः प्रकृतिस्त्वेका प्रत्ययभेदात् विभिन्नवत् भाति,
कलयतिं कश्चिन्मूढो हरिहरभेदं विनाशास्त्रम्॥

अर्थात 'शिव' एवं 'विष्णु' के अनन्त नामों में 'शिव' का नाम 'हर' या 'हरि' एवं 'विष्णु' का नाम 'हरि' या 'हर' अति स्पष्ट है। गुरुपरम्परा में 'विनाशास्त्रं' पद का संधि विच्छेद करने से विनाश+अस्त्रं=विनाशास्त्रं=विनाश अर्थात 'हरिहर' में भेद मानने वाले ब्रह्म प्राप्ति के लक्ष्य से

च्युत होकर विनाश की ओर उन्मुख हो जाते हैं। विष्णु याग, रुद्र याग, लक्ष्मीनारायण याग, चण्डी याग इत्यादि यागों का स्वतंत्र महत्व अलग है। किन्तु 'श्री हरि' एवं 'श्री हर' के एकत्व के भाव का यह 'श्री हरिहरात्मक यज्ञ' सर्वोपरि स्थान रखता है।

वर्तमान भौतिक युग की भौतिक उन्नत्तियाँ अवश्यमेव स्तुत्य हैं। मानव सुख के वर्तमान अनेक साधनों का हम लोग उपयोग कर रहे हैं। निश्चय है कि यह भौतिक साधन नित्य नहीं है, शास्वत सनातन नहीं है। यदि भौतिक साधनों के उपयोग की अपेक्षा आध्यात्मिकता की ओर जीव प्रवत्त होता है तो उसके प्राकृतिक जीवन में कोई अंतर नहीं पड़ता। अर्थात जप, तप, योग, याग आदि कर्म की अध्यात्मिकता से शास्वत सुख में कोई बाधा नहीं होती है। इसीलिए समग्र भारतीय शास्त्रों का निष्कर्ष है कि मानवमात्र की आध्यात्मिकता की ओर रुचि होनी चाहिये, जिससे ऐहिक जीवन के धार्मिक सुखभोग के साथ आमुष्मिक जीवन यदि पुनर्जन्म भी हो तो मानव की सभी जीवन चर्या ईश्वरोन्मुख होती रहे। अथवा इसी जीवन का अवसान ब्रह्मप्राप्ति परमपद प्राप्ति में अर्थात् 'मोक्ष' में हो।

इसी शुभ पुनीत भावना से प्रेरित होकर स्व० श्री बद्री प्रसाद जी के स्वनामधन्य स्व० श्री केशव प्रसाद जी के सुपुत्र वर्तमान श्री रमाप्रसाद जी गोयनका तथा उनके परिवार की सरस श्रद्धा एवं शास्त्र निष्ठा से संवत् २०४५, फागुन कृष्ण द्वितीया, बुधवार दिनांक २२-२-८९ से उन्हीं के आवास (गोयनका निवास, अलीपुर रोड, कलकत्ता-२९) में 'श्री अतिहरिहरयाग' प्रारम्भ हो रहा है। इस 'श्री अतिहरिहर याग' में विश्वविख्यात वेद विद्या नगरी (श्री काशी) के मूर्धन्य वैदिक परम्परा के विद्वान ब्राह्मणों का हार्दिक सहयोग प्राप्त हो रहा है। यह भगवान 'श्री हरिहर' की ही कृपा का शुभ फल है।

आशा है उक्त 'श्री अति हरिहर याग' की शुभ सफलता से 'श्री गोयनका परिवार' की अभीष्ट सिद्धि अवश्य होगी तथा ऐसे अति उच्चस्तर के शुभ यज्ञों को पुनः सम्पादन करने की सर्वसाधारण को पूर्ण शक्ति 'भगवान श्री हरिहर' की कृपा से यत्र-तत्र सर्वत्र निरंतर होती रहेगी, यही शुभकामना है।

शिव शिवेति शिवेति शिवेति वा। हर हरेति हरेति हरेति वा॥
भव भवेति भवेति भवेति वा। मृड मृडेति मृडेति मृडेति वा॥
भज मनः शिवमेव निरन्तरं। जप मन हरमेव निरन्तरम्॥

इति-शम्

'हरिहर्ष निकेतन'
१/२८ नगवा, वाराणसी २२१००५

विनीत-
केदारदत्त : जोशी

विषय-सूची

क्रम सं०	विषय		पृष्ठसंख्या
१.	प्राक्कथनम्	...	क
२.	आहुति संख्या-विवरण	...	१
३.	श्री हरिहरयागमीमांसा	....	५
४.	हवनाङ्गविधिसहितः पुरुषसूक्तस्वाहाकारः	...	११
५.	रुद्रहवनाङ्गविधिः	...	१७
६.	लघु षडङ्गन्याससहितः रुद्रस्वाहाकारः	...	२७
७.	आरती-श्री हरिहर जी की	....	५१
८.	स्तुतिपाठः-नमस्कारश्च	...	५२
९.	श्री विष्णोर्दिव्यसहस्रनामावलिः	....	५४
१०.	श्री शिवसहस्रनामावलिः	...	७२
११.	हरिहराद्वैतस्तोत्रम्	....	९१
१२.	शुक्ल यजुर्वेद की उच्चारणगत संक्षिप्त विशेषतायें	....	९९

श्री अतिहरिहरयाग

—आहुतिसंख्या-विवरण—

।। श्रीगुरुः शरणम् ।।

श्री हरिहराभ्यां नमः

श्री अति-हरिहर-याग में

पुरुषसूक्त-स्वाहाकार एवं रुद्र-स्वाहाकार

की

आहुति-संख्या

का

विवरण

श्री हरिहराभ्यां नमः

॥ श्रीः ॥

पुरुषसूक्त-स्वाहाकार—सूक्तसंख्या ३०,०००, प्रतिसूक्त आहुति संख्या १६

कुल आहुति संख्या [४,८०,०००]

हवन-दिन सं०	होता संख्या प्रतिदिन	सूक्तसंख्या प्रतिदिन	कुल सूक्त संख्या प्रतिदिन	प्रतिसूक्त आहुति सं०	कुल आहुति संख्या प्रतिदिन
१	६६ ×	११ =	७२६ ×	१६	= ११६१६
२	१२१ ×	२२ =	२६६२ ×	,,	= ४२५९२
३	,,	,,	,,	,,	,,
४	,,	,,	,,	,,	,,
५	,,	,,	,,	,,	,,
६	,,	,,	,,	,,	,,
७	,,	,,	,,	,,	,,
८	,,	,,	,,	,,	,,
९	,,	,,	,,	,,	,,
१०	,, ×	३३ =	३९९३	× ,,	= ६३८८८
११	,,	३३	,,	,,	,,
			३०,००८		४,८०,१२८

॥ नमो भगवते रुद्राय ॥

षडङ्ग-सूक्तनाम-मन्त्रप्रतीक एवं "चमक पक्षानुसार"

रुद्रैकादशिनी में प्रतिब्राह्मण द्वारा दी जानेवाली कुल आहुतिसंख्या का—

—विवरण—

क्रम	षडङ्ग	सूक्तनाम	मन्त्रप्रतीक	रुद्रैकादशिनी में प्रतिब्राह्मण-आहुति सं०
१	हृदय	शिवसङ्कल्प	यज्जाग्रत:	२ आदावन्ते च
२	शिर	पुरुषसूक्त	सहस्रशीर्षा पुरुष:	२ ,,
३	शिखा	उत्तरनारायण	अद्भ्य: सम्भृत:	२ ,,
४	कवच	अप्रतिरथ	आशु: शिशान:	२ ,,
५	नेत्र	सौर	विभ्राड्बृहत्	२ ,,
६	अस्त्र	शतरुद्रिय—	नमस्ते · · हवामहे	२ ,,
		(नमक-प्रथमानुवाक	१६ मन्त्र	
		नमकाध्याय-	नमस्ते	१७७१ एकादशवारम्
		प्रति आवृत्ति	....	....
		१६१ आहुति (११ आवृत्ति)		
		महच्छिर	व्वयर्ठ० सोम	पाठमात्रमादावन्ते च
		जटाध्याय	उग्रश्च	,,
		चमकाध्याय	व्वाजश्च	११ प्रतिनमकावृत्तौ-प्रत्यनुवाकम्
		शान्त्यध्याय	ऋचं व्वाचम्	२४ (अन्ते) प्रतिमन्त्रम्
				कुल आहुति संख्या-१८१८

॥ श्रोः ॥

रुद्रस्वाहाकार-रुद्रैकादशिनी संख्या-१३३१-प्रति एकादशिनो-प्रतिब्राह्मण आहुति-संख्या-१८१८ कुल आहुति-संख्या-२४,१९,७५८

हवन दिन सं०	होतासंख्या प्रतिदिन	प्रतिब्राह्मण एकादशिनी	प्रतिदिन कुल एकादशिनी सं०	प्रतिएकादशिनी-आहुति सं०	कुल आहुतिसं० —प्रतिदिन—
१	१२१ ×	१ =	१२१ ×	१८१८	=२,१९,९७८
२	,,	,,	,,	,,	,,
३	,,	,,	,,	,,	,,
४	,,	,,	,,	,,	,,
५	,,	,,	,,	,,	,,
६	,,	,,	,,	,,	,,
७	,,	,,	,,	,,	,,
८	,,	,,	,,	,,	,,
९	,,	,,	,,	,,	,,
१०	,,	,,	,,	,,	,,
११	,,	,,	,,	,,	,,
			१३३१		

१२१ × १८१ = २,१९,९७८ × ११ = २४,१९,७५८ कुल आहुति-संख्या

अथ

श्रीहरिहरयाग-मीमांसा

पवित्रतमोऽयं भारतदेशो देशान्तराण्यतिशय्य विराजत इति न केवलमस्माभिरुच्यते, किन्तु देशान्तरस्थैरपि निर्विचिकित्समभ्युपेयते । तत्कस्य हेतोः? देशान्तरेषु हि द्वितीय-तृतीयपुरुषार्थयोरेवार्थकामयोः प्राधान्यमवलम्बमानास्तत्रत्याः स्व-स्व-समाजस्य सभ्यतायाश्च विवृद्धये प्रयतमाना यथावत् स्वस्वसमीहितं साधयितुं न प्रभवन्ति। य एव हि देशः विलासितायामत्यन्तं निमग्नः धर्ममार्गाच्च विमुखः, तस्याचिरादेव नाश इत्यत्र सुलभान्युदाहरणानि । अस्माकं भारतदेशः पुनरा च परमेष्ठिनः प्रथमायाः सृष्टेः आ चैतन्निमेषात् धर्मोत्तर एवावतिष्ठत इति देशान्तरापेक्षया उत्कृष्टत्वे निदानम् । धर्मपथं विहाय स्वेच्छाचारेण वर्तमानानां जनानां पशुभिः सह तुल्यतैवेत्यत्र न संशयः कस्यापि, प्रत्युत पशव एव श्रेयांसः, यतश्च ते प्रत्यवायभागिनो न भवन्ति । अत एवोक्तम्—

"पशुतैव वरं तेषां प्रत्यवायाप्रवर्तनात् ।" इति ।

पशुप्रायवृत्तयश्च देशान्तरस्थाः, भारतनिवासिनश्च न तथा । एकैकस्यापि जनुष्मतो भारतीयस्य यथारूपं स्व-स्व धर्मेऽभिरतिर्नियता आसीदिति प्राचोनेतिहासतोऽवगच्छामः । अत एव प्राञ्चः सुमतयो महर्षयः वेदाम्नायाद्यपरपर्यायां भगवतीं श्रुतिं सेवमानास्तत्र सञ्जातसमधिकगौरवाः—

सत्यं सत्यं पुनः सत्यमुद्धृत्य भुजमुच्यते ।
न वेदाच्च परं शास्त्रं न दैवं शङ्करात्परम् ॥

इत्युद्घोषयन्तः, तदुदितधार्मिकपदार्थानां जगत्कल्याणाधायकानां प्रचाराय सुपरिश्रम्य नैकविधान् धार्मिकान् स्मृतिपुराणग्रन्थान् प्रवर्तयाम्बभूवुः । एवं ग्रन्थप्रवर्तनेऽमीषां प्राचीनानामपरोऽभिप्रायः—यदुक्तं भारतवर्षस्योत्कर्ष आध्यात्मिकाधिदैविकशक्त्यधीनः, आध्यात्मिकशक्तिराधिदैविकशक्तिश्च धर्मानुष्ठानाधीने । अतो धर्म-प्रचारोऽत्यावश्यक इति । अतएव चोभे अपीमे शक्ती उत्सृजन्तो देशान्तरीया आधिभौतिकीमेव शक्तिं समाश्रित्य परस्परं निधनमुपयन्तीत्यनुमातुं शक्यते । पूर्वोक्तशक्तिद्वयविवृद्धये निदानभूतस्य धर्मस्य वेदोदितस्य स्वरूपं विवरीतुमेव दर्शनानि न्यभान्त्सुर्व्यास-जैमिनिप्रभृतयो महर्षयः ।

तत्र धर्मस्य स्वरूपं वेदबोधितश्रेयस्साधनमिति कथयन्तः शास्त्रकारा न केवलं याग-दान-होम-द्रव्यगुणानामेव धर्मत्वमभिप्रयन्ति, किन्तु "अयं तु परमो धर्मः यद्योगेनात्म-दर्शनम्" इत्यादि-याज्ञवल्क्यस्मृतिप्रमाणजातेनात्मज्ञानस्यापि धर्मत्वमाशेरते ।

एवं वदतां ग्रन्थकाराणामयमाशयः प्रतिभाति यद् वेदे कर्मज्ञानोपासनारूपेण विभक्तानां काण्डानां प्रतिपाद्यविषयेषु सत्यपि भेदे तेषां परस्परमस्ति महान् सम्बन्ध इति । अतएव कर्मणां ज्ञानस्य भक्तेश्च धर्मशब्देन व्यवहारस्तत्र तत्र ग्रन्थकाराणां सङ्गच्छते ।

तत्र कर्माण्याधानसिद्धगार्हपत्याहवनीयदक्षिणाग्निरूपत्रेताग्निसाध्याग्निहोम-दर्श-पूर्णमास-चातुर्मास्य-ज्योतिष्टोमादीनि श्रौतान्यनन्तानि, वैवाहिकाग्नि-(औपासनाग्नि)-साध्यान्युपनयनविवाहप्रभृतीनि बहूनि, कुशकण्डिकादिसंस्कारसंस्कृताग्निसाध्यानि पौराणि-कानि रुद्र-विष्णु-चण्डी-हरिहरात्मकयागरूपाणि विविधानि यदा चाग्रे श्रौतानां स्मार्तानां वा कर्मणामनुष्ठाने लोकानां श्रद्धाया न्यूनता भविष्यतीत्यपश्यन् ज्ञानचक्षुषो महर्षयः, तदा पुराणाभिहितकर्मानुष्ठानेन स्वस्वाभिलषितं सम्पादयन्तु लोका इति मनीषया तानि प्रवर्त-याम्बभूवुः । यैव देवता समाराध्यत्वेन स्वसमीहितफलप्रदत्वेन वा येन निश्चीयते यथा केनचन रुद्रः, अपरेण विष्णुः अन्येन देवी, इतरेण हरिहरात्मको देवः स तां तां देवतां कर्मभिः सन्तोष्य फलभोक्ता भवत्विति पुराणप्रवर्तकानामृषीणामाशयः प्रतिभाति ।

तत्र हरिहरात्मक-यागानुष्ठाने केषाञ्चनैवं शङ्का भवति-'हरिहरनामको यागः क्व विहितः, कथं वेदं नाम प्रसिद्ध्यति, देवताद्वयस्यैकस्मिन् कुण्डे आहुतयः केन प्रमाणेन हूयन्ते, किं वास्य फलम्, के वात्र मन्त्राः, कथञ्च तेषां विभागः, का वेतिकर्तव्यता ? इति ।

अत्र ब्रूमः-पौराणिकानां यागानां श्रौत-स्मार्तकर्मणामिव प्रत्यक्षविधिबलादेवा-नुष्ठानमिति न नियमः । श्रौतेष्वपि कर्मसु बहुत्र प्रत्यक्षविध्यभावेऽपि कल्पितविधिबलादनुष्ठानं स्वीक्रियते । यथा दर्शपूर्णमासयोः आग्नेययागस्य । तस्य चोत्पत्तिवाक्यम् 'यदाग्नेयोऽष्टा-कपालोऽमावास्यायां पौर्णमास्यां चाच्युतो भवति' इति । अत्र न यागबोधकः शब्दः, नापि कापि विधिविभक्तिः, सत्यप्येवं विधिं परिकल्प्य यागोऽनुष्ठीयत इति सम्प्रतिपन्नमिदं सर्वेषाम् । एवंप्रायाण्युदाहरणानि श्रौतेषु कर्मसु "अग्निहोत्रं जुहोति, प्रस्तरं प्रहरति, यस्य पर्णमयी जुहूर्भवति, यस्य खादिरः स्रुवो भवति, अक्ताश्शर्करा उपदधाति, तां चतुर्भिरभ्रिमादत्ते" इत्यादीनि बहूनि । एषां वर्तमानकालबोधकलकारघटितानामपि कल्पितविधिद्वारा विधाय-

कत्वमिष्यते शास्त्रकारैः । क्वचनार्थवादवाक्यानामेवानर्थक्यानुपपत्त्या विधिकल्पकत्वमिष्टं शास्त्रकाराणाम् । यथा-''औदुम्बरो यूपो भवति ऊर्ग्वा उदुम्बरः, ऊर्क् पशवः, ऊर्जैवास्मा ऊर्जं पशूनाप्नोति, ऊर्जोऽवरुध्यै'' इत्यस्य समुदितस्य स्तावकत्वपक्षेऽविहितस्य स्तुत्यनुपपत्तेरौदुम्बरविधायकत्वं वाक्यानां परिकल्प्यते । तेन च यदौदुम्बरत्वं विहितं, तदनेन समस्तेन वाक्येन स्तूयत इति मीमांसकानां सिद्धान्तः ।

एवञ्च 'हरिहरदेवतया यजेत' इति वाक्यश्रवणाभावेऽपि हरिहरदेवतायाः स्तुतिबोधकैर्वाक्यैः हरिहरदेवताकर्मविधायकवाक्यं परिकल्प्य तस्यानुष्ठानं न विवादाय कल्प्यते । अन्यथा देवतास्तावकानां वाक्यानां पुराणेषु तत्र तत्रोपलभ्यमानानामानर्थक्यमेव स्यात् । तत्तद्देवतासमाराधनं जपेन ध्यानेन पूजया तर्पणेन होमेन च भवतीति कर्मकाण्डिकानामविप्रतिपन्नमिदम् । हरिहरदेवताविषयकं ध्यानं पूजनं स्तवनञ्च कूर्मपुराणादिषु समुपलभ्यते । इदं च विलोक्यास्मत्पूर्वजाः शिष्टाः हरिहरात्मकयागमपि प्रवर्तयाञ्चक्रुः । ये हि हरिं हरञ्चोभयात्मिकां देवतामभिन्नां समुपासते, तेषामिदमनुष्ठानं कथमिव निन्दाविषयः स्यात्, एवं च पुराणादिषु समुपलभ्यमानहरिहरविषयकध्यान-स्तुति-पूजनप्रतिपादकैः श्लोकैः हरिहरात्मकयागविधायकवाक्यं परिकल्प्यते, हरिहरात्मकयागेन स्वसमीहितं सम्पादयेदिति, अथवा शिष्टाचारेणानुमीयते तादृशो विधिः । यावच्च शिष्टाचारविघातकं स्मार्तं श्रौतं वा प्रमाणं नोपलभ्यते तावत्स आचारः प्रमाणमिति शास्त्रोन्नीतः पन्थाः । न क्वापि स्मृतिषु पुराणेषु वा 'हरिहरात्मकयागं न कुर्यात्' इति निषेधः समुपलभ्यते । नापीदं कर्म केनापि दृष्टेन कारणेन गर्हितं प्रतीयते ।

किञ्च यावन्तः सम्प्रति पौराणिका यागा अनुष्ठीयन्ते, अनुष्ठाप्यन्ते वा रुद्र-विष्णु-चण्डीप्रभृतीनाम्, अमीषाञ्च विधानं पौराणिकवचनेभ्यः कल्पितैरेव विधिवाक्यैः स्वीकर्तव्यम्, स्मृतीनां पुराणानाञ्च श्रुतिमूलकत्वेनैव प्रामाण्यात् । न हि क्वापि प्रत्यक्षो विधिः समुपलभ्यते 'रौद्रेण यजेत' 'वैष्णवेन यजेत' इति येन प्रत्यक्षश्रुतिमूलकत्वममीषां स्यात् । यद्यपि 'शतरुद्रियं जुहोति' इति विधिः उपलभ्यते, तथापि यादृशपद्धत्या साम्प्रतं रुद्रादयो यागा अनुष्ठीयन्ते, तेषां तन्मूलकत्वमेवेति वक्तुं न शक्यते, किन्त्वनुमितश्रुति-मूलकत्वमपीति स्वीकर्तव्यम् । तथा च हरिहरदेवतास्तावकपुराणवचनेभ्योऽनुमितं यद्विधि-वाक्यं, तदेव शिष्टैरनुष्ठितहरिहरात्मकयागस्य मूलमिति सिद्ध्यति ।

यागस्यास्य नामविषये एवं प्रष्टारो भवन्ति केन प्रमाणेनास्य 'हरिहर' इति नामेति । तत्रेदमुच्यते-मीमांसायां निमित्तचतुष्टयान्नाम्नः सिद्धिरभिहिता मत्वर्थलक्षणाभीत्या

'उद्भिदा यजेत पशुकामः' इत्यादिषु, वाक्यभेदभीत्या 'चित्रया यजेत पशुकामः' इत्यादिषु, तत्प्रख्यशास्त्रात् 'अग्निहोत्रं जुहोति' इत्यादिषु, तद्व्यपदेशात् 'श्येनेनाभिचरन् यजेत' इत्यादिषु, एवं श्रौतेषु कर्मसु सत्यपि नियमे–'सोमयागः' 'आग्नेययाग' उपांशुयाग'– इत्यादीनि कर्मनामानि याज्ञिका व्यवहरन्ति। इमानि च नामानि न पूर्वोक्तप्रमाणैः साधयितुं शक्यन्ते। ज्योतिष्टोमशब्दस्य तत्प्रख्यशास्त्रान्नामत्वं साधयितुं शक्यते, न 'सोमशब्दस्य', तथा सति 'सोमेन यजेत' इत्यत्र विनैव मत्वर्थलक्षणया शाब्दबोधः स्यात्। एवमेव 'यदाग्नेयोऽष्टाकपालः' इत्यत्रापि मन्त्रवर्णरूपतत्प्रख्यशास्त्रेणाग्नेः प्राप्तिमङ्गीकृत्या-ग्नेयशब्दस्य नामत्वं यद्युच्येत, तर्हि 'आग्नेय' शब्दस्याग्नेयाधिकरणे गुणसमर्पकत्वसिद्धान्तो भग्नः स्यात्। अत एवमादिनाम व्यवहारस्य मूलं याज्ञिकानां प्रसिद्धिरित्येव वक्तव्यम्। सोमद्रव्यकत्वात् सोमयागः, अग्निदेवताकत्वात् आग्नेययागः, उपांशु क्रियमाणत्वात् उपांशु-यागः, इत्येवं याज्ञिकप्रसिद्धेरुपपत्तिः एवमेव 'रुद्रयागः' इति नाम रुद्रदेवताकत्वात्। न चात्र तत्प्रख्यशास्त्रेणैव नाम्नः सिद्धिरिति वक्तुं शक्यते, तत्प्रख्यशास्त्रत्वेनाभिमतरुद्रमन्त्रे रुद्रशब्दवत् शङ्कर-मयस्करादिशब्दानामपि सत्वात् 'शङ्करयागः' 'मयस्करयागः' इत्यपि व्यवहारापत्तेः। तत्तु नेष्यते, व्यवहाराभावस्य तत्र प्रतिबन्धकत्वात्। अतो रुद्रदेवताकत्वात् 'रुद्रयागः' इति प्रसिद्धिः। एवमेव विष्णुदेवताकत्वात् 'विष्णुयागः' इति, तथैव हरिहरदेवता कत्वात् हरिहरात्मको यागः' इति नामापि सिद्ध्यति। एवञ्च क्वचन द्रव्यमादाय, कुत्रचिद् देवतामादाय क्वचनान्यगुणमादाय याज्ञिकव्यवहारस्योपपत्तिः सिद्ध्यति, न तु मीमांसाभिहित प्रमाणचतुष्टयेनैव। एतेन 'पुरोडाशयागः' 'पशुयागः' इत्यादिव्यवहारोऽपि व्याख्यातः।

वस्तुतस्तु मीमांसादृष्ट्या यदि पर्यालोच्यते, तर्हि साम्प्रतं क्रियमाणानां रुद्रादिदेवताकानां कर्मणां यागशब्देन व्यवहारोऽसङ्गत एव, अमीषां यजतिचोदनाचोदितत्वा-भावात्। अत्र च वैदिकानां प्रसिद्धिरेव शरणीकरणीया। न हि वैदिका मीमांसका-वोपनयने विवाहे च क्रियमाणान् होमान् सत्यपि तेषूद्देशत्यागे यागशब्देन व्यवहरन्ति 'उपनयनयागः' 'विवाहयागः' इति। श्रौतस्यापि कर्मणोऽग्निहोत्रस्य देवतोद्देशेन द्रव्यत्यागरूपयागपदार्थविशिष्टस्य 'अग्निहोत्रयाग'–शब्देन व्यवहारो न केषामपि सम्मतः। अतश्चैवमादिषु स्थलेषु 'रुद्रयागः' 'विष्णुयागः' इत्यादीनां यथोपपत्तिस्तथैव 'हरिहरात्मको यागः' इत्यस्याप्युपपत्तिरिति न नामधेयस्यासङ्गतिरिति सिद्धम्।

एकस्मिन् कुण्डे हरिहरात्मकयागस्यानुष्ठानं कथम्? हरिर्यदा होमेन समा-राध्यते तदा पुरुषसूक्तमन्त्रेण, हरश्च यदा होमेन समाराध्यते तदा रुद्राध्यायमन्त्रेण।

तथा रुद्रयागो विष्णुयागश्च स्याताम्। तयोश्चैककुण्डानुष्ठेयत्वं कथं भवेदिति केचनाक्षेप्तारो भवन्ति।

अत्र वदामः—दर्शपूर्णमासयोराग्नेययागोऽस्ति, स च प्रकृतिः। यद्यस्य विकृतिरप्यग्निदेवताका तदा आग्नेययागीययाज्यापुरोनुवाक्यामन्त्रैरेव वैकृताग्नेये क्रियमाणे दार्शपूर्णमासिकाग्नेयः कृत इति व्यवहारः किं कस्यापि सम्मतो वा ? न कोऽप्येवं व्यवहरति। तथैव प्रकृतमपि हरिहरात्मकं कर्म रुद्राध्यायेन पुरुषसूक्तेन च क्रियमाणं न रुद्रयागो विष्णुयागो वा भवेत्, किन्तु ततो विलक्षणमेवेदं कर्म। तथा सत्येककुण्डानुष्ठेयत्वमस्य कथं नाम न भवेत् ? विभिन्नदेवतयोरेकस्मिन् कुण्डे कथं होमो भवितुमर्हतीति न शङ्कितुं शक्यम्; पौर्णमास्यां दर्शे वा नानादेवतानामेकस्मिन्नाहवनीये होमानां सम्पद्यमानत्वात्। अत्र हरिहरयोर्देवतात्वस्य व्यासज्यवृत्तित्वादग्नीषोमादिवन्नानुपपत्तिः काचन।

इयांस्तु विशेषः—श्रौतेषु कर्मसु विधिप्रतिपाद्या देवता स्वीक्रियते। क्वचित्तद्धितेन देवताया विधिः, क्वचिच्च चतुर्थ्या, क्वचिच्च मान्त्रवर्णिकदेवताया विधिः। नैतादृशविधानं हरिहरयोरुपलभामहे, किन्तु हरिहरक्षेत्रादिषु हरिहरात्मकदेवतायाः प्रसिद्धत्वात्, तस्याश्च पूजनादिकस्य वर्तमानत्वात् तदाराधनाय यागोऽपि शिष्टैः प्रवर्तित इति हरिहरयोर्देवतात्वस्य व्यासज्यवृत्तित्वं स्वीक्रियते। यद्येतादृशं देवतात्वं नाभविष्यत्, तर्हि हरिहरमण्डलम्, हरिहरध्यानम्, हरिहरस्तुतिः, हरिहराष्टोत्तरशतनामावलिः—इत्यादिकमपि नाभविष्यत्। सर्वतोभद्र-लिङ्गतोभद्रादिवत् हरिहरमण्डलमेव हरिहरयोर्व्यासज्यवृत्तिदेवतात्वमवगमयति।

किञ्च मीमांसका इव याज्ञिका न देवतास्वरूपमभ्युपयन्ति। मीमांसका हि शब्दैकसमधिगम्यं देवतात्वं स्वीकुर्वन्तः देवतानां करचरणाद्यवयववत्त्वं नाभ्युपगच्छन्ति, नापि तासां फलप्रदातृत्वशक्तिं वा स्वीकुर्वन्ति। याज्ञिकास्तु देवतानां विग्रहादिमत्वं फलप्रदातृत्वञ्च स्वीकृत्य स्वस्वाभिलषितफलप्राप्तये तां तां देवतां जप-होमादिभिस्तर्पयन्ति। अतश्च मीमांसकानां मते विधिविहितस्यैव देवतात्वं, याज्ञिकानां तु विधितदतिरिक्तप्रमाणगम्यस्य देवतात्वमिति सिद्ध्यति। एवञ्च हरिहरयोर्व्यासज्यवृत्त्यैव देवतात्वं स्वीकृत्यैकस्मिन् कुण्डे रुद्राध्यायेन पुरुषसूक्तमन्त्रेण च हरिहरात्मकयागे क्रियमाणे न कोऽपि दोष इति सिद्धम्।

किञ्च—'फलकर्मदेशकालद्रव्यदेवतागुणसामान्ये'–(का० श्रौ० सू० १।७।३) 'तद्भेदे तद्भेदः' (का० श्रौ० सू० १।७।४) इति कात्यायनश्रौतसूत्राभ्यां फलकर्मादीनां

भेदे कर्मणो भेदः, तदभेदे चाभेद इत्युक्तम् । प्रकृते च हरिहरयोर्विद्यमानस्य देवतात्वस्यैकत्वात् भेदाभावाच्चैककुण्डानुष्ठेयत्वे न कस्यापि विप्रतिपत्तिः ।

कस्मिंश्च कर्मणि हरिहरयोस्तन्त्रेण कथमनुष्ठानमितिप्रश्नस्येदमुत्तरम्—तन्त्रं हि नामानेकोद्देशेन सकृदनुष्ठानम् । यथा दर्शपूर्णमासयोरनेकान्याग्नेयादिषट्-प्रधानान्युद्दिश्य प्रयाजानुयाजादीनां सकृदनुष्ठानं तत्तत्पर्वणि भवति । तत्र सम्भवतामङ्गानां तन्त्रमसम्भवतान्त्वावृत्तिरिति न्यायोन्नीतः पन्थाः ।

यदुच्यते कैश्चित्—'अप्रवृत्तकर्मालौकिकोऽर्थसंयोगात्' (का० श्रौ० सू० १।३।१८) इति कात्यायनीयं सूत्रमादाय प्रकृतिकर्मणि रुद्राध्यायेन होमे समाप्ते पुनः पुरुषसूक्तहोमकरणेऽग्नेर्लौकिकत्वमापाद्यत इति । तत्र ब्रूमः—हरिहरात्मकयागप्रयोगस्यासमाप्तत्वात्कथमप्रवृत्तकर्मा जातः ? हरिहरयोर्व्यासक्तदेवतात्वेऽपि तथाविधमन्त्राणामनुपलम्भाद् रुद्र-विष्णुयागीयमन्त्रान् तदङ्गानि चात्रातिदिश्यायं प्रयोगः कर्तव्यः इत्यस्मत्पूर्वजानामेतत्कर्मानुष्ठातॄणां शिष्टानामाशयः ।

तत्र रुद्रहोमे समाप्तेऽपि प्रकृतप्रयोगस्यासमाप्तत्वादग्नेर्लौकिकत्वं कथमापादयितुं शक्यते ?

किञ्च—"शृणु देवि महाभागे यागं हरिहरात्मकम् ।
कुर्वन् सिद्धिमवाप्नोति पुत्रपौत्रप्रदायकम् ।।

इत्यादितन्त्रान्तरवचनाद् हरिहरात्मकयागस्य तत्रानुष्ठानप्रतीतेः कथं कात्यायनश्रौतसूत्रस्य प्रकृते प्रवृत्तिः ?, तस्मात् हरिहरात्मकयागस्य निर्दुष्टत्वात्, शास्त्रीयत्वात्, शिष्टाचारपरिगृहीतत्वात्, स्वस्वाभिलषितसाधकत्वात्, अगर्हितत्वाच्च स्वीकर्तव्यत्वमुचितमेव ।

ये हि हरिं हरञ्चैकेनैव प्रयोगेन सन्तोष्य स्वस्वसमीहितं सर्वमपि फलं साधयितुमभिलषन्ति, तेषां समभावेन देवताद्वयमेकीकृत्य समाराधयतां सौकर्याय शिष्टैः प्रवर्तितस्य हरिहरात्मकयागस्यौचित्यं प्रतीयते ।

'न हि कल्याणकृत्कश्चिद् दुर्गतिं तात गच्छति' इति न्यायमनुसृत्य हरिहरयागस्यानुष्ठानेऽनुष्ठापने चानुष्ठातॄणामनुष्ठापयितॄणाञ्च सद्गतिरेव स्यादिति निश्चप्रचमेव ।

इति श्रीहरिहरयाग-मीमांसा

(महामहोपाध्याय पण्डित विद्याधरजी गौडस्मृतिग्रन्थ से उद्धृत)

●

हवनाङ्गविधिसहितः

पुरुषसूक्तस्वाहाकारः

श्रीगणेशाय नमः ।। आचम्य–प्राणानायम्य ।। हृदि पवित्रकरणम् ।।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ।।
।। पुण्डरीकाक्षः पुनातु इति त्रिः ।।

आसनविधिः–बाह्यभूतशुद्धिश्च

पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसने विनियोगः ।।

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ।।

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुमिसंस्थिताः ।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ।।

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम् ।
सर्वेषामविरोधेन ब्रह्मकर्म समारभे ।।

यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वतः ।
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु ।।

भूतानि राक्षसा वापि येऽत्र तिष्ठन्ति केचन ।
ते सर्वेऽप्यपगच्छन्तु विष्णुहोमं करोम्यहम् ।।

शिखाग्रन्थिकरणम्–भैरवनमस्कारश्च

ॐ ऊर्ध्वकेशि विरूपाक्षि मांसशोणितभोजने ।
तिष्ठ देवि शिखाबन्धे चामुण्डे चापराजिते ।।

ॐ तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्तदहनोपम ।
भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि ।।

संकल्पः

अद्येत्यादि० तिथौ वासरे अमुकगोत्रः अमुकशर्मा अमुकगोत्रेण सकुटुम्ब-सपरिवारेण अमुकयजमानेन वृतोऽहम् सङ्कल्पितेऽस्मिन् सनवग्रहमखहोमात्मक-श्री अतिहरिहरयागाख्ये कर्मणि सङ्कल्पिताहुतिसंख्यापूर्तये नारायणाय स्वाहेति समुच्चयपूर्वकैः पुरुषसूक्तमन्त्रैः प्रतिमन्त्रं यथांशेन हवनं–तदङ्गत्वेन न्यासांश्च करिष्ये ।। तत्रादौ निर्विघ्नतासिध्यर्थं महागणपतिस्मरणं करिष्ये ।

गणपतिस्मरणम्

लम्बोदरं परमसुन्दरमेकदन्तं
पीताम्बरं त्रिनयनं परमं पवित्रम् ।
उद्यद्दिवाकरनिभोज्ज्वलकान्तिकान्तं
विघ्नेश्वरं सकलविघ्नहरं नमामि ।।

अथ न्यासाः

विनियोग :—सहस्रशीर्षेति षोडशर्चस्य पुरुषसूक्तस्य नारायणपुरुष ऋषिः आद्यानां पञ्चदशानामनुष्टुप् छन्दः यज्ञेन यज्ञमित्यस्यास्त्रिष्टुप् छन्दः जगद्बीजं पुरुषो नारायणो देवता न्यासे होमे च विनियोगः ।।

ॐ सहस्रशीर्षा — वामकरे
ॐ पुरुषऽएव — दक्षिणकरे
ॐ एतावानस्य — वामपादे
ॐ त्रिपादूर्ध्व — दक्षिणपादे
ॐ ततो व्विराट् — वामजानौ
ॐ तस्माद्यज्ञात् — दक्षिणजानौ
ॐ तस्माद्यज्ञात् — वामकट्याम्
ॐ तस्मादश्वा — दक्षिणकट्याम्
ॐ तं यज्ञम् — नाभौ
ॐ यत्पुरुषम् — हृदये
ॐ ब्राह्मणोऽस्य — वामबाहौ
ॐ चन्द्रमा मनसो — दक्षिणबाहौ
ॐ नाभ्याऽआसीत् — कण्ठे
ॐ यत्पुरुषेण — वक्त्रे
ॐ सप्तास्यासन् — अक्ष्णोः
ॐ यज्ञेन यज्ञम् — मूर्ध्नि

षडङ्गन्यासः

ॐ ब्राह्मणोऽस्य — हृदयाय नमः
ॐ चन्द्रमा मनसो — शिरसे स्वाहा
ॐ नाभ्याऽआसीत् — शिखायै वषट्
ॐ यत्पुरुषेण — कवचाय हुम्
ॐ सप्तास्यासन् — नेत्राभ्यां वौषट्
ॐ यज्ञेन यज्ञम् — अस्त्राय फट्

अथ ध्यानम्

सशङ्खचक्रं सकिरीटकुण्डलं
सपीतवस्त्रं सरसीरुहेक्षणम् ।
सहारवक्षःस्थलकौस्तुभश्रियं
नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम् ॥

अथ वराहुती

ॐ गणानान्त्वा गणपति ठं० हवामहे प्प्रियाणान्त्वा प्प्रियपति ठं० हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति ठं० हवामहे व्वसो मम ॥ आहमजानि गर्भधमा त्त्वमजासि गर्भधम्—स्वाहा ॥

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन ॥
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्—स्वाहा ॥

अथ पुरुषसूक्तहोमः

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
स भूमि ठं० सर्व्वतस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्
नारायणाय स्वाहा ॥१॥

ॐ पुरुषऽएवेद ठं० सर्व्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति
नारायणाय स्वाहा ॥२॥

ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः ।
पादोऽस्य व्विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि
नारायणाय स्वाहा ॥३॥

ॐ त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः ।
ततो व्विष्वङ्व्यक्रामत्साशनानशनेऽअभि
नारायणाय स्वाहा ॥४॥

ॐ ततो व्विराडजायत व्विराजोऽअधि पूरुषः ।
स जातोऽअत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः
नारायणाय स्वाहा ॥५॥

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतम्पृषदाज्यम् ।
पशूँस्ताँश्चक्रे व्वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये
नारायणाय स्वाहा ॥६॥

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतऽऋचः सामानि जज्ञिरे ।
छन्दाᳯंसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत
नारायणाय स्वाहा ॥७॥

ॐ तस्मादश्वाऽअजायन्त ये के चोभयादतः ।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाताऽअजावयः
नारायणाय स्वाहा ॥८॥

ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रतः ।
तेन देवाऽअयजन्त साध्याऽऋषयश्च ये
नारायणाय स्वाहा ॥९॥

ॐ यत्पुरुषं व्व्यदधुः कतिधा व्व्यकल्पयन् ।
मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहू किमूरू पादाऽउच्येते
नारायणाय स्वाहा ॥१०॥

ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः ।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या ꣳ शूद्रोऽअजायत
नारायणाय स्वाहा ॥११॥

ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्योऽअजायत ।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत
नारायणाय स्वाहा ॥१२॥

ॐ नाभ्याऽआसीदन्तरिक्ष ꣳ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ।
पद्भ्याम्भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ २॥ अकल्पयन्
नारायणाय स्वाहा ॥१३॥

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ।
व्वसन्तोऽस्यासीदाज्यङ्ग्रीष्मऽ इध्मः शरद्धविः
नारायणाय स्वाहा ॥१४॥

ॐ सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ।
देवा यद्यज्ञन्तन्वानाऽअबध्नन्पुरुषम्पशुम्
नारायणाय स्वाहा ॥१५॥

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकम्महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साध्याः सन्ति देवाः
नारायणाय स्वाहा ॥१६॥

(होमान्ते षडङ्गन्यासं विधाय ध्यानं कुर्यात्)

रुद्रहवनाङ्गविधिः

श्रीगणेशाय नमः ।। आचम्य प्राणानायम्य ।। हृदि पवित्रकरणम्—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा० ।। पुण्डरीकाक्षः पुनातु—इति त्रिः ।। आसनविधिः बाह्यभूतशुद्धिश्च—विनियोगः-पृथ्वीति० ।। ॐ पृथ्वि त्वया० ।। ॐ अपसर्पन्तु ते०··· रुद्रहोमं करोम्यहम् ।। शिखाग्रन्थिकरणं-भैरवनमस्कारः—ॐ ऊर्ध्वकेशि विरूपाक्षि० ।। ॐ तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय० ।।

सङ्कल्पः

अद्येत्यादि० तिथौ वासरे अमुकगोत्रः अमुकशर्मा अमुक-गोत्रेण सकुटुम्ब सपरिवारेण अमुक यजमानेन वृतोऽहम्-अस्मिन् सनवग्रहमख-होमात्मक-श्रीअतिहरिहर-यागाख्ये कर्मणि यथांशेन रुद्रहवनं तदङ्गत्वेन भस्मरुद्राक्षमाला-धारणपूर्वकं महान्यासांश्च करिष्ये ।। तत्रादौ निर्विघ्नता-सिध्यर्थं महागणपतिस्मरणं करिष्ये ।।

गणपतिस्मरणम् :—

लम्बोदरं परमसुन्दरमेकदन्तं
पीताम्बरं त्रिनयनं परमं पवित्रम् ।।
उद्यद्दिवाकरनिभोज्ज्वलकान्तिकान्तं
विघ्नेश्वरं सकलविघ्नहरं नमामि ।।

भस्म-रुद्राक्ष-धारणविधिः

ॐ सद्योजातमित्यस्य सद्योजात ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः ब्रह्मा देवता, वामदेवायेत्यस्य वामदेव ऋषिः जगती छन्दः विष्णुर्देवता, अघोरेत्यस्य अघोर ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः रुद्रो देवता, तत्पुरुषायेत्यस्य तत्पुरुष ऋषिः गायत्री छन्दः रुद्रो देवता, ईशान इत्यस्य ईशान ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः रुद्रो देवता, सर्वेषां भस्म-परिग्रहणे विनियोगः ।।

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः ।। भवे-भवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः ।। वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः

सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः ॥ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः ॥ सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि ॥ तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदा शिवोम् ॥ इति पञ्चभिर्मन्त्रैः सव्यहस्ते परिग्रहणं दक्षिणहस्तेनाऽच्छादनम् ॥

ॐ अग्निरित्यादिभस्माभिमन्त्रण-मन्त्राणां पिप्पलाद ऋषिः गायत्री छन्दः कालाग्निरुद्रो देवता भस्माभिमन्त्रणे विनियोगः ॥

ॐ अग्निरिति भस्म वायुरिति भस्म जलमिति भस्म स्थलमिति भस्म व्योमेति भस्म सर्वंꣳहवा इदं भस्म मन एतानि चक्षूꣳषि भस्मानि तस्माद् व्रतमेतत्पाशुपतं यद्भस्मनाङ्गानि संस्पृशेत् तस्माद् व्रतमेतत्पाशुपतं पशुपाशविमोक्षाय ॥ इति त्रिः पठित्वा भस्माभिमन्त्रणम् ॥

ॐ आपो ज्योतिरित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः यजुश्छन्दः ब्रह्माग्निवायुसूर्या देवताः भस्मनि अपामासेचने विनियोगः ॥ ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् ॥ इति मन्त्रं पठित्वा भस्मनि जलमासिञ्चेत् ॥ ॐ नमः शिवायेति सम्मर्दनम् ॥ ततः सर्वाङ्गे भस्मोद्धूलनम् । तद्यथा—

ॐ ईशान इत्यस्य ईशान ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः रुद्रो देवता शिरसि भस्मोद्धूलने विनियोगः ॥ ॐ ईशानः सर्वविद्यानां इति शिरसि ॥ ॐ तत्पुरुषायेत्यस्य तत्पुरुष ऋषिः गायत्री छन्दः रुद्रो देवता मुखे भस्मोद्धूलने विनियोगः ॥ ॐ तत्पुरुषाय विद्महे० इति मुखे ॥ ॐ अघोरेभ्य इत्यस्य अघोर ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः रुद्रो देवता हृदये भस्मोद्धूलने विनियोगः ॥ ॐ अघोरेभ्यो० इति हृदये ॥ ॐ वामदेवायेत्यस्य वामदेव ऋषिः जगती छन्दः विष्णुर्देवता गुह्ये भस्मोद्धूलने विनियोगः ॥ ॐ वामदेवाय नमो० इति गुह्ये ॥ ॐ सद्योजातमित्यस्य सद्योजात ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः ब्रह्मा देवता पादयोर्भस्मोद्धूलने विनियोगः ॥ ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि० इति पादयोः ॥ प्रणवस्य ब्रह्मा ऋषिः दैवी गायत्री छन्दः परमात्माग्निर्देवता सर्वाङ्गे भस्मोद्धूलने विनियोगः ॥ ॐ इति प्रणवेन मस्तकादि पादपर्यन्तं सर्वाङ्गे भस्मधारणम् ॥

त्रिपुण्ड्रधारणम्—ॐ मानस्तोक इत्यस्य कुत्स ऋषिः जगती छन्दः एको रुद्रो देवता भस्मोद्धरणे विनियोगः ॥ ॐ मानस्तोके० इति भस्मोद्धरणम् ॥

ॐ त्र्यम्बकमित्यस्य वसिष्ठ ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः त्र्यम्बको रुद्रो देवता, त्र्यायुषमित्यस्य नारायण ऋषिः उष्णिक् छन्दः आशीर्देवता भस्मना त्रिपुण्ड्रधारणे विनियोगः ॥

ॐ यास्य प्रथमा रेखा सा गार्हपत्यश्चाकारो रजो भूर्लोकश्चात्मा क्रियाशक्तिर्ऋग्वेदः प्रातःसवनं महादेवो देवता ॥ यास्य द्वितीया रेखा सा दक्षिणाग्निरुकारः सत्त्वमन्तरिक्षमन्तरात्मा चेच्छाशक्तिर्यजुर्वेदो माध्यन्दिनं सवनं महेश्वरो देवता ॥ यास्य तृतीया रेखा सा आहवनीयो मकारस्तमोद्यौः परमात्मा ज्ञानशक्तिः सामवेदस्तृतीयं सवनं शिवो देवता ॥ इति स्मृत्वा ॥

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे० ॥ ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः० ॥ इति मन्त्राभ्यां शिरसि नेत्रयोर्वक्षसि स्कन्धयोश्च त्रिपुण्ड्रधारणम् ॥

अथ रुद्राक्षधारणम् ॥ उदकेन मालां संप्रोक्ष्य ॥ ॐ शिवषडक्षरमन्त्रस्य वामदेवः ऋषिः दैवी पङ्क्तिश्छन्दः शिवो देवता रुद्राक्षधारणे विनियोगः ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ इति रुद्राक्षधारणम् ॥

अथ महान्यासप्रयोगः

(१) छन्दःपुरुषन्यासः

ॐ तिर्यग्बिलाय चमसायोर्ध्वबुघ्नाय छन्दःपुरुषाय नमः शिरसि ।। ॐ गौतमभरद्वाजाभ्यां नमः नेत्रयोः ।। ॐ विश्वामित्रजमदग्निभ्यां नमः श्रोत्रयोः ।। ॐ वसिष्ठकश्यपाभ्यां नमः नासापुटयोः ।। ॐ अत्रये नमः-वाचि ।। ॐ गायत्र्यै छन्दसे नमः अग्नये नमः शिरसि ।। ॐ उष्णिहे छन्दसे नमः सवित्रे नमः ग्रीवायाम् ।। ॐ बृहत्यै छन्दसे नमः बृहस्पतये नमः अनूके ।। (अनूकं पृष्ठवंशः) ॐ बृहद्रथन्तराभ्यां नमः द्यावापृथिवीभ्यां नमः बाह्वोः ।। ॐ त्रिष्टुभे छन्दसे नमः इन्द्राय नमः उदरे ।। ॐ जगत्यै छन्दसे नमः आदित्याय नमः श्रोण्योः ।। ॐ अतिच्छन्दसे नमः प्रजापतये नमः लिङ्गे ।। ॐ यज्ञायज्ञियाय छन्दसे नमः वैश्वानराय नमः पायौ ।। ॐ अनुष्टुभे छन्दसे नमः विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ऊर्वोः ।। ॐ पङ्क्त्यै छन्दसे नमः मरुद्भ्यो नमः जान्वोः ।। ॐ द्विपदायै छन्दसे नमः विष्णवे नमः पादयोः ।। ॐ विच्छन्दसे नमः वायवे नमः नासापुटस्थप्राणेषु ।। ॐ न्यूनाक्षरायच्छन्दसे नमः अद्भ्यो नमः इति हस्तद्वयविपर्यासेन मस्तकादिपादान्तं सर्वाङ्गेषु ।।

(२) लघुषडङ्गन्यासः

मनो जूतिरित्यस्य आङ्गिरसो बृहस्पतिर्ऋषिः यजुश्छन्दः विश्वेदेवा देवता हृदये न्यासे विनियोगः ।। ॐ मनो जूतिः० हृदयाय नमः ।। अबोध्यग्निरित्यस्य बुधगविष्ठिरावृषी त्रिष्टुप् छन्दः अग्निर्देवता शिरसि न्यासे विनियोगः ।। ॐ अबोध्यग्निः० शिरसे स्वाहा ।। मूर्द्धानमित्यस्य भरद्वाज ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः वैश्वानरोऽग्निर्देवता शिखायां न्यासे विनियोगः ।। ॐ मूर्द्धानन्दिवो० शिखायै वषट् ।। मर्म्माणि त इत्यस्य विवस्वानृषिः त्रिष्टुप् छन्दः लिङ्गोक्ता देवताः कवचन्यासे विनियोगः ।। ॐ मर्म्माणि ते० कवचाय हुम् ।। व्विश्वतश्चक्षुरित्यस्य विश्वकर्मा भौवन ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः विश्वकर्मा देवता नेत्रन्यासे-विनियोगः ।। ॐ व्विश्वतश्चक्षुरुत० नेत्रत्रयाय वौषट् ।। मा नस्तोक इत्यस्य कुत्स ऋषिः जगती छन्दः एको रुद्रो देवता अस्त्रन्यासे विनियोगः ।। ॐ मा नस्तोके० अस्त्राय फट् ।।

(३) शिखाद्यस्त्रान्तो दिग्बन्धसहित एकोनविंशत्यङ्गन्यासः

या ते रुद्रेत्यस्य परमेष्ठी ऋषि अनुष्टुप् छन्दः एको रुद्रो देवता शिखायां न्यासे विनियोगः ।। ॐ या ते रुद्र० शिखायाम् ।। अस्मिन्महत्यर्णव इत्यस्य परमेष्ठी ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः बहवो रुद्रा देवताः शिरसि न्यासे विनियोगः ।। ॐ अस्मिन्महत्यर्णवे० शिरसि ।। असंख्याता इत्यस्य परमेष्ठी ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः बहवो रुद्रा देवताः ललाटे न्यासे विनियोगः ।। ॐ असङ्ख्याता सहस्राणि० ललाटे ।। त्र्यम्बकमिति द्वयो राद्यस्य वसिष्ठ ऋषिः द्वितीयस्य प्रजापतिर्ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः त्र्यम्बको रुद्रो देवता नेत्रयोर्न्यासे विनियोगः ।। ॐ त्र्यम्बकँ यजामहे ।।१-२।। नेत्रयोः ।। मा नस्तोक इत्यस्य कुत्स ऋषिः जगती छन्दः एको रुद्रो देवता नासिकायां न्यासे विनियोगः ।। ॐ मा नस्तोके० नासिकायाम् ।। अवतत्येत्यस्य परमेष्ठी ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः एको रुद्रो देवता मुखे न्यासे विनियोगः ।। ॐ अवतत्य धनुः० मुखे ।। नीलग्रीवा इति द्वयोः परमेष्ठी ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः बहवो रुद्रा देवताः कण्ठे न्यासे विनियोगः ।। ॐ नीलग्रीवाः ।।१।।२।। कण्ठे ।। नमस्त आयुधायेत्यस्य परमेष्ठी ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः एको रुद्रो देवता प्रकोष्ठयोर्न्यासे विनियोगः ।। ॐ नमस्तऽ आयुधाया० प्रकोष्ठयोः ।। (मणिबन्धादुपरि कूर्पराधो भागः प्रकोष्ठः) । ये तीर्थानीत्यस्य परमेष्ठी ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः बहवो रुद्रा देवताः हस्तयोर्न्यासे विनियोगः ।। ॐ ये तीर्थानि० हस्तयोः ।। नमो वः किरिकेभ्य इत्यस्य परमेष्ठी ऋषिः साम्नोष्णिक् यजुरुष्णिक् जगती छन्दांसि किरिकादयो मन्त्रवर्णाविगता अन्यतरतो नमस्कारा बहवो रुद्रा देवताः हृदये न्यासे विनियोगः ।। ॐ नमो वः किरिकेभ्यो० हृदये ।। नमो हिरण्यबाहव इत्यस्य परमेष्ठी ऋषिः अत्रैकादशाक्षराणां यजुस्त्रिष्टुप्, अष्टाक्षराणां यजुरनुष्टुप् दशाक्षरस्य यजुःपङ्क्तिरिति चछन्दांसि हिरण्यबाह्वादयो मन्त्रवर्णाविगता उभयतो नमस्कारा बहवो रुद्रा देवताः नाभौ न्यासे विनियोगः ।। ॐ नमो हिरण्यबाहवे० नाभौ ।। इमा रुद्रायेत्यस्य कुत्स ऋषिः जगती छन्दः एको रुद्रो देवता गुह्ये न्यासे विनियोगः ।। ॐ इमा रुद्राय० गुह्ये ।। मा नो महान्तमित्यस्य कुत्स ऋषिः जगती छन्दः एको रुद्रो देवता ऊर्वोर्न्यासे विनियोगः ।। ॐ मा नो महान्तमुत० ऊर्वोः । एष त इत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः सामपङ्क्तिर्यजुर्जगती छन्दांसि रुद्रो देवता जान्वोर्न्यासे विनियोगः ।। ॐ एष ते रुद्र० जान्वोः ।। अवरुद्रमित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः पङ्क्तिश्छन्दः रुद्रो देवता जङ्घयोर्न्यासे विनियोगः ।। ॐ अवरुद्रमदीमह्यव० जङ्घयोः ।। अद्ध्यवोचदित्यस्य परमेष्ठी ऋषिः पङ्क्तिश्छन्दः एको रुद्रो देवता कवचन्यासे विनियोगः ।।

ॐ अद्‌ध्यवोचदधिवक्ता० कवचाय हुम् ।। नमो बिल्मिन इत्यस्य परमेष्ठी ऋषिः षडक्षराणां यजुर्गायत्री पञ्चाक्षरयोर्दैवी पङ्क्तिः सप्ताक्षरस्य यजुरुष्णिक् छन्दांसि बिल्मिनादयो मन्त्रवर्णाविगता अन्यतरतो नमस्कारा बहवो रुद्रा देवताः उपकवचन्यासे विनियोगः ।। ॐ नमो बिल्मिने० उपकवचम् ।। नमोऽस्तु नीलग्रीवायेत्यस्य परमेष्ठी ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः एको रुद्रो देवता तृतीयनेत्रन्यासे विनियोगः ।। ॐ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय० तृतीयनेत्रे ।। प्रमुञ्चेत्यस्य परमेष्ठी ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः एको रुद्रो देवता अस्त्रन्यासे विनियोगः ।। ॐ प्रमुञ्च धन्वनः० अस्त्रायफट् ।। यऽ एतावन्तश्चेत्यस्य परमेष्ठी ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः बहवो रुद्रा देवताः दिग्बन्धने विनियोगः ।। ॐ यऽ एतावन्तः० दिग्बन्धः ।।

(४) दशाक्षरमन्त्रन्यासः

ॐ नमो भगवते रुद्रायेति दशाक्षरमन्त्रस्य प्रजापतिर्ऋषिः विराट् छन्दः श्रीरुद्रो देवता न्यासे विनियोगः । ॐ ओं नमः मूर्ध्नि ।। ॐ नं नमः नासिकायाम् ।। ॐ मों नमः ललाटे ।। ॐ भं नमः मुखे ।। ॐ गं नमः कण्ठे ।। ॐ वं नमः हृदये ।। ॐ तें नमः दक्षिणहस्ते ।। ॐ रुं नमः वामहस्ते ।। ॐ द्रां नमः नाभौ ।। ॐ यं नमः पादयोः ।।

(५) सम्पुटनमस्काराख्यो न्यासः

त्रातारमिन्द्रमित्यस्य गर्ग ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः इन्द्रो देवता प्राच्यां दिशि सम्पुटीकरणे नमस्कारे च विनियोगः ।।

ॐ त्रातारमिन्द्र ०—प्राच्याम् ।।

त्वन्नोऽअग्न इत्यस्य हिरण्यस्तूप आङ्गिरस ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः अग्निर्देवता आग्नेय्यां दिशि सम्पुटीकरणे नमस्कारे च विनियोगः ।। ॐ त्वन्नोऽअग्ने० आग्नेय्याम् ।।

सुगन्नु पन्थामित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः वैवस्वतो देवता दक्षिणस्यां दिशि सम्पुटीकरणे नमस्कारे च विनियोगः ।। ॐ सुगन्नु पन्थाम्प्रदिशन्न एहि ज्योतिष्मद्‌ध्येह्यजरन्न आयुः ।। अपैतु मृत्युरमृतम्म आगाद्वैवस्वतो नो अभयं कृणोतु ।। दक्षिणस्याम् ।। असुन्वन्तमित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः निर्ऋतिदेवता नैर्ऋत्यां दिशि सम्पुटीकरणे नमस्कारे च विनियोगः ।।

ॐ असुन्वन्तमयजमान० नैर्ऋत्याम् ।।

तत्त्वा यामीत्यस्य शुनःशेप ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः वरुणो देवता प्रतीच्यां दिशि सम्पुटीकरणे नमस्कारे च विनियोगः ।।

ॐ तत्त्वा यामि० प्रतीच्याम् ।।

आनो नियुद्भिरित्यस्य वसिष्ठ ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः वायुर्देवता वायव्यां दिशि सम्पुटीकरणे नमस्कारे च विनियोगः ।।

ॐ आ नो नियुद्भिः० वायव्याम् ।।

व्वयँ सोमेत्यस्य बन्धुर्ऋषिः गायत्री छन्दः सोमो देवता उदीच्यां दिशि सम्पुटीकरणे नमस्कारे च विनियोगः ।।

ॐ व्वयँ सोम० उदीच्याम् ।।

तमीशानमित्यस्य गौतम ऋषिः जगती छन्दः ईशानो देवता ऐशान्यां दिशि सम्पुटीकरणे नमस्कारे च विनियोगः ।।

ॐ तमीशानञ्जगतः० ऐशान्याम् ।।

अस्मे रुद्रा० इत्यस्य प्रगाथ ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः ब्रह्मा देवता ऊर्ध्वायां दिशि सम्पुटीकरणे नमस्कारे च विनियोगः ।।

ॐ अस्मे रुद्रा० ऊर्ध्वायाम् ।।

स्योना पृथिवीत्यस्य मेधातिथिर्ऋषिः गायत्री छन्दः अनन्तो देवता अधो दिशि सम्पुटीकरणे नमस्कारे च विनियोगः ।।

ॐ स्योना पृथिवि० अधरायाम् ।।

(६) बृहत्षडङ्गन्यासः

यज्जाग्रत इति षडर्चस्य शिवसङ्कल्पसूक्तस्य शिवसङ्कल्प ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः मनो देवता हृदये न्यासे होमे च विनियोगः ।। ॐ यज्जाग्रतः···शिवसङ्कल्पमस्तु ।। [इति षट् मन्त्राः ।।] हृदयाय नमः ।। (मुष्टिविनिर्गताङ्गुष्ठौ संयुक्तौ कृत्वा हृदये संस्थापयेत्) ।

सहस्रशीर्षेति षोडशर्चस्य पुरुषसूक्तस्य नारायणपुरुष ऋषिः आद्यानां पञ्चदशानामनुष्टुप् छन्दः यज्ञेन यज्ञमित्यस्यास्त्रिष्टुप् छन्दः जगद् बीजं पुरुषो देवता शिरसि न्यासे होमे च विनियोगः ।। ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः ··· सन्ति देवाः ।। [इति षोडश मन्त्राः ।।] शिरसे स्वाहा ।। (मुष्टिविनिर्गताङ्गुष्ठौ संयुक्तौ निस्तर्जनीकौ ललाटं कुर्यात्) ।।

अद्भ्यः सम्भृत इति षडर्चस्य उत्तरनारायणस्य नारायणपुरुष ऋषिः आद्यानां तिसृणां त्रिष्टुप् छन्दः चतुर्थपञ्चमयोरनुष्टुप् छन्दः षष्ठस्य त्रिष्टुप् छन्दः आदित्यो देवता शिखायां न्यासे होमे च विनियोगः ।। ॐ अद्भ्यः सम्भृतः··· मऽइषाण ।। [इति षट्मन्त्राः ।।] शिखायै वषट् ।। (मुष्टिपुटौ करौ कृत्वा अङ्गुष्ठावधः प्रसक्ताग्रौ कनिष्ठे चोर्ध्वतः प्रसक्ताग्रे कृत्वा शिखां स्पृशेत्) ।

आशुः शिशान इति द्वादशर्चस्य अप्रतिरथस्य अप्रतिरथ ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दः इन्द्रो देवता कवचन्यासे होमे च विनियोगः ।। ॐ आशुः शिशानः···तमसा सचन्ताम् ।। [इति द्वादश मन्त्राः ।।] कवचाय हुम् (इत्युच्चार्य अङ्गुष्ठौ प्रसक्ताग्रौ तर्जन्यौ च त्रिकोणवत् कृत्वा मूर्ध्नि पश्चान्मुखं कृत्वा उभयपार्श्वतः करौ हृदन्तं नयन् कवचं न्यसेत्) ।

विभ्राडिति सप्तदशानां विभ्राट् ऋषिः जगती छन्दः सूर्यो देवता नेत्रन्यासे होमे च विनियोगः ।। ॐ विभ्राड्बृहत्०···भुवनानि पश्यन् ।। नेत्रत्रयाय वौषट् ।। (नेत्रोन्मुखं हस्तं कृत्वा प्रसक्तमङ्गुष्ठं कनिष्ठिकां च कृत्वा मध्यमां किञ्चित्प्रसार्य इतराङ्गुली नमयन् नेत्रेषु न्यसेत्) ।

नमस्ते रुद्रेति षोडशर्चस्य परमेष्ठी ऋषिः नमस्त इत्यस्य गायत्री छन्दः या त इति तिसृणां अनुष्टुप् छन्दः अध्यवोचदिति त्रयाणां पङ्क्तिश्छन्दः नमोऽस्त्विति अनुष्टुप् छन्दः मा न इति द्वयोः कुत्सो जगती सर्वासामेको रुद्रो देवता अस्त्रन्यासे विनियोगः ।। ॐ नमस्ते०···सदमित्त्वा हवामहे ।। अस्त्राय फट् ।। (किञ्चित्तर्जनीं प्रसार्य मध्यमाङ्गुष्ठयोगेन तालं कुर्वन् अस्त्रं न्यसेत्) ।

शेषमन्त्रभागविनियोगः

शतरुद्रियाध्यायस्य नमस्ते रुद्रेति रौद्राध्यायस्य परमेष्ठी ऋषिः नमस्त इत्यस्य गायत्री छन्दः या त इति तिसृणामनुष्टुप् छन्दः अध्यवोचदिति त्रयाणां पङ्क्तिश्छन्दः

नमोऽस्त्विति सप्तानामनुष्टुप् छन्दः मा न इति द्वयोः कुत्सो जगती सर्वासामेको रुद्रो देवता नमो हिरण्यबाहव इत्यादीनि द्रापे इत्यतः प्राक्तनानि सर्वाणि यजूँषि तत्र चतुरक्षराणां दैवी बृहती पञ्चाक्षराणां दैवी पङ्क्तिः षडक्षराणां दैवी त्रिष्टुप् सप्ताक्षराणां दैवी जगती अष्टाक्षराणां यजुरनुष्टुप् नवाक्षराणां यजुर्बृहती दशाक्षराणां यजुःपङ्क्तिः एकादशाक्षराणां यजुस्त्रिष्टुप् द्वादशाक्षराणां यजुर्जगती चतुर्दशाक्षरस्य सामोष्णिक्—नमो हिरण्यबाहव इत्यादीनां श्वपतिभ्यश्च वो नम इत्यन्तानां यजुषां हिरण्यबाहुः सेनानीर्दिशां पतिरित्यादि मन्त्रवर्णावगता उभयतो नमस्कारा बहवो रुद्रा देवताः—नमो भवाय च रुद्राय चेत्यादीनां प्रखिदते चेत्यन्तानां भवादयो मन्त्रलिङ्गावगता अन्यतरतो नमस्कारा बहवो रुद्रा देवताः नम इषुकृद्भ्यो धनुष्कृद्भ्यश्च वो नम इत्यस्य यजुषः उभयतो नमस्कारा बहवो रुद्रा देवताः ।। नमो हिरण्यबाहव इत्यादयो द्वन्द्विनो रुद्राः—नमः सभाभ्य इत्यादयो जाताख्या रुद्राः ।। नमो वः किरिकेभ्य इत्यादीनामग्निवायुसूर्यहृदयभूत-व्याहृतीनामन्यतरतो नमस्कारा बहवो रुद्रा देवताः ।। द्रापे इत्यस्य उपरिष्टाद्बृहती छन्दः इमा रुद्रायेत्यस्याः कुत्सो जगती या त इत्यस्या अनुष्टुप् छन्दः परि न इति द्वयोस्त्रिष्टुप् छन्दः विकिरिद्रेति द्वयोरनुष्टुप् छन्दः सप्तानामेको रुद्रो देवता असङ्ख्यातेत्यादीनां दशानामनुष्टुप् छन्दः बहवो रुद्रा देवताः नमोऽस्तु रुद्रेभ्य इत्यादीनां त्रयाणां यजुषां धृतिश्छन्दः बहवो रुद्रा देवताः सकलाध्यायस्य शतशीर्षो देवता होमे विनियोगः ।।

वयँ सोमेत्यस्य बन्धुर्ऋषिः गायत्री छन्दः सोमो देवता एष त इत्यनयोः प्रजापतिर्ऋषिः सामपङ्क्तिर्यजुर्जगती छन्दसी रुद्रो देवता अवरुद्रमदीत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः पङ्क्तिश्छन्दः रुद्रो देवता भेषजमसीत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः ककुप् छन्दः रुद्रो देवता त्र्यम्बकमित्यनयोः क्रमेण वसिष्ठप्रजापती ऋषी अनुष्टुप् छन्दः त्र्यम्बको रुद्रो देवता एतत्त इत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः आस्तारपङ्क्तिश्छन्दः रुद्रो देवता त्र्यायुषमित्यस्य नारायण ऋषिः उष्णिक् छन्दः आशीर्देवता शिवो-नामेत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः प्राजापत्या बृहती छन्दः क्षुरो देवता निवर्तयामीत्यस्य प्रजापति-र्ऋषिः प्राजापत्या त्रिष्टुप् छन्दः लिङ्गोक्ता देवता महारुद्रप्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः ।।

उग्रश्चेत्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः गायत्री छन्दः मरुतो देवता अग्निँ हृदयेनेत्यादीनां यजुषां प्रजापतिर्ऋषिः लिङ्गोक्ता देवता आयासाय स्वाहेत्यादीनां प्रजापतिर्ऋषिः लिङ्गोक्ता देवता महारुद्रप्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः ।।

व्वाजश्च म इत्यादीनां व्वेट्स्वाहेत्यन्तानां देवा ऋषयः यजुर्गायत्री छन्दः अग्निर्देवता होमे विनियोगः ॥

ऋचं व्वाचमिति चतुर्विंशतिमन्त्राणां प्रजापतिर्ऋषिः गायत्री छन्दः विष्णुर्देवता शान्त्यर्थं होमे विनियोगः ॥

अथ ध्यानम्

शुद्धस्फटिकसङ्काशं त्रिनेत्रं पञ्चवक्त्रकम् ॥
गङ्गाधरं दशभुजं सर्वाभरणभूषितम् ॥१॥

नीलग्रीवं शशाङ्काङ्कं नागयज्ञोपवीतिनम् ॥
व्याघ्रचर्मोत्तरीयं च वरेण्यमभयप्रदम् ॥२॥

कमण्डलवक्षसूत्राभ्यामन्वितं शूलपाणिनम् ॥
ज्वलन्तं पिङ्गलजटाजूटमुद्योतकारिणम् ॥३॥

अमृतेन युतं हृष्टमुमादेहार्धधारिणम् ॥
दिव्यसिंहासनासीनं दिव्यभोगसमन्वितम् ॥४॥

दिग्देवतासमायुक्तं सुरासुरनमस्कृतम् ॥
नित्यं च शाश्वतं शुद्धं ध्रुवमक्षरमव्ययम् ॥५॥

सर्वव्यापिनमीशानं रुद्रं वै विश्वरूपिणम् ॥
एवं ध्यात्वा द्विजः सम्यक् ततो यजनमारभेत् ॥६॥

अथ वराहुती

ॐ गणानान्त्वा गणपति ँ हवामहे प्प्रियाणान्त्वा प्प्रियपति ँ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति ँ हवामहे व्वसो मम । आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्-स्वाहा ॥

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन ।

ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्—स्वाहा ॥

ततः प्रधानहोमः ॥

॥ श्रीः ॥

लघुषडङ्गन्याससहितः रुद्रस्वाहाकारः

षडङ्गन्यासाः

ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टँ य्यज्ञ ठं० समिमन्दधातु ॥ व्विश्वे देवासऽइह मादयन्तामो ३ म्प्रतिष्ठ ॥१॥ (हृदयाय नमः)

ॐ अबोद्ध्यग्निः समिधा जनानाम्प्रति धेनुमिवायतीमुषासम् ॥ यह्वा इव प्प्र वयामुज्जिहानाः प्प्र भानवः सिस्रते नाकमच्छ ॥२॥ (शिरसे स्वाहा)

ॐ मूर्द्धानन्दिवोऽअरतिम्पृथिव्व्या व्वैश्वानरमृतऽआजातमग्निम् ॥ कवि ठं० सम्म्राजमतिथिञ्जनानामासन्ना पात्रञ्जनयन्त देवाः ॥३॥ (शिखायै वषट्)

ॐ मर्म्माणि ते व्वर्म्मणा च्छादयामि सोमस्त्वा राजामृतेनानुवस्ताम् ॥ उरोर्व्वरीयो व्वरुणस्ते कृणोतु जयन्तन्त्वानु देवा मदन्तु ॥४॥ (कवचाय हुम्)

ॐ व्विश्वतश्चक्षुरुत व्विश्वतोमुखो व्विश्वतोबाहुरुत व्विश्वतस्पात् ॥ सम्बाहुभ्यान्धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देवऽ एकः ॥५॥ (नेत्रत्रयाय वौषट्)

ॐ मा नस्तोके तनये मा नऽआयुषि मा नो गोषु मा नोऽअश्वेषु रीरिषः ॥ मा नो व्वीरान् रुद्र भामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे ॥६॥ (अस्त्राय फट्) ॥

अथ ध्यानम्

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम् ।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥

अथ वराहुती

ॐ गणानान्त्वा···धम्–स्वाहा ॥

ॐ अम्बेऽअम्बिके···वासिनीम्–स्वाहा ॥

अथ रुद्रस्वाहाकारः

ॐ यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवन्तदु सुप्तस्य तथैवैति ॥ दूरङ्गमञ्ज्योतिषाञ्ज्योतिरेकन्तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥१॥ येन कर्म्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति व्विदथेषु धीराः । यदपूर्व्वं य्यक्षमन्तः प्रजानान्तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥२॥ यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतम्प्रजासु ॥ यस्मान्न ऋते किञ्चन कर्म्म क्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥३॥ येनेदम्भूतम्भुवनम्भविष्यत्परिगृहीतममृतेन सर्व्वम् ॥ येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥४॥ यस्मिन्नृचः साम यजूꣳषि यस्मिन्प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः ॥ यस्मिँश्चित्त ꣳ सर्व्वमोतम्प्रजानान्तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥५॥ सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेऽभीशुभिर्व्वाजिनऽइव॥ हृत्प्रतिष्ठं य्यदजिरञ्जविष्ठन्तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु—स्वाहा ॥६॥

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥
स भूमि ꣳ सर्व्वतस्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥१॥

पुरुषऽ एवेद ꣳ सर्व्वं य्यद्भूतं य्यच्च भाव्व्यम् ॥
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥२॥

एतावानस्य महिमातो ज्ज्यायाँश्च पूरुषः ॥
पादोऽस्य व्विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि ॥३॥

त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोस्येहाभवत्पुनः ॥
ततो व्विष्वङ्व्यक्रामत्साशनानशनेऽअभि ॥४॥

ततो व्विराडजायत व्विराजोऽअधि पूरुषः ॥
स जातोऽअत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥५॥

तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतम्पृषदाज्ज्यम् ॥
पशूँस्ताँश्चक्रे व्वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये ॥६॥

तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतऽ ऋचः सामानि जज्ञिरे ॥
छन्दाᳬंसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥७॥

तस्मादश्वाऽअजायन्त ये के चोभयादतः ॥
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाताऽअजावयः ॥८॥

तं य्यज्ञम्बर्हिषि प्प्रौक्षन्पुरुषञ्जातमग्रतः ॥
तेन देवाऽअयजन्त साद्ध्याऽ ऋषयश्च ये ॥९॥

यत्पुरुषं व्व्यदधुः कतिधा व्व्यकल्पयन् ॥
मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहू किमूरू पादाऽउच्च्येते ॥१०॥

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः ॥
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याᳬं शूद्रोऽअजायत ॥११॥

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्य्योऽअजायत ॥
श्रोत्राद्वायुश्च प्प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥१२॥

नाभ्याऽआसीदन्तरिक्ष ᳬ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ॥
पद्भ्याम्भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ऽअकल्पयन् ॥१३॥

यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ॥
व्वसन्तोऽस्यासीदाज्ज्यङ्ग्रीष्मऽइध्मः शरद्धविः ॥१४॥

सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः ॥
देवा यद्यज्ञन्तन्वानाऽअबध्नन्पुरुषम्पशुम् ॥१५॥

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्प्रथमान्यासन् ॥
ते ह नाकम्महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साद्ध्याः सन्ति देवाः
—स्वाहा ॥१६॥

ॐ अद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्व्यै रसाच्च व्विश्वकर्म्मणः समवर्त्तताग्ग्रे ॥
तस्य त्वष्टा व्विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्ग्रे ॥१॥

व्वेदाहमेतम्पुरुषम्महान्तमादित्त्यवर्ण्णन्तमसःपरस्तात् ॥
तमेव व्विदित्त्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था व्विद्यतेऽयनाय ॥२॥

प्रजापतिश्चरति गर्ब्भेऽअन्तरजायमानो बहुधा व्विजायते ॥
तस्य योनिम्परि पश्यन्ति धीरास्तस्मिन्न्ह तस्थुर्भुवनानि व्विश्वा ॥३॥

यो देवेभ्यऽ आतपति यो देवानाम्पुरोहितः ॥
पूर्व्वो यो देवेभ्यो जातो नमो रुचाय ब्ब्राह्मये ॥४॥

रुचम्ब्राह्मञ्जनयन्तो देवाऽ अग्ग्रे तदब्ब्रुवन् ॥
यस्त्वैवम्ब्राह्मणो व्विद्यात्तस्य देवाऽ असन्वशे ॥५॥

श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् ॥
इष्णन्निषाणामुम्मऽ इषाण सर्व्वलोकम्मऽ इषाण—स्वाहा ॥६॥

ॐ आशुः शिशानो व्वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् ॥
सङ्क्रन्दनोऽनिमिषऽ एकवीरः शत ठं० सेनाऽ अजयत्साकमिन्द्रः ॥१॥

सङ्क्रन्दनेनानिमिषेण जिष्णुना युत्कारेण दुश्च्यवनेन धृष्णुना ॥
तदिन्द्रेण जयत तत्सहध्वं य्युधो नरऽ इषुहस्तेन व्वृष्णा ॥२॥

सऽ इषुहस्तैः स निषङ्गिभिर्व्वशी सँस्स्रष्टा स युधऽ इन्द्रो गणेन ॥
स ठं० सृष्टजित्सोमपा बाहुशर्द्ध्युग्रधन्वा प्प्रतिहिताभिरस्ता ॥३॥

बृहस्पते परि दीया रथेन रक्षोहाऽमित्राँ ऽ२ अपबाधमानः ॥
प्रभञ्जन्त्सेनाः प्रमृणो युधा जयन्नस्माकमेद्ध्यविता रथानाम् ॥४॥

बलविज्ञायः स्थविरः प्प्रवीरः सहस्वान्वाजी सहमानऽ उग्ग्रः ॥
अभिवीरोऽ अभिसत्त्वा सहोजा जैत्रमिन्द्र रथमातिष्ठ गोवित् ॥५॥

गोत्रभिदङ्गोविदं व्वज्रबाहुञ्जयन्तमज्मप्प्रमृणन्तमोजसा ॥
इम ठं० सजाताऽअनु वीरयध्वमिन्द्र ठं० सखायोऽअनु स ठं० रभध्वम् ॥६॥

अभि गोत्राणि सहसा गाहमानोऽदयो व्वीरः शतमन्युरिन्द्रः ॥
दुश्च्यवनः पृतनाषाडयुद्ध्योऽस्माक ठं० सेनाऽ अवतु प्प्रयुत्सु ॥७॥

इन्द्रऽ आसान्नेता बृहस्पतिर्द्दक्षिणा यज्ञः पुरऽएतु सोमः ॥
देवसेनानामभिभञ्जतीनाञ्जयन्तीनाम्मरुतो यन्त्वग्ग्रम् ॥८॥

इन्द्रस्य व्वृष्णो व्वरुणस्य राज्ञऽआदित्यानाम्मरुता ॐ शर्द्धऽ उग्ग्रम् ॥
महामनसाम्भुवनच्च्यवानाङ्घोषो देवानाञ्जयतामुदस्थात् ॥९॥

उद्धर्षय मघवन्नायुधान्युत्सत्त्वनाम्मामकानाम्मना ॐ सि ॥
उद् वृत्रहन्वाजिनां व्वाजिनान्युद्रथानाञ्जयताँय्यन्तु घोषाः ॥१०॥

अस्माकमिन्द्रः समृतेषु ध्वजेष्वस्माकँ य्याऽइषवस्ता जयन्तु ॥
अस्माकं व्वीराऽ उत्तरे भवन्त्वस्माँ २ऽ उ देवाऽ अवता हवेषु ॥११॥

अमीषाञ्चित्तम्प्रतिलोभयन्ती गृहाणाङ्गान्यप्वे परेहि ॥
अभि प्प्रेहि निर्द्दह हृत्सु शोकैरन्धेनामित्रास्तमसा सचन्ताम्—स्वाहा ॥१२॥

ॐ व्विभ्राड्बृहत्पिबतु सोम्यम्मद्ध्वायुर्द्दधद्यज्ञपतावविह्रुतम् ॥
व्वातजूतो योऽअभिरक्षति त्मना प्प्रजाः पुपोष पुरुधा व्विराजति ॥१॥

उदु त्यञ्जातवेदसन्देवं व्वहन्ति केतवः दृशे व्विश्वाय सूर्य्यम् ॥२॥

येना पावक चक्षसा भुरण्यन्तञ्जनाँ २ऽ अनु ॥
त्वं व्वरुण पश्यसि ॥३॥

दैव्व्यावद्ध्वर्य्यूऽ आगत ठं० रथेन सूर्य्यत्त्वचा मद्ध्वा यज्ञ ठं० समञ्जाथे ॥
तम्प्रत्नथायं व्वेनश्चित्रन्देवानाम् ॥४॥

तम्प्रत्नथा पूर्व्वथा व्विश्वथेमथा ज्ज्येष्ठतातिम्बर्हिषद ॐ स्वर्व्विदम् ॥
प्रतीचीनं व्वृजनन्दोहसे धुनिमाशुञ्जयन्तमनु यासु व्वर्द्धसे ॥५॥

अयं व्वेनश्चोदयत्पृश्निगर्भा ज्ज्योतिर्ज्जरायू रजसो व्विमाने ॥
इममपाॐ सङ्गमे सूर्य्यस्य शिशुन्न व्विप्प्रा मतिभो रिहन्ति ॥६॥

चित्रन्देवानामुदगादनीकञ्चक्षुर्म्मित्रस्य व्वरुणस्याग्नेः ॥
आप्प्रा द्यावापृथिवीऽ अन्तरिक्ष ठं० सूर्य्यऽ आत्मा जगतस्तस्थुषश्च ॥७॥

आ नऽ इडाभिर्व्विदथे सुशस्ति व्विश्वानरः सविता देवऽ एतु ॥
अपि यथा युवानो मत्सथा नो व्विश्वञ्जगदभिपित्वे मनीषा ॥८॥

यद्द्य कच्च व्वृत्रहन्नुदगाऽ अभि सूर्य्य ॥
सर्व्वन्तदिन्द्र ते व्वशे ॥९॥

तरणिर्व्विश्वदर्शतो ज्ज्योतिष्कृदसि सूर्य्य ॥
व्विश्व माभासि रोचनम् ॥१०॥

तत्सूर्य्यस्य देवत्वन्तन्महित्वम्मद्ध्या कर्त्तोर्व्विततं ठं० सञ्जभार ॥
यदेदयुक्त हरितः सधस्थादाद्रात्री व्वासस्तनुते सिमस्मै ॥११॥

तन्मित्रस्य व्वरुणस्याभिचक्षे सूर्य्यो रूपङ्कृणुते द्योरुपस्थे ॥
अनन्तमन्यद्रुशदस्य पाजः कृष्णमन्यद्धरितः सम्भरन्ति ॥१२॥

बण्महाँ २ऽ असि सूर्य्य बडादित्य महाँ २ऽ असि ॥
महस्ते सतो महिमा पनस्यतेऽद्धा देव महाँ २ऽ असि ॥१३॥

बट्सूर्य्य श्रवसा महाँ २ऽ असि सत्रा देव महाँ २ऽ असि ॥
मह्ना देवानामसुर्य्यःपुरोहितो व्विभु ज्ज्योतिरदाभ्यम् ॥१४॥

श्रायन्तऽ इव सूर्यं व्विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत ॥
व्वसूनि जाते जनमानऽओजसा प्रति भागन्न दीधिम ॥१५॥

अद्या देवाऽ उदिता सूर्य्यस्य निर ठं० हसः पिपृता निरवद्यात् ॥
तन्नो मित्रो व्वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवीऽ उत द्यौः ॥१६॥

आ कृष्णेन रजसा व्वर्तमानो निवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च ॥
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्—स्वाहा ॥१७॥

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽ उतो तऽ इषवे नमः ॥
बाहुभ्यामुत ते नमः ॥१॥

या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी ॥
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि ॥२॥

या॒मिषु॒ङ्गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे ।।
शिवाङ्गिरित्र ताङ्कुरु मा हि ठं॰ सीः पुरुषञ्जगत् ।।३।।

शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा व्वदामसि ।।
य॒था नः सर्व्वमिज्जगदयक्ष्म ठं॰ सुमनाऽ असत् ।।४।।

अद्ध्यवोचदधिवक्ता प्प्रथमो दैव्व्यो भिषक् ।।
अहींश्च सर्व्वाञ्जम्भयन्त्सर्व्वाश्च या॒तुधान्योऽधराचीः परा सुव ।।५।।

असौ य॒स्ताम्म्रोऽअरुणऽउत बभ्रुः सुमङ्गलः ।।
ये चैन ठं॰ रुद्राऽ अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्त्रशोऽवैषा ॳ हेडऽईमहे ।।६।।

असौ यो॒ऽवसर्प्पति नीलग्रीवो व्विलोहितः ।।
उतैनङ्गोपाऽअदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्य्यः स दृष्टो मृडयाति नः ।।७।।

नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्त्राक्षाय मीढुषे ।।
अथो येऽअस्य सत्वानोऽहन्तेभ्योऽकरन्नमः ।।८।।

प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमु॒भयोरात्न्योंर्ज्ज्याम् ।।
या॒श्च ते हस्तऽ इषवः परा ता भगवो व्वप ।।९।।

व्विज्ज्यन्धनुः कपर्द्दिनो व्विशल्यो बाणवाँ २ऽ उत ।।
अनेशन्नस्य या॒ऽ इषवऽ आभुरस्य निषङ्गधिः । १०।।

या॒ ते हेतिर्म्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः ।।
तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परि भुज ।।११।।

परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु व्विश्वतः ।।
अथो य॒ऽइषुधिस्तवारेऽ अस्मन्निधेहि तम् ।।१२।।

अवतत्त्य धनुष्ट्व ठं॰ सहस्त्राक्ष शतेषुधे ।।
निशीर्य्य॒ शल्यानाम्मुखा शिवो नः सुमना भव ।।१३।।

नमस्तऽ आयुधायानातताय धृष्णवे ।।
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यान्तव धन्वने ।।१४।।

मा नो महान्तमुत मा नोऽअर्भकम्मा नऽ उक्षन्तमुत मा नऽ उक्षितम् ।।
मा नो व्वधीः पितरम्मोत मातरम्मा नः प्प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः ।।१५।।

मा नस्तोके तनये मा नऽ आयुषि मा नो गोषु मा नोऽ अश्वेषु रीरिषः ।।
मा नो व्वीरान् रुद्र भामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे—स्वाहा ।।१६।।

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽ उतो तऽ इषवे नमः ।।
बाहुभ्यामुत ते नमः—स्वाहा ।।१।।

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी ।।
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि—स्वाहा ।।२।।

ॐ यामिषुङ्गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे ।।
शिवाङ्गिरित्र ताङ्कुरु मा हि ठं०सीः पुरुषञ्जगत् स्वाहा ।।३।।

ॐ शिवेन व्वचसा त्त्वा गिरिशाऽच्छा व्वदामसि ।।
यथा नः सर्व्वमिज्जगदयक्ष्म ठं० सुमनाऽअसत् स्वाहा ।।४।।

ॐ अद्ध्यवोचदधिवक्ता प्प्रथमो दैव्यो भिषक् ।।
अहींश्च सर्व्वाञ्जम्भयन्त्सर्व्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परा सुव स्वाहा ।।५।।

ॐ असौ यस्ताम्म्रोऽ अरुणऽ उत बभ्रुः सुमङ्गलः ।।
ये चैन ठं० रुद्राऽ अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषा ॐ
हेडऽ ईमहे स्वाहा ।।६।।

ॐ असौ योऽवसर्प्पति नीलग्रीवो व्विलोहितः ।।
उतैनङ्गोपाऽअदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्य्यः स दृष्टो मृडयाति नः स्वाहा ।।७।।

ॐ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे ।।
अथो येऽअस्य सत्त्वानोऽहन्तेभ्योऽकरन्नमः स्वाहा ।।८।।

ॐ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्ज्याम् ।।
याश्च ते हस्तऽइषवः परा ता भगवो व्वप स्वाहा ।।९।।

ॐ व्विज्ज्यन्धनुः कपर्द्दिनो व्विशल्यो बाणवाँ २ऽ उत ।।
अनेशन्नस्य याऽ इषवऽ आभुरस्य निषङ्गधिः स्वाहा ।।१०।।

ॐ या ते हेतिर्म्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः ।।
तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परि भुज स्वाहा ।।११।।

ॐ परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु व्विश्वतः ॥
अथो य इषुधिस्तवारेऽ अस्मन्निधेहि तम्-स्वाहा ॥१२॥

ॐ अवतत्त्य धनुष्ट्व ꣳ सहस्राक्ष शतेषुधे ॥
निशीर्य्य शल्यानाम्मुखा शिवो नः सुमना भव स्वाहा ॥१३॥

ॐ नमस्तऽआयुधायानातताय धृष्णवे ॥
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यान्तव धन्वने स्वाहा ॥१४॥

ॐ मा नो महान्तमुत मा नोऽअर्भकम्मा नऽउक्षन्तमुत मा नऽ उक्षितम् ॥
मा नो व्वधीः पितरम्मोत मातरम्मा नः प्प्रियास्तन्वो रुद्र
रीरिषः स्वाहा ॥१५॥

ॐ मा नस्तोके तनये मा नऽ आयुषि मा नो गोषु मा नोऽअश्वेषु रीरिषः ॥
मा नो व्वीरान्रुद्र भामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा
हवामहे--स्वाहा ॥१६॥

ॐ नमो हिरण्यबाहवे सेनान्ये दिशाञ्च पतये नमः स्वाहा ॥१७॥

ॐ नमो व्वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः पशूनाम्पतये नमः स्वाहा ॥१८॥

ॐ नमः शष्पिञ्जराय त्त्विषीमते पथीनाम्पतये नमः स्वाहा ॥१९॥

ॐ नमो हरिकेशायोपवीतिने पुष्टानाम्पतये नमः स्वाहा ॥२०॥

ॐ नमो बभ्लुशाय व्व्याधिनेऽन्नानाम्पतये नमः स्वाहा ॥२१॥

ॐ नमो भवष्य हेत्यै जगताम्पतये नमः स्वाहा ॥२२॥

ॐ नमो रुद्रायाततायिने क्षेत्राणाम्पतये नमः स्वाहा ॥२३॥

ॐ नमः सूतायाहन्त्यै व्वनानाम्पतये नमः स्वाहा ॥२४॥

ॐ नमो रोहिताय स्स्थपतये व्वृक्षाणाम्पतये नमः स्वाहा ॥२५॥

ॐ नमो भुवन्तये व्वारिवस्कृतायौषधीनाम्पतये नमः स्वाहा ॥२६॥

ॐ नमो मन्त्रिणे व्वाणिजाय कक्षाणाम्पतये नमः स्वाहा ॥२७॥

ॐ नमऽउच्चैर्घोषायाक्रन्दयते पत्तीनाम्पतये नमः स्वाहा ॥२८॥

ॐ नमः कृत्स्नायतया धावते सत्त्वनाम्पतये नमः स्वाहा ॥२९॥

ॐ नमः सहमानाय निव्व्याधिनऽ आव्व्याधिनीनाम्पतये नमः स्वाहा ॥३०॥

ॐ नमो निषङ्गिणे ककुभाय स्तेनानाम्पतये नमः—स्वाहा ॥३१॥

ॐ नमो निचेरवे परिचरायारण्यानाम्पतये नमः स्वाहा ॥३२॥

ॐ नमो वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनाम्पतये नमः स्वाहा ॥३३॥

ॐ नमो निषङ्गिणऽ इषुधिमते तस्कराणाम्पतये नमः स्वाहा ॥३४॥

ॐ नमः सृकायिभ्यो जिघा ँ सद्भ्यो मुष्णताम्पतये नमः स्वाहा ॥३५॥

ॐ नमोऽसिमद्भ्यो नक्तञ्चरद्भ्यो विकृन्तानाम्पतये नमः स्वाहा ॥३६॥

ॐ नमऽउष्णीषिणे गिरिचराय कुलुञ्चानाम्पतये नमः स्वाहा ॥३७॥

ॐ नमऽइषुमद्भ्यो धन्वायिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥३८॥

ॐ नमऽ आतन्वानेभ्यः प्प्रतिदधानेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥३९॥

ॐ नमऽ आयच्छद्भ्योऽस्यद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥४०॥

ॐ नमो व्विसृजद्भ्यो विद्ध्यद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥४१॥

ॐ नमः स्वपद्भ्यो जाग्रद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥४२॥

ॐ नमः शयानेभ्यऽआसीनेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥४३॥

ॐ नमस्तिष्ठद्भ्यो धावद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥४४॥

ॐ नमः सभाभ्यः सभापतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥४५॥

ॐ नमोऽश्वेभ्योऽश्वपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥४६॥

ॐ नमऽ आव्याधिनीभ्यो व्विविद्ध्यन्तीभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥४७॥

ॐ नमऽउगणाभ्यस्तृ ठं० हतीभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥४८॥

ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥४९॥

ॐ नमो व्व्रातेभ्यो व्व्रातपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥५०॥

ॐ नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥५१॥

ॐ नमो व्विरूपेभ्यो व्विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥५२॥

ॐ नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥५३॥

ॐ नमो रथिभ्योऽअरथेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥५४॥

ॐ नमः क्षत्तृभ्यः सङ्ग्रहीतृभ्यश्च वो नमः-स्वाहा ॥५५॥

ॐ नमो महद्भ्योऽअर्भकेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥५६॥

ॐ नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्चवो नमः स्वाहा ॥५७॥

ॐ नमः कुलालेभ्यः कर्म्मारेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥५८॥

ॐ नमो निषादेभ्यः पुञ्जिष्ठेभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥५९॥

ॐ नमः श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥६०॥

ॐ नमः श्वभ्यः श्वपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥६१॥

ॐ नमो भवाय च रुद्राय च स्वाहा ॥६२॥

ॐ नमः शर्व्वाय च पशुपतये च स्वाहा ॥६३॥

ॐ नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च स्वाहा ॥६४॥

ॐ नमः कपर्द्दिने च व्युप्तकेशाय च स्वाहा ॥६५॥

ॐ नमः सहस्राक्षाय च शतधन्वने च स्वाहा ॥६६॥

ॐ नमो गिरिशयाय च शिपिविष्टाय च स्वाहा ॥६७॥

ॐ नमो मीढुष्टमाय चेषुमते च स्वाहा ॥६८॥

ॐ नमो ह्रस्वाय च व्वामनाय च स्वाहा ॥६९॥

ॐ नमो बृहते च व्वर्षीयसे च स्वाहा ॥७०॥

ॐ नमो व्वृद्धाय च सवृधे च स्वाहा ॥७१॥

ॐ नमोऽग्र्याय च प्प्रथमाय च स्वाहा ॥७२॥

ॐ नमऽ आशवे चाजिराय च स्वाहा ॥७३॥

ॐ नमः शीघ्र्याय च शीभ्याय च स्वाहा ॥७४॥

ॐ नमऽ ऊर्म्म्याय चावस्वन्याय च स्वाहा ॥७५॥

ॐ नमो नादेयाय च द्वीप्याय च स्वाहा ॥७६॥

ॐ नमो ज्ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च स्वाहा ॥७७॥

ॐ नमः पूर्व्वजाय चापरजाय च स्वाहा ॥७८॥

ॐ नमो मद्ध्यमाय चापगल्भाय च स्वाहा ॥७९॥

ॐ नमो जघन्याय च बुध्न्याय च–स्वाहा ॥८०॥

ॐ नमः सोभ्याय च प्प्रतिसर्य्याय च स्वाहा ॥८१॥

ॐ नमो याम्म्याय च क्षेम्म्याय च स्वाहा ॥८२॥

ॐ नमः श्लोक्याय चावसान्याय च स्वाहा ॥८३॥

ॐ नम ऽ उर्व्वर्य्याय च खल्याय च स्वाहा ॥८४॥

ॐ नमो व्वन्याय च कक्ष्याय च स्वाहा ॥८५॥

ॐ नमः श्रवाय च प्प्रतिश्रवाय च स्वाहा ॥८६॥

ॐ नमऽ आशुषेणाय चाशुरथाय च स्वाहा ॥८७॥

ॐ नमः शूराय चावभेदिने च स्वाहा ॥८८॥

ॐ नमो बिल्म्मिने च कवचिने च स्वाहा ॥८९॥

ॐ नमो व्वर्म्मिणे च व्वरूथिने च स्वाहा ॥९०॥

ॐ नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च स्वाहा ॥९१॥

ॐ नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च स्वाहा ॥९२॥

ॐ नमो धृष्णवे च प्प्रमृशाय च स्वाहा ॥९३॥

ॐ नमो निषङ्गिणे चेषुधिमते च स्वाहा ॥९४॥

ॐ नमस्तीक्ष्णेषवे चायुधिने च स्वाहा ॥९५॥

ॐ नमः स्वायुधाय च सुधन्वने च स्वाहा ॥९६॥

ॐ नमः स्रुत्याय च पत्थ्याय च स्वाहा ॥९७॥

ॐ नमः काट्याय च नीप्प्याय च स्वाहा ॥९८॥

ॐ नमः कुल्याय च सरस्याय च स्वाहा ॥९९॥

ॐ नमो नादेयाय च व्वैशन्ताय च स्वाहा ॥१००॥

ॐ नमः कूप्प्याय चावट्याय च स्वाहा ॥१०१॥

ॐ नमो व्वीद्ध्याय चातप्प्याय च स्वाहा ॥१०२॥

ॐ नमो मेग्घ्याय च विद्युत्याय च स्वाहा ॥१०३॥

ॐ नमो व्वर्ष्याय चावर्ष्याय च स्वाहा ॥१०४॥

ॐ नमो व्वार्य्याय च रेष्म्याय च–स्वाहा ॥१०५॥

ॐ नमो व्वास्तव्व्याय च व्वास्तुपाय च स्वाहा ॥१०६॥

ॐ नमः सोमाय च रुद्राय च स्वाहा ॥१०७॥

ॐ नमस्ताम्म्राय चारुणाय च स्वाहा ॥१०८॥

ॐ नमः शङ्गवे च पशुपतये च स्वाहा ॥१०९॥

ॐ नमऽ उग्ग्राय च भीमाय च स्वाहा ॥११०॥

ॐ नमोऽग्रेवधाय च दूरेवधाय च स्वाहा ॥१११॥

ॐ नमो हन्त्रे च हनीयसे च स्वाहा ॥११२॥

ॐ नमो व्वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः स्वाहा ॥११३॥

ॐ नमस्ताराय स्वाहा ॥११४॥

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च स्वाहा ॥११५॥

ॐ नमः शङ्कराय च मयस्कराय च स्वाहा ॥११६॥

ॐ नमः शिवाय च शिवतराय च स्वाहा ॥११७॥

ॐ नमः पार्य्याय चावार्य्याय च स्वाहा ॥११८॥

ॐ नमः प्प्रतरणाय चोत्तरणाय च स्वाहा ॥११९॥

ॐ नमस्तीर्त्थ्याय च कूल्ल्याय च स्वाहा ॥१२०॥

ॐ नमः शष्प्याय च फेन्याय च स्वाहा ॥१२१॥

ॐ नमः सिकत्त्याय च प्रवाह्याय च स्वाहा ॥१२२॥

ॐ नमः कि ठं० शिलाय च क्षयणाय च स्वाहा ॥१२३॥

ॐ नमः कपर्द्दिने च पुलस्तये च स्वाहा ॥१२४॥

ॐ नमऽ इरिण्याय च प्प्रपत्थ्याय च स्वाहा ॥१२५॥

ॐ नमो व्व्रज्ज्याय च गोष्ठ्याय च स्वाहा ॥१२६॥

ॐ नमस्तल्प्याय च गेह्याय च स्वाहा ॥१२७॥

ॐ नमो हृदय्याय च निवेष्प्याय च स्वाहा ॥१२८॥

ॐ नमः काट्ट्याय च गह्व्वरेष्ठाय च स्वाहा ॥१२९॥

ॐ नमः शुष्क्याय च हरित्याय च–स्वाहा ॥१३०॥

ॐ नमः पाᳬंसव्याय च रजस्याय च स्वाहा ॥१३१॥

ॐ नमो लोप्याय चोलप्याय च स्वाहा ॥१३२॥

ॐ नमऽ ऊर्व्याय च सूर्व्याय च स्वाहा ॥१३३॥

ॐ नमः पर्ण्णाय च पर्ण्णशदाय च स्वाहा ॥१३४॥

ॐ नमऽ उद्गुरमाणाय चाभिघ्नते च स्वाहा ॥१३५॥

ॐ नमऽ आखिदते च प्रखिदते च स्वाहा ॥१३६॥

ॐ नमऽ इषुकृद्भ्यो धनुष्कृद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा ॥१३७॥

ॐ नमो वः किरिकेभ्यो देवाना ᳬ हृदयेभ्यः स्वाहा ॥१३८॥

ॐ नमो विचिन्वत्केभ्यो देवाना ᳬ हृदयेभ्यः स्वाहा ॥१३९॥

ॐ नमो विक्षिणत्केभ्यो देवाना ᳬ हृदयेभ्यः स्वाहा ॥१४०॥

ॐ नमऽ आनिर्हतेभ्यो देवाना ᳬ हृदयेभ्यः स्वाहा ॥१४१॥

ॐ द्रापेऽ अन्धसस्पते दरिद्र नीललोहित ॥
आसाम्प्रजानामेषाम्पशूनाम्मा भेर्म्मा रोङ्मो च नः किञ्चनाममत्
स्वाहा ॥१४२॥

ॐ इमा रुद्राय तवसे कपर्द्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः यथा शमसद्-
द्विपदे चतुष्पदे विश्वम्पुष्टङ्ग्रामेऽ अस्मिन्ननातुरम् स्वाहा ॥१४३॥

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूः शिवा विश्वाहा भेषजी ॥
शिवा रुतस्य भेषजी तया नो मृड जीवसे स्वाहा ॥१४४॥

ॐ परि नो रुद्रस्य हेतिर्व्वृणक्तु परि त्वेषस्य दुर्म्मतिरघायोः ॥
अव स्थिरा मघवद्भ्यस्तनुष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृड स्वाहा ॥१४५॥

ॐ मीढुष्टम शिवतम शिवो नः सुमना भव ॥
परमे वृक्षऽ आयुधन्निधाय कृत्तिं व्वसानऽ आचर पिनाकम्बिभ्रदागहि
स्वाहा ॥१४६॥

ॐ विकिरिद्र विलोहित नमस्तेऽ अस्तु भगवः ॥
यास्ते सहस्र ᳬ हेतयोऽन्यमस्मन्निवपन्तु ताः स्वाहा ॥१४७॥

ॐ सहस्राणि सहस्रशो बाह्वोस्तव हेतयः ॥
तासामीशानो भगवः पराचीना मुखा कृधि स्वाहा ॥१४८॥

ॐ असङ्ख्याता सहस्राणि ये रुद्द्राऽ अधि भूम्म्याम् ॥
तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥१४९॥

ॐ अस्मिन्महत्त्यर्ण्णवेऽन्तरिक्षे भवाऽ अधि ॥
तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥१५०॥

ॐ नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठा दिव ꣳ रुद्द्राऽ उपश्रिताः ॥
तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥१५१॥

ॐ नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठा शर्व्वा अधः क्षमाचराः ॥
तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥१५२॥

ॐ ये व्वृक्षेषु शष्पिञ्जरा नीलग्ग्रीवा व्विलोहिताः ॥
तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥१५३॥

ॐ ये भूतानामधिपतयो व्विशिखासः कपर्द्दिनः ॥
तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥१५४॥

ॐ ये पथाम्पथिरक्षयऽ ऐलवृदा आयुर्य्युधः ॥
तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥१५५॥

ॐ ये तीर्थानि प्प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः ॥
तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥१५६॥

ॐ येऽन्नेषु व्विविद्ध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान् ॥
तेषांꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥१५७॥

ॐ यऽएतावन्तश्च भूयाꣳसश्च दिशो रुद्द्रा व्वितस्थिरे ॥
तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि स्वाहा ॥१५८॥

ॐ नमोऽस्तु रुद्द्रेभ्यो ये दिवि येषां व्वर्षमिषवः ॥ तेभ्यो दश प्प्राचीर्द्दश दक्षिणा दश प्प्रतीचीर्द्दशोदीचीर्द्दशोर्ध्वाः ॥ तेभ्यो नमोऽ अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भे दद्ध्मः स्वाहा ॥१५९॥

ॐ नमोऽस्तु रुद्द्रेभ्यो येऽन्तरिक्षे येषां व्वातऽइषवः ।। तेभ्यो दश प्प्राचीर्द्दश दक्षिणा दश प्प्रतीचीर्द्दशोदीचीर्द्दशोर्ध्वाः ।। तेभ्यो नमोऽ अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भे दद्ध्मः स्वाहा ।।१६०।।

ॐ नमोऽस्तु रुद्द्रेभ्यो ये पृथिव्व्यां य्येषामन्नमिषवः ।। तेभ्यो दश प्प्राचीर्द्दश दक्षिणा दश प्प्रतीचीर्द्दशोदीचीर्द्दशोर्ध्वाः ।। तेभ्यो नमोऽ अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भे दद्ध्मः स्वाहा ।।१६१।।

ॐ व्वय ठं० सोम व्व्रते तव मनस्तनूषु बिब्भ्रतः ।। प्रजावन्तः सचेमहि ।।१।।

एष ते रुद्द्र भागः सह स्वस्राम्बिकया तञ्जुषस्व स्वाहैष ते रुद्द्र भागऽ आखुस्ते पशुः ।।२।।

अव रुद्द्रमदीमह्यव देवन्त्र्यम्बकम् ।। यथा नो व्वस्यसस्क्करद्यथा नः श्श्रेयसस्क्करद्यथा नो व्व्यवसाययात् ।।३।।

भेषजमसि भेषजङ्गवेऽश्वाय पुरुषाय भेषजम् ।। सुखम्मेषाय मेष्यै ।।४।।

त्र्यम्बकँ य्यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् ।। उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्त्योर्म्मुक्षीय मामृतात् ।। त्र्यम्बकँ य्यजामहे सुगन्धिम्पतिवेदनम् ।। उर्व्वारुकमिव बन्धनादितो- मुक्षीय मामुतः ।।५।।

एतत्ते रुद्द्रावसन्तेन परो मूजवतोऽतीहि ।। अवततधन्वा पिनाकावसः कृत्तिवासाऽ अहि ठं०सन्नः शिवोऽतीहि ।।६।।

त्र्यायुषञ्जमदग्ग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् ।। यद्देवेषु त्र्यायुषन्तन्नोऽ अस्तु त्र्यायुषम् ।।७।।

शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्तेऽ अस्तु मा मा हि ठं०सीः ।। नि वर्त्तयाम्स्या- युषेऽन्नाद्याय प्प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्प्रजास्त्वाय सुवीर्य्याय ।।८।। (पाठमात्रम्)

ॐ उग्ग्रश्च भीमश्चद्ध्वान्तश्च धुनिश्च ।। सासह्व्वाँश्चाभियुग्वा च व्विक्षिपः स्वाहा ।।१।।

अग्ग्नि ठं० हृदयेनाशनि ठं० हृदयाग्ग्रेण पशुपतिङ्कृत्स्नहृदयेन भवँ य्यक्ना ।। शर्व्व- म्मतस्नाभ्यामीशानम्मन्युना महादेवमन्तः पर्शव्व्येनोग्ग्रन्देवं व्वनिष्ठुना व्वसिष्ठहनुः शिङ्गीनि कोश्याभ्याम् ।।२।।

उग्ग्रँल्लोहितेन मित्र ठं० सौव्व्रत्येन रुद्द्रन्दौर्व्व्रत्त्येनेन्द्रम्प्रक्रीडेन मरुतो बलेन साद्ध्यान्प्रमुदा ।। भवस्य कण्ठच ठं० रुद्द्रस्यान्तः पार्श्व्यम्महादेवस्य यकृच्छर्व्वस्य व्वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत् ।।३।।

लोमभ्यः स्वाहा लोमभ्यः स्वाहा त्वचे स्वाहा त्वचे स्वाहा लोहिताय स्वाहा लोहिताय स्वाहा मेदोभ्यः स्वाहा मेदोभ्यः स्वाहा ।। माᳬसेभ्यः स्वाहा माᳬसेभ्यः स्वाहा स्नावभ्यः स्वाहा स्नावभ्यः स्वाहास्त्थभ्यः स्वाहास्त्थभ्यः स्वाहा मज्जभ्यः स्वाहा मज्जभ्यः स्वाहा ।। रेतसे स्वाहा पायवे स्वाहा ।।४।।

आयासाय स्वाहा प्प्रायासाय स्वाहा सँय्यासाय स्वाहा व्वियासाय स्वाहोद्यासाय स्वाहा ।। शुचे स्वाहा शोचते स्वाहा शोचमानाय स्वाहा शोकाय स्वाहा ।।५।।

तपसे स्वाहा तप्प्यते स्वाहा तप्प्यमानाय स्वाहा तप्ताय स्वाहा घर्म्माय स्वाहा ।। निष्कृत्त्यै स्वाहा प्प्रायश्चित्त्यै स्वाहा भेषजाय स्वाहा ।।६।।

यमाय स्वाहान्तकाय स्वाहा मृत्त्यवे स्वाहा ।। ब्रह्मणे स्वाहा ब्ब्रह्महत्त्यायै स्वाहा व्विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा द्यावापृथिवीभ्याᳬ स्वाहा ।।७।। (पाठमात्रम्)

ॐ व्वाजश्च मे प्प्रसवश्च मे प्प्रयतिश्च मे प्प्रसितिश्च मे धीतिश्च मे क्रतुश्च मे स्वरश्च मे श्लोकश्च मे श्रवश्च मे श्रुतिश्च मे ज्ज्योतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।।१।।

प्राणश्च मेऽपानश्च मे व्व्यानश्च मेऽसुश्च मे चित्तश्च मऽ आधीतश्च मे व्वाक्च मे मनश्च मे चक्षुश्च मे श्रोत्रश्च मे दक्षश्च मे बलश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।।२।।

ओजश्च मे सहश्च मऽ आत्मा च मे तनूश्च मे शर्म्म च मे व्वर्म्म च मेऽङ्गानि च मेऽस्थीनि च मे परूᳬषि च मे शरीराणि च मऽ आयुश्च मे जरा च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ।।३।।

ज्यैष्ठ्यञ्च मऽ आधिपत्त्यञ्च मे मन्युश्च मे भामश्च मेऽमश्च मेऽम्भश्च मे जेमा च मे महिमा च मे व्वरिमा च मे प्प्रथिमा च मे व्वर्षिमा च मे द्द्राघिमा च मे वृद्धञ्च मे व्वृद्धिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्—स्वाहा ।।४-१।।

सत्यश्च मे श्रद्धा च मे जगच्च मे धनञ्च मे व्विश्वञ्च मे महश्च मे क्क्रीडा च मे मोदश्च मे जातञ्च मे जनिष्यमाणञ्च मे सूक्तञ्च मे सुकृतञ्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥५॥

ऋतञ्च मेऽमृतञ्च मेऽयक्ष्मञ्च मेऽनामयच्च मे जीवातुश्च मे दीर्घायुत्त्वञ्च मेऽनमित्रञ्च मेऽभयञ्च मे सुखञ्च मे शयनञ्च मे सूषाश्च मे सुदिनञ्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥६॥

यन्ता च मे धर्त्ता च मे क्षेमश्च मे धृतिश्च मे व्विश्वञ्च मे महश्च मे सँव्विच्च मे ज्ञात्रञ्च मे सूश्च मे प्प्रसूश्च मे सीरञ्च मे लयश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥७॥

शञ्च मे मयश्च मे प्प्रियञ्च मेऽनुकामश्च मे कामश्च मे सौमनसश्च मे भगश्च मे द्द्रविणञ्च मे भद्द्रञ्च मे श्रेयश्च मे व्वसीयश्च मे यशश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्—स्वाहा ॥८-२॥

ऊर्क्च मे सूनृता च मे पयश्च मे रसश्च मे घृतञ्च मे मधु च मे सग्धिश्च मे सपीतिश्च मे कृषिश्च मे व्वृष्टिश्च मे जैत्रञ्च मऽ औद्भिद्यञ्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥९॥

रयिश्च मे रायश्च मे पुष्टञ्च मे पुष्टिश्च मे व्विभु च मे प्प्रभु च मे पूर्णञ्च मे पूर्णतरञ्च मे कुयवञ्च मेऽक्षितञ्च मेऽन्नञ्च मेऽक्षुच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥१०॥

व्वित्तञ्च मे व्वेद्यञ्च मे भूतञ्च मे भविष्यच्च मे सुगञ्च मे सुपत्थ्यञ्च मऽ ऋद्धञ्च मऽ ऋद्धिश्च्च मे क्लृप्तञ्च मे क्लृप्तिश्च मे मतिश्च मे सुमतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥११॥

व्व्रीहयश्च मे यवाश्च मे माषाश्च मे तिलाश्च मे मुद्गाश्च मे खल्वाश्च मे प्प्रियङ्ग-वश्च मेऽणवश्च मे श्यामाकाश्च मे नीवाराश्च मे गोधूमाश्च मे मसूराश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्—स्वाहा ॥१२-३॥

अश्मा च मे मृत्तिका च मे गिरयश्च मे पर्व्वताश्च मे सिकताश्च मे व्वनस्पतयश्च मे हिरण्यञ्च मेऽयश्च मे श्यामञ्च मे लोहञ्च मे सीसञ्च मे त्रपु च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥१३॥

अग्निश्च मऽ आपश्च मे व्वीरुधश्च मऽ ओषधयश्च मे कृष्टपच्याश्च मेऽकृष्टपच्याश्च मे ग्ग्राम्याश्च मे पशवऽ आरण्याश्च मे व्वित्तञ्च मे व्वित्तिश्च मे भूतञ्च मे भूतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥१४॥

व्वसु च मे व्वसतिश्च मे कर्म्म च मे शक्तिश्च मेऽर्थश्च मऽ एमश्च मऽ इत्या च मे गतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्—स्वाहा । १५-४॥

अग्निश्च मऽ इन्द्रश्च मे सोमश्च मऽ इन्द्रश्च मे सविता च मऽ इन्द्रश्च मे सरस्वती च मऽइन्द्रश्च मे पूषा च मऽ इन्द्रश्च मे बृहस्पतिश्च मऽ इन्द्रश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥१६॥

मित्रश्च मऽ इन्द्रश्च मे व्वरुणश्च मऽ इन्द्रश्च मे धाता च मऽ इन्द्रश्च मे त्वष्टा च मऽ इन्द्रश्च मे मरुतश्च मऽ इन्द्रश्च मे व्विश्वे च मे देवाऽ इन्द्रश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥१७॥

पृथिवी च मऽ इन्द्रश्च मेऽन्तरिक्षञ्च मऽ इन्द्रश्च मे द्यौश्च मऽ इन्द्रश्च मे समाश्च मऽ इन्द्रश्च मे नक्षत्राणि च मऽ इन्द्रश्च मे दिशश्च मऽ इन्द्रश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् —स्वाहा ॥१८-५॥

अꣳशुश्च मे रश्मिश्च मेऽदाभ्यश्च मेऽधिपतिश्च मऽ उपाꣳशुश्च मेऽन्तर्य्यामश्च मऽ ऐन्द्रवायवश्च मे मैत्रावरुणश्च मऽ आश्विनश्च मे प्प्रतिप्प्रस्थानश्च मे शुक्रश्च मे मन्थी च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥१९॥

आग्ग्रयणश्च मे व्वैश्वदेवश्च मे ध्रुवश्च मे व्वैश्वानरश्च मऽ ऐन्द्राग्नश्च मे महावैश्वदेवश्च मे मरुत्वतीयाश्च मे निष्क्केवल्यश्च मे सावित्रश्च मे सारस्वतश्च मे पात्नीवतश्च मे हारियोजनश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥२०॥

स्रुचश्च मे चमसाश्च मे व्वायव्व्यानि च मे द्रोणकलशश्च मे ग्ग्रावाणश्च मेऽधिषवणे च मे पूतभृतच्च मऽ आधवनीयश्च मे व्वेदिश्च मे बर्हिश्च मेऽवभृथश्च मे स्वगाकारश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्—स्वाहा ॥२१-६॥

अग्निश्च मे घर्म्मश्च मेऽर्क्कश्च मे सूर्य्यश्च मे प्राणश्च मेऽश्वमेधश्च मे पृथिवी च मे ऽदितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्च मेऽङ्गुलयः शक्वरयो दिशश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥२२॥

व्रतश्च मऽ ऋतवश्च मे तपश्च मे संव्वत्सरश्च मेऽहोरात्रेऽ ऊर्व्वष्ठीवे बृहद्रथन्तरे च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्—स्वाहा ॥२३-७॥

एका च मे तिस्रश्च मे तिस्रश्च मे पञ्च च मे पञ्च च मे सप्त च मे सप्त च मे नव च मे नव च मऽ एकादश च मऽ एकादश च मे त्रयोदश च मे त्रयोदश च मे पञ्चदश च मे पञ्चदश च मे सप्तदश च मे सप्तदश च मे नवदश च मे नवदश च मऽ एकवि ठं० शतिश्च मऽ एकवि ठं० शतिश्च मे त्रयोवि ठं० शतिश्च मे त्रयोवि ठं० शतिश्च मे पञ्चवि ठं०शतिश्च मे पञ्चवि ठं०शतिश्च मे सप्तवि ठं०शतिश्च मे सप्तवि ठं०शतिश्च मे नववि ठं० शतिश्च मे नववि ठं०शतिश्च मऽ एकत्रि ठं० शच्च मऽ एकत्रि ठं०शच्च मे त्रयस्त्रि ठं० शच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्—स्वाहा ॥२४-८॥

चतस्रश्च मेऽष्टौ च मेऽष्टौ च मे द्वादश च मे द्वादश च मे षोडश च मे षोडश च मे व्वि ठं० शतिश्च मे व्वि ठं०शतिश्च मे चतुर्व्वि ठं० शतिश्च मे चतुर्वि ठं० शतिश्च मेऽष्टावि ठं० शतिश्च मेऽष्टावि ठं० शतिश्च मे द्वात्रि ठं० शच्च मे द्वात्रि ठं० शच्च मे षट्त्रि ठं० शच्च मे षट्त्रि ठं० शच्च मे चत्वारि ठं० शच्च मे चत्त्वारि ठं० शच्च मे चतुश्चत्त्वारि ठं० शच्च मे चतुश्चत्त्वारि ठं० शच्च मेऽष्टाचत्त्वारि ठं० शच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्—स्वाहा ॥२५-९॥

त्र्यविश्च मे त्र्यवी च मे दित्यवाट् च मे दित्यौही च मे पञ्चाविश्च मे पञ्चावी च मे त्रिवत्सश्च मे त्रिवत्सा च मे तुर्य्यवाट् च मे तुर्य्यौही च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥२६॥

पष्ठवाट् च मे पष्ठौही च मऽ उक्षा च मे व्वशा च मऽ ऋषभश्च मे व्वेहच्च मेऽनड्वाँश्च मे धेनुश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्—स्वाहा ॥२७-१०॥

व्वाजाय स्वाहा प्प्रसवाय स्वाहाऽपिजाय स्वाहा क्क्रतवे स्वाहा व्वसवे स्वाहाऽहर्प्पतये स्वाहाह्न्ने मुग्धाय स्वाहा मुग्धाय व्वैन ठं॰ शिनाय स्वाहा व्विन ठं॰ शिनऽ आन्त्यायनाय स्वाहान्त्याय भौवनाय स्वाहा भुवनस्य पतये स्वाहाऽधिपतये स्वाहा प्प्रजापतये स्वाहा ॥ इयन्ते राण्मित्राय यन्तासि यमनऽ ऊर्ज्जे त्वा व्वृष्ट्यै त्वा प्प्रजानान्त्वाधिपत्त्याय ॥२८॥

आयुर्य्यज्ञेन कल्पताम्प्राणो यज्ञेन कल्पताञ्चक्षुर्य्यज्ञेन कल्पताᳪ श्रोत्रय्यज्ञेन कल्पतां व्वाग्यज्ञेन कल्पताम्मनो यज्ञेन कल्पतामात्मा यज्ञेन कल्पताम्ब्रह्मा यज्ञेन कल्पता ज्ज्योतिर्य्यज्ञेन कल्पताᳪ स्वर्य्यज्ञेन कल्पताम्पृष्ठँ य्यज्ञेन कल्पताँ य्यज्ञो यज्ञेन कल्पताम् ॥ स्तोमश्च यजुश्चऽ ऋक्च साम च बृहच्च रथन्तरञ्च ॥ स्वर्द्देवाऽ अगन्मामृताऽ अभूम प्प्रजापतेः प्प्रजाऽ अभूम व्वेट् स्वाहा ॥२९-११॥

ॐ ऋचं व्वाचम्प्र पद्ये मनो यजुः प्प्र पद्ये साम प्प्राणम्प्र पद्ये चक्षुः श्रोत्रम्प्र पद्ये ॥
व्वागोजः सहौजो मयि प्प्राणापानौ स्वाहा ॥१॥

ॐ यन्मे च्छिद्द्रञ्चक्षुषो हृदयस्य मनसो वातितृण्णम्बृहस्पतिर्म्मे तद्दधातु ॥
शन्नो भवतु भुवनस्य यस्पतिः स्वाहा ॥२॥

(उपांशु) ॐ भूर्भुवः स्वः ॥ तत्सवितुर्व्वरेण्यम्भर्गो देवस्य धीमहि ॥
धियो यो नः प्प्रचोदयात् स्वाहा ॥३॥

ॐ कया नश्चित्रऽ आ भुवदूती सदावृधः सखा ॥
कया शचिष्ठया व्वृता स्वाहा ॥४॥

ॐ कस्त्वा सत्यो मदानाम्म ठं॰ हिष्ठो मत्सदन्धसः ॥
दृढा चिदारुजे व्वसु स्वाहा ॥५॥

ॐ अभीषु णः सखीनामविता जरितॄणाम् ॥
शतम्भवास्यूतिभिः स्वाहा ॥६॥

ॐ कया त्वन्नऽ ऊत्त्याभि प्प्र मन्दसे व्वृषन् ॥
कया स्तोतृभ्यऽ आ भर स्वाहा ॥७॥

ॐ इन्द्रो व्विश्वस्य राजति ॥
शन्नोऽ अस्तु द्विपदे शञ्चतुष्पदे स्वाहा ॥८॥

ॐ शन्नो मित्रः शं व्वरुणः शन्नो भवत्त्वर्य्यमा ॥
शन्नऽ इन्द्रो बृहस्पतिः शन्नो व्विष्णुरुरुक्रमः स्वाहा ॥९॥

ॐ शन्नो व्वातः पवताॅं शन्नस्तपतु सूर्य्यः ॥
शन्नः कनिक्रदद्देवः पर्ज्जन्योऽ अभि वर्षतु स्वाहा ॥१०॥

ॐ अहानि शम्भवन्तु नः श ठं० रात्रीः प्प्रति धीयताम् ॥
शन्नऽ इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शन्नऽ इन्द्रावरुणा रातहव्व्या ॥
शन्नऽ इन्द्रापूषणा व्वाजसातौ शमिन्द्रासोमा सुविताय शँय्योः स्वाहा ॥११॥

ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽ आपो भवन्तु पीतये ॥
शँय्योरभि स्रवन्तु नः स्वाहा ॥१२॥

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी ॥
यच्छा नः शर्म्म सप्प्रथाः स्वाहा ॥१३॥

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्ज्जे दधातन ॥
महे रणाय चक्षसे स्वाहा ॥१४॥

ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः ॥
उशतीरिव मातरः स्वाहा ॥१५॥

ॐ तस्माऽ अरङ्गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ ॥ आपो जनयथा च नः स्वाहा ॥१६॥

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ठं० शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः ॥
व्वनस्पतयः शान्तिर्व्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व्व ठं० शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः
सा मा शान्तिरेधि स्वाहा ॥१७॥

ॐ दृते दृ ठं०ह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्व्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम् ॥
मित्रस्याहञ्चक्षुषा सर्व्वाणि भूतानि समीक्षे ॥
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे स्वाहा ॥१८॥

ॐ दृते दृ ठं०ह मा ॥
ज्योक्ते सन्दृशि जीव्व्यासञ्ज्योक्ते सन्दृशि जीव्व्यासम् स्वाहा ॥१९॥

ॐ नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्तेऽ अस्त्वर्चिषे ॥
अन्याँस्तेऽ अस्मत्तपन्तु हेतयः पावकोऽ अस्मभ्य ठं० शिवो भव स्वाहा ॥२०॥

ॐ नमस्तेऽ अस्तु व्विद्युते नमस्ते स्तनयित्नवे ॥
नमस्ते भगवन्नस्तु यतः स्वः समीहसे स्वाहा ॥२१॥

ॐ यतो यतः समीहसे ततो नोऽ अभयङ्कुरु ॥
शन्नः कुरु प्प्रजाभ्योऽभयन्नः पशुभ्यः स्वाहा ॥२२॥

ॐ सुमित्रिया नऽ आपऽ ओषधयः सन्तु दुर्म्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान्द्वेष्टि यञ्च
व्वयन्द्विष्मः स्वाहा ॥२३॥

ॐ तच्चक्षुर्द्देवहितम्पुरस्ताच्छुक्क्रमुच्चरत् ॥
पश्येम शरदः शतञ्जीवेम शरदः शत ठं० शृणुयाम शरदः शतम्प्र ब्रवाम शरदः
शतमदीनाः स्याम शरदः शतम्भूयश्च शरदः शतात् स्वाहा ॥२४॥

अथ स्वस्तिमन्त्रपाठः

ॐ स्वस्ति नऽ इन्द्रो व्वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा व्विश्ववेदाः ॥
स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽ अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्द्दधातु ॥१॥

पयः पृथिव्व्याम्पयऽ ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः ॥
पयस्वतीः प्प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥२॥

व्विष्णो रराटमसि व्विष्णोः श्नप्त्रे स्थो व्विष्णोः स्यूरसि व्विष्णोर्ध्रुवोऽसि ॥
व्वैष्णवमसि व्विष्णवे त्वा ॥३॥

अग्निर्द्देवता व्वातो देवता सूर्य्यो देवता चन्द्रमा देवता व्वसवो देवता रुद्द्रा देवताऽऽदित्या
देवता मरुतो देवता व्विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्द्देवतेन्द्रो देवता व्वरुणो देवता ॥४॥

ॐ सद्योजातम्प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः ॥
भवे भवे नातिभवे भवस्व माम्भवोद्भवाय नमः ॥५॥

वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय
नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो
मनोन्मनाय नमः ॥६॥

अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः ॥
सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥७॥

तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि ॥
तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥८॥

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम् ॥
ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मेऽ अस्तु सदा शिवोऽम् ॥९॥

ॐ शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्तेऽ अस्तु मा मा हि ठं०सीः ॥
निवर्त्तयाम्म्यायुषेऽन्नाद्याय प्प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्प्रजास्त्वाय सुवीर्य्याय ॥१०॥

ॐ व्विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव ॥
यद्भद्रन्तन्नऽ आसुव ॥११॥

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ठं० शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः ॥
व्वनस्पतयः शान्तिर्व्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व्व ठं० शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥१२॥

सुशान्तिर्भवतु

(लघुषडङ्गन्यासान् कृत्वा ध्यानं कुर्युः)

इति लघुषडङ्गन्यास-सहितः

—रुद्रस्वाहाकारः—

—: 0 :—

श्री हरिहर भगवान् की आरती

ॐ जय हरिहर देवा श्री जय हरिहर देवा ॥
जग पालक-संहारक २ भव तारक देवा ॥ॐ जय०॥टेक॥

पूर्ण ब्रह्म परमात्मा तुम जगके स्वामी ॥हरि०॥
कृपा करो करुणामय २ प्रभु अन्तर्यामी ॥ॐ जय०॥१॥

सत्य सनातन सुन्दर तुम सबके स्वामी ॥शिव०॥
अविकारी अविनाशी २ अज अन्तर्यामी ॥ॐ जय०॥२॥

आदि अनादि अगोचर अविचल अविनाशी ॥हरि०॥
अतुल अनन्त अनामय २ अमित शक्तिराशी ॥ॐ जय०॥३॥

आदि अनन्त अनामय अकल कलाधारी ॥शिव०॥
अमल अरूप अगोचर २ अविचल अघहारी ॥ॐ जय०॥४॥

अमल अकल अज अक्षय अव्यय अविकारी ॥हरि०॥
सत-चित सुखमय सुन्दर २ हरि सत्ताधारी ॥ॐ जय०॥५॥

शुभ्र सौम्य सुरसरिधर शशिधर सुखकारो ॥शिव०॥
अति कमनीय शान्तिकर २ शिव मुनिमनहारी ॥ॐ जय०॥६॥

साक्षी शरण सखा प्रिय प्रियतम पूर्ण प्रभो ॥हरि०॥
केवल काल कलानिधि २ कालातीत विभो ॥ॐ जय०॥७॥

निर्गुण सगुण निरञ्जन जगमय नित्य प्रभो ॥शिव०॥
कालरूप केवल हर २ कालातीत विभो ॥ॐ जय०॥८॥

माता पिता पितामह स्वामि सुहृद् भर्ता ॥हरि०॥
विश्वोत्पादक पालक २ रक्षक संहर्ता ॥ॐ जय०॥९॥

रक्षक भक्षक प्रेरक प्रिय औढरदानी ॥शिव०॥
साक्षी परम अकर्ता २ कर्ता अभिमानी ॥ॐ जय०॥१०॥

आश्रय दान दयार्णव हम सबको दीजै ॥प्रभु०॥
पाप ताप हर हरि ! सब २ निज जन कर लीजै ॥ॐ जय०॥११॥

स्तुतिपाठः

श्रीगणेशाय नमः

गोविन्द माधव मुकुन्द हरे मुरारे शम्भो शिवेश शशिशेखर शूलपाणे ।
दामोदराच्युत जनार्दन वासुदेव त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति ॥१॥

गङ्गाधरान्धकरिपो हर नीलकण्ठ वैकुण्ठ कैटभरिपो कमठाब्जपाणे ।
भूतेश खण्डपरशो मृड चण्डिकेश त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति ॥२॥

विष्णो नृसिंह मधुसूदन चक्रपाणे गौरीपते गिरिश शङ्कर चन्द्रचूड ।
नारायणासुरनिबर्हण शार्ङ्गपाणे त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति ॥३॥

मृत्युञ्जयोग्र विषमेक्षण कामशत्रो श्रीकान्त पीतवसनाम्बुद नील शौरे ।
ईशान कृत्तिवसन त्रिदशैकनाथ त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति ॥४॥

लक्ष्मीपते मधुरिपो पुरुषोत्तमाद्य श्रीकण्ठ दिग्वसन शान्त पिनाकपाणे ।
आनन्दकन्द धरणीधर पद्मनाभ त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति ॥५॥

सर्वेश्वर त्रिपुरसूदन देवदेव ब्रह्मण्यदेव गरुडध्वज शङ्खपाणे ।
त्र्यक्षोरगाभरण बालमृगाङ्कमौले त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति ॥६॥

श्रीराम राघव रमेश्वर रावणारे भूतेश मन्मथरिपो प्रमथाधिनाथ ।
चाणूरमर्दन हृषीकपते मुरारे त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति ॥७॥

शूलिन् गिरीश रजनीश-कलावतंस कंसप्रणाशन सनातन केशिनाश ।
भर्ग त्रिनेत्र भव भूतपते पुरारे त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति ॥८॥

गोपीपते यदुपते वसुदेवसूनो कर्पूरगौर वृषभध्वज भालनेत्र ।
गोवर्धनोद्धरण धर्मधुरीण गोप त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति ॥९॥

स्थाणो त्रिलोचन पिनाकधरस्मरारे कृष्णानिरुद्ध कमलाकर कल्मषारे ।
विश्वेश्वर त्रिपथगार्द्रजटाकलाप त्याज्या भटा य इति सन्ततमामनन्ति ॥१०॥

यौ द्वौ शङ्खकपालभूषितकरौ मुक्तास्थिमालाधरौ
देवौ द्वारवतीश्मशाननिलयौ नागारिगोवाहनौ ।
द्वित्र्यक्षौ बलिदक्षयज्ञमथनौ श्रीशैलजावल्लभौ
पापं मे हरतामुभौ हरिहरौ श्रीवत्सगङ्गाधरौ ॥११॥

नमस्कारः

धर्मार्थकाममोक्षाख्यचतुर्वर्गप्रदायिनौ ।
वन्दे हरिहरौ देवौ त्र्यैलोक्यपरिपायिनौ ॥१॥

एकमूर्तिर्द्विधाभिन्नौ संसारार्णवतारकौ ।
वन्देऽहं कामदौ देवौ सततं शिवकेशवौ ॥२॥

॥ श्रीः ॥

श्रीविष्णोर्दिव्यसहस्रनामावलिः

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीविष्णोर्दिव्यसहस्रनामस्तोत्रमालामन्त्रस्य भगवान् वेदव्यास ऋषिः । अनुष्टुप् छन्दः । श्रीकृष्णः परमात्मा देवता । आत्मयोनिः स्वयंजात इति बीजम् । देवकीनन्दनः स्रष्टेति शक्तिः । उद्भवः क्षोभणो देव इति परमो मन्त्रः । शङ्खभृन्नन्दको चक्रीति-कीलकम् । त्रिसामा सामगः सामेति कवचम् । शार्ङ्गधन्वा गदाधर-इत्यस्त्रम् । ॐ विश्वं विष्णुर्वषट्कार इति ध्यानम् । श्रीकृष्णप्रीत्यर्थे चतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थे दिव्यविष्णुसहस्रनामहोमे विनियोगः ॥ षडङ्गन्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥

ध्यानम्

ॐ शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥

१	ॐ विश्वस्मै	नमः	११	ॐ परमात्मने	नमः
२	,, विष्णवे	नमः	१२	,, मुक्तानां परमायै गतये	नमः
३	,, वषट्काराय	नमः	१३	,, अव्ययाय	नमः
४	,, भूतभव्यभवत्प्रभवे	नमः	१४	,, पुरुषाय	नमः
५	,, भूतकृते	नमः	१५	,, साक्षिणे	नमः
६	,, भूतभृते	नमः	१६	,, क्षेत्रज्ञाय	नमः
७	,, भावाय	नमः	१७	,, अक्षराय	नमः
८	,, भूतात्मने	नमः	१८	,, योगाय	नमः
९	,, भूतभावनाय	नमः	१९	,, योगविदां नेत्रे	नमः
१०	,, पूतात्मने	नमः	२०	,, प्रधानपुरुषेश्वराय	नमः

२१ ॐ नारसिंहवपुषे नमः
२२ ,, श्रीमते नमः
२३ ,, केशवाय नमः
२४ ,, पुरुषोत्तमाय नमः
२५ ,, सर्वस्मै नमः
२६ ,, शर्वाय नमः
२७ ,, शिवाय नमः
२८ ,, स्थाणवे नमः
२९ ,, भूतादये नमः
३० ,, निधिरव्ययाय नमः
३१ ,, सम्भवाय नमः
३२ ,, भावनाय नमः
३३ ,, भर्त्रे नमः
३४ ,, प्रभवाय नमः
३५ ,, प्रभवे नमः
३६ ,, ईश्वराय नमः
३७ ,, स्वयम्भुवे नमः
३८ ,, शम्भवे नमः
३९ ,, आदित्याय नमः
४० ,, पुष्कराक्षाय नमः
४१ ,, महास्वनाय नमः
४२ ,, अनादिनिधनाय नमः
४३ ,, धात्रे नमः
४४ ,, विधात्रे नमः
४५ ,, धातुरुत्तमाय नमः
४६ ,, अप्रमेयाय नमः
४७ ,, हृषीकेशाय नमः
४८ ,, पद्मनाभाय नमः
४९ ,, अमरप्रभवे नमः

५० ॐ विश्वकर्मणे नमः
५१ ,, मनवे नमः
५२ ,, त्वष्ट्रे नमः
५३ ,, स्थविष्ठाय नमः
५४ ,, स्थविरायध्रुवाय नमः
५५ ,, अग्राह्याय नमः
५६ ,, शाश्वताय नमः
५७ ,, कृष्णाय नमः
५८ ,, लोहिताक्षाय नमः नमः
५९ ,, प्रतर्दनाय नमः
६० ,, प्रभूताय नमः
६१ ,, त्रिककुब्धाम्ने नमः
६२ ,, पवित्राय नमः
६३ ,, मङ्गलायपरस्मै नमः
६४ ,, ईशानाय नमः
६५ ,, प्राणदाय नमः
६६ ,, प्राणाय नमः
६७ ,, ज्येष्ठाय नमः
६८ ,, श्रेष्ठाय नमः
६९ ,, प्रजापतये नमः
७० ,, हिरण्यगर्भाय नमः
७१ ,, भूगर्भाय नमः
७२ ,, माधवाय नमः
७३ ,, मधुसूदनाय नमः
७४ ,, ईश्वराय नमः
७५ ,, विक्रमिणे नमः
७६ ,, धन्विने नमः
७७ ,, मेधाविने नमः
७८ ,, विक्रमाय नमः

७९	ॐ क्रमाय	नमः	१०८	ॐ सम्मिताय	नमः
८०	,, अनुत्तमाय	नमः	१०९	,, समाय	नमः
८१	,, दुराधर्षाय	नमः	११०	,, अमोघाय	नमः
८२	,, कृतज्ञाय	नमः	१११	,, पुण्डरीकाक्षाय	नमः
८३	,, कृतये	नमः	११२	,, वृषकर्मणे	नमः
८४	,, आत्मवते	नमः	११३	,, वृषाकृतये	नमः
८५	,, सुरेशाय	नमः	११४	,, रुद्राय	नमः
८६	,, शरणाय	नमः	११५	,, बहुशिरसे	नमः
८७	,, शर्मणे	नमः	११६	,, बभ्रवे	नमः
८८	,, विश्वरेतसे	नमः	११७	,, विश्वयोनये	नमः
८९	,, प्रजाभवाय	नमः	११८	,, शुचिश्रवसे	नमः
९०	,, अह्ने	नमः	११९	,, अमृताय	नमः
९१	,, संवत्सराय	नमः	१२०	,, शाश्वतस्थाणवे	नमः
९२	,, व्यालाय	नमः	१२१	,, वरारोहाय	नमः
९३	,, प्रत्ययाय	नमः	१२२	,, महातपसे	नमः
९४	,, सर्वदर्शनाय	नमः	१२३	,, सर्वगाय	नमः
९५	,, अजाय	नमः	१२४	,, सर्वविद्भानवे	नमः
९६	,, सर्वेश्वराय	नमः	१२५	,, विष्वक्सेनाय	नमः
९७	,, सिद्धाय	नमः	१२६	,, जनार्दनाय	नमः
९८	,, सिद्धये	नमः	१२७	,, वेदाय	नमः
९९	,, सर्वादये	नमः	१२८	,, वेदविदे	नमः
१००	,, अच्युताय	नमः	१२९	,, अव्यङ्गाय	नमः
१०१	,, वृषाकपये	नमः	१३०	,, वेदाङ्गाय	नमः
१०२	,, अमेयात्मने	नमः	१३१	,, वेदविदे	नमः
१०३	,, सर्वयोगविनिःसृताय	नमः	१३२	,, कवये	नमः
१०४	,, वसवे	नमः	१३३	,, लोकाध्यक्षाय	नमः
१०५	,, वसुमनसे	नमः	१३४	,, सुराध्यक्षाय	नमः
१०६	,, सत्याय	नमः	१३५	,, धर्माध्यक्षाय	नमः
१०७	,, समात्मने	नमः	१३६	,, कृताऽकृताय	नमः

१३७ ॐ चतुरात्मने नमः
१३८ ,, चतुर्व्यूहाय नमः
१३९ ,, चतुर्दंष्ट्राय नमः
१४० ,, चतुर्भुजाय नमः
१४१ ,, भ्राजिष्णवे नमः
१४२ ,, भोजनाय नमः
१४३ ,, भोक्त्रे नमः
१४४ ,, सहिष्णवे नमः
१४५ ,, जगदादिजाय नमः
१४६ ,, अनघाय नमः
१४७ ,, विजयाय नमः
१४८ ,, जेत्रे नमः
१४९ ,, विश्वयोनये नमः
१५० ,, पुनर्वसवे नमः
१५१ ,, उपेन्द्राय नमः
१५२ ,, वामनाय नमः
१५३ ,, प्रांशवे नमः
१५४ ,, अमोघाय नमः
१५५ ,, शुचये नमः
१५६ ,, ऊर्जिताय नमः
१५७ ,, अतीन्द्राय नमः
१५८ ,, सङ्ग्रहाय नमः
१५९ ,, सर्गाय नमः
१६० ,, धृतात्मने नमः
१६१ ,, नियमाय नमः
१६२ ,, यमाय नमः
१६३ ,, वेद्याय नमः
१६४ ,, वैद्याय नमः
१६५ ,, सदायोगिने नमः
१६६ ॐ वीरघ्ने नमः
१६७ ,, माधवाय नमः
१६८ ,, मधवे नमः
१६९ ,, अतीन्द्रियाय नमः
१७० ,, महामायाय नमः
१७१ ,, महोत्साहाय नमः
१७२ ,, महाबलाय नमः
१७३ ,, महाबुद्धये नमः
१७४ ,, महावीर्याय नमः
१७५ ,, महाशक्तये नमः
१७६ ,, महाद्युतये नमः
१७७ ,, अनिर्देश्यवपुषे नमः
१७८ ,, श्रीमते नमः नमः
१७९ ,, अमेयात्मने नमः
१८० ,, महाद्रिधृषे नमः
१८१ ,, महेष्वासाय नमः
१८२ ,, महीभर्त्रे नमः
१८३ ,, श्रीनिवासाय नमः
१८४ ,, सताङ्गतये नमः
१८५ ,, अनिरुद्धाय नमः
१८६ ,, सुरानन्दाय नमः
१८७ ,, गोविन्दाय नमः
१८८ ,, गोविदाम्पतये नमः
१८९ ,, मरीचये नमः
१९० ,, दमनाय नमः
१९१ ,, हंसाय नमः
१९२ ,, सुपर्णाय नमः
१९३ ,, भुजगोत्तमाय नमः
१९४ ,, हिरण्यनाभाय नमः

१९५	ॐ सुतपसे	नमः	२२४	ॐ सहस्रमूर्ध्ने	नमः
१९६	,, पद्मनाभाय	नमः	२२५	,, विश्वात्मने	नमः
१९७	,, प्रजापतये	नमः	२२६	,, सहस्राक्षाय	नमः
१९८	,, अमृत्यवे	नमः	२२७	,, सहस्रपदे	नमः
१९९	,, सर्वदृशे	नमः	२२८	,, आवर्त्तनाय	नमः
२००	,, सिंहाय	नमः	२२९	,, निवृत्तात्मने	नमः
२०१	,, सन्धात्रे	नमः	२३०	,, संवृताय	नमः
२०२	,, सन्धिमते	नमः	२३१	,, सम्प्रमर्दनाय	नमः
२०३	,, स्थिराय	नमः	२३२	,, अहःसंवर्त्तकाय	नमः
२०४	,, अजाय	नमः	२३३	,, वह्नये	नमः
२०५	,, दुर्मर्षणाय	नमः	२३४	,, अनिलाय नमः	नमः
२०६	,, शास्त्रे	नमः	२३५	,, धरणीधराय	नमः
२०७	,, विश्रुतात्मने	नमः	२३६	,, सुप्रसादाय	नमः
२०८	,, सुरारिघ्ने	नमः	२३७	,, प्रसन्नात्मने	नमः
२०९	,, गुरवे	नमः	२३८	,, विश्वधृषे	नमः
२१०	,, गुरुतमाय	नमः	२३९	,, विश्वभुग्विभवे	नमः
२११	,, धाम्ने	नमः	२४०	,, सत्कर्त्रे	नमः
२१२	,, सत्याय	नमः	२४१	,, सत्कृताय	नमः
२१३	,, सत्यपराक्रमाय	नमः	२४२	,, साधवे	नमः
२१४	,, निमिषाय	नमः	२४३	,, जह्नवे	नमः
२१५	,, अनिमिषाय	नमः	२४४	,, नारायणाय	नमः
२१६	,, स्रग्विणे	नमः	२४५	,, नराय	नमः
२१७	,, वाचस्पतिरुदारधिये	नमः	२४६	,, असंख्येयाय	नमः
२१८	,, अग्रण्ये	नमः	२४७	,, अप्रमेयात्मने	नमः
२१९	,, ग्रामण्ये	नमः	२४८	,, विशिष्टाय	नमः
२२०	,, श्रीमते	नमः	२४९	,, शिष्टकृते	नमः
२२१	,, न्यायाय	नमः	२५०	,, शुचये	नमः
२२२	,, नेत्रे	नमः	२५१	,, सिद्धार्थाय	नमः
२२३	,, समीरणाय	नमः	२५२	,, सिद्धसङ्कल्पाय	नमः

२५३ ॐ सिद्धिदाय नमः
२५४ ,, सिद्धिसाधनाय नमः
२५५ ,, वृषाहिने नमः
२५६ ,, वृषभाय नमः
२५७ ,, विष्णवे नमः
२५८ ,, वृषपर्वणे नमः
२५९ ,, वृषोदराय नमः
२६० ,, वर्द्धनाय नमः
२६१ ,, वर्द्धमानाय नमः
२६२ ,, विविक्ताय नमः
२६३ ,, श्रुतिसागराय नमः
२६४ ,, सुभुजाय नमः
२६५ ,, दुर्धराय नमः
२६६ ,, वाग्मिने नमः
२६७ ,, महेन्द्राय नमः
२६८ ,, वसुदाय नमः
२६९ ,, वसवे नमः
२७० ,, नैकरूपाय नमः
२७१ ,, बृहद्रूपाय नमः
२७२ ,, शिपिविष्टाय नमः
२७३ ,, प्रकाशनाय नमः
२७४ ,, ओजस्तेजोद्युतिधराय नमः
२७५ ,, प्रकाशात्मने नमः
२७६ ,, प्रतापनाय नमः
२७७ ,, ऋद्धाय नमः
२७८ ,, स्पष्टाक्षराय नमः
२७९ ,, मन्त्राय नमः
२८० ,, चन्द्रांशवे नमः
२८१ ,, भास्करद्युतये नमः
२८२ ॐ अमृतांशूद्भवाय नमः
२८३ ,, भानवे नमः
२८४ ,, शशिबिन्दवे नमः
२८५ ,, सुरेश्वराय नमः
२८६ ,, औषधाय नमः
२८७ ,, जगतःसेतवे नमः
२८८ ,, सत्यधर्मपराक्रमाय नमः
२८९ ,, भूतभव्यभवन्नाथाय नमः
२९० ,, पवनाय नमः
२९१ ,, पावनाय नमः
२९२ ,, अनलाय नमः
२९३ ,, कामघ्ने नमः
२९४ ,, कामकृते नमः
२९५ ,, कान्ताय नमः
२९६ ,, कामाय नमः
२९७ ,, कामप्रदाय नमः
२९८ ,, प्रभवे नमः
२९९ ,, युगादिकृते नमः
३०० ,, युगावर्त्ताय नमः
३०१ ,, नैकमायाय नमः
३०२ ,, महाशनाय नमः
३०३ ,, अदृश्याय नमः
३०४ ,, व्यक्तरूपाय नमः
३०५ ,, सहस्रजिते नमः
३०६ ,, अनन्तजिते नमः
३०७ ,, इष्टाय नमः
३०८ ,, विशिष्टाय नमः
३०९ ,, शिष्टेष्टाय नमः
३१० ,, शिखण्डिने नमः

३११ ॐ नहुषाय नमः
३१२ ,, वृषाय नमः
३१३ ,, क्रोधघ्ने नमः
३१४ ,, क्रोधकृते नमः
३१५ ,, कर्त्रे नमः
३१६ ,, विश्वबाहवे नमः
३१७ ,, महीधराय नमः
३१८ ,, अच्युताय नमः
३१९ ,, प्रथिताय नमः
३२० ,, प्राणाय नमः
३२१ ,, प्राणदाय नमः
३२२ ,, वासवानुजाय नमः
३२३ ,, अपांनिधये नमः
३२४ ,, अधिष्ठानाय नमः
३२५ ,, अप्रमत्ताय नमः
३२६ ,, प्रतिष्ठिताय नमः
३२७ ,, स्कन्दाय नमः
३२८ ,, स्कन्दधराय नमः
३२९ ,, धुर्याय नमः
३३० ,, वरदाय नमः
३३१ ,, वायुवाहनाय नमः
३३२ ,, वासुदेवाय नमः
३३३ ,, बृहद्भानवे नमः
३३४ ,, आदिदेवाय नमः
३३५ ,, पुरन्दराय नमः
३३६ ,, अशोकाय नमः
३३७ ,, तारणाय नमः
३३८ ,, ताराय नमः
३३९ ,, शूराय नमः
३४० ॐ शौरये नमः
३४१ ,, जनेश्वराय नमः
३४२ ,, अनुकूलाय नमः
३४३ ,, शतावर्ताय नमः
३४४ ,, पद्मिने नमः
३४५ ,, पद्मनिभेक्षणाय नमः
३४६ ,, पद्मनाभाय नमः
३४७ ,, अरविन्दाक्षाय नमः
३४८ ,, पद्मगर्भाय नमः
३४९ ,, शरीरभृते नमः
३५० ,, महदर्धये नमः
३५१ ,, ऋद्धाय नमः
३५२ ,, वृद्धात्मने नमः
३५३ ,, महाक्षाय नमः
३५४ ,, गरुडध्वजाय नमः
३५५ ,, अतुलाय नमः
३५६ ,, शरभाय नमः
३५७ ,, भीमाय नमः
३५८ ,, समयज्ञाय नमः
३५९ ,, हविर्हरये नमः
३६० ,, सर्वलक्षण लक्षण्याय नमः
३६१ ,, लक्ष्मीवते नमः
३६२ ,, समितिञ्जयाय नमः
३६३ ,, विक्षराय नमः
३६४ ,, रोहिताय नमः
३६५ ,, मार्गाय नमः
३६६ ,, हेतवे नमः
३६७ ,, दामोदराय नमः
३६८ ,, सहाय नमः

३६९ ॐ महीधराय नमः
३७० ,, महाभागाय नमः
३७१ ,, वेगवते नमः
३७२ ,, अमिताशनाय नमः
३७३ ,, उद्भवाय नमः
३७४ ,, क्षोभणाय नमः
३७५ ,, देवाय नमः
३७६ ,, श्रीगर्भाय नमः
३७७ ,, परमेश्वराय नमः
३७८ ,, करणाय नमः
३७९ ,, कारणाय नमः
३८० ,, कर्त्रे नमः
३८१ ,, विकर्त्रे नमः
३८२ ,, गहनाय नमः
३८३ ,, गुहाय नमः
३८४ ,, व्यवसायाय नमः
३८५ ,, व्यवस्थानाय नमः
३८६ ,, संस्थानाय नमः
३८७ ,, स्थानदाय नमः
३८८ ,, ध्रुवाय नमः
३८९ ,, परर्द्धये नमः
३९० ,, परमस्पष्टाय नमः
३९१ ,, तुष्टाय नमः
३९२ ,, पुष्टाय नमः
३९३ ,, शुभेक्षणाय नमः
३९४ ,, रामाय नमः
३९५ ,, विरामाय नमः
३९६ ,, विरजसे नमः
३९७ ,, मार्गाय नमः
३९८ ॐ नेयाय नमः
३९९ ,, नयाय नमः
४०० ,, अनयाय नमः
४०१ ,, वीराय नमः
४०२ ,, शक्तिमतां श्रेष्ठाय नमः
४०३ ,, धर्माय नमः
४०४ ,, धर्मविदुत्तमाय नमः
४०५ ,, वैकुण्ठाय नमः
४०६ ,, पुरुषाय नमः
४०७ ,, प्राणाय नमः
४०८ ,, प्राणदाय नमः
४०९ ,, प्रणवाय नमः
४१० ,, पृथवे नमः
४११ ,, हिरण्यगर्भाय नमः
४१२ ,, शत्रुघ्नाय नमः
४१३ ,, व्याप्ताय नमः
४१४ ,, वायवे नमः
४१५ ,, अधोक्षजाय नमः
४१६ ,, ऋतवे नमः
४१७ ,, सुदर्शनाय नमः
४१८ ,, कालाय नमः
४१९ ,, परमेष्ठिने नमः
४२० ,, परिग्रहाय नमः
४२१ ,, उग्राय नमः
४२२ ,, सम्वत्सराय नमः
४२३ ,, दक्षाय नमः
४२४ ,, विश्रामाय नमः
४२५ ,, विश्वदक्षिणाय नमः
४२६ ,, विस्ताराय नमः

४२७ ॐ स्थावरस्थाणवे नमः
४२८ ,, प्रमाणाय नमः
४२९ ,, बीजायाव्ययाय नमः
४३० ,, अर्थाय नमः
४३१ ,, अनर्थाय नमः
४३२ ,, महाकोशाय नमः
४३३ ,, महाभोगाय नमः
४३४ ,, महाधनाय नमः
४३५ ,, अनिर्विण्णाय नमः
४३६ ,, स्थविष्ठाय नमः
४३७ ,, भुवे नमः
४३८ ,, धर्मयूपाय नमः
४३९ ,, महामखाय नमः
४४० ,, नक्षत्रनेमये नमः
४४१ ,, नक्षत्रिणे नमः
४४२ ,, क्षमाय नमः
४४३ ,, क्षामाय नमः
४४४ ,, समीहनाय नमः
४४५ ,, यज्ञाय नमः
४४६ ,, इज्याय नमः
४४७ ,, महेज्याय नमः
४४८ ,, क्रतवे नमः
४४९ ,, सत्राय नमः
४५० ,, सताङ्गतये नमः
४५१ ,, सर्वदर्शिने नमः
४५२ ,, विमुक्तात्मने नमः
४५३ ,, सर्वज्ञाय नमः
४५४ ,, ज्ञानायोत्तमाय नमः
४५५ ,, सुव्रताय नमः

४५६ ॐ सुमुखाय नमः
४५७ ,, सूक्ष्माय नमः
४५८ ,, सुघोषाय नमः
४५९ ,, सुखदाय नमः
४६० ,, सुहृदे नमः
४६१ ,, मनोहराय नमः
४६२ ,, जितक्रोधाय नमः
४६३ ,, वीरबाहवे नमः
४६४ ,, विदारणाय नमः
४६५ ,, स्वापनाय नमः
४६६ ,, स्ववशाय नमः
४६७ ,, व्यापिने नमः
४६८ ,, नैकात्मने नमः
४६९ ,, नैककर्मकृते नमः
४७० ,, वत्सराय नमः
४७१ ,, वत्सलाय नमः
४७२ ,, वत्सिने नमः
४७३ ,, रत्नगर्भाय नमः
४७४ ,, धनेश्वराय नमः
४७५ ,, धर्मगुपे नमः
४७६ ,, धर्मकृते नमः
४७७ ,, धर्मिणे नमः
४७८ ,, सते नमः
४७९ ,, असते नमः
४८० ,, क्षराय नमः
४८१ ,, अक्षराय नमः
४८२ ,, अविज्ञात्रे नमः
४८३ ,, सहस्रांशवे नमः
४८४ ,, विधात्रे नमः

४८५ ॐ कृतलक्षणाय नमः
४८६ ,, गभस्तिनेमये नमः
४८७ ,, सत्वस्थाय नमः
४८८ ,, सिंहाय नमः
४८९ ,, भूतमहेश्वराय नमः
४९० ,, आदिदेवाय नमः
४९१ ,, महादेवाय नमः
४९२ ,, देवेशाय नमः
४९३ ,, देवभृद्गुरवे नमः
४९४ ,, उत्तराय नमः
४९५ ,, गोपतये नमः
४९६ ,, गोप्त्रे नमः
४९७ ,, ज्ञानगम्याय नमः
४९८ ,, पुरातनाय नमः
४९९ ,, शरीरभूतभृते नमः
५०० ,, भोक्त्रे नमः
५०१ ,, कपीन्द्राय नमः
५०२ ,, भूरिदक्षिणाय नमः
५०३ ,, सोमपाय नमः
५०४ ,, अमृतपाय नमः
५०५ ,, सोमाय नमः
५०६ ,, पुरुजिते नमः
५०७ ,, पुरुसत्तमाय नमः
५०८ ,, विनयाय नमः
५०९ ,, जयाय नमः
५१० ,, सत्यसन्धाय नमः
५११ ,, दाशार्हाय नमः
५१२ ,, सात्वताम्पतये नमः
५१३ ,, जीवाय नमः
५१४ ॐ विनयिता-साक्षिणे नमः
५१५ ,, मुकुन्दाय नमः
५१६ ,, अमितविक्रमाय नमः
५१७ ,, अम्भोनिधये नमः
५१८ ,, अनन्तात्मने नमः
५१९ ,, महोदधिशयाय नमः
५२० ,, अन्तकाय नमः
५२१ ,, अजाय नमः
५२२ ,, महार्हाय नमः
५२३ ,, स्वाभाव्याय नमः
५२४ ,, जितामित्राय नमः
५२५ ,, प्रमोदनाय नमः
५२६ ,, आनन्दाय नमः
५२७ ,, नन्दनाय नमः
५२८ ,, नन्दाय नमः
५२९ ,, सत्यधर्मणे नमः
५३० ,, त्रिविक्रमाय नमः
५३१ ,, महर्षये कपिलाचार्याय नमः
५३२ ,, कृतज्ञाय नमः
५३३ ,, मेदिनीपतये नमः
५३४ ,, त्रिपदाय नमः
५३५ ,, त्रिदशाध्यक्षाय नमः
५३६ ,, महाशृङ्गाय नमः
५३७ ,, कृतान्तकृते नमः
५३८ ,, महावराहाय नमः
५३९ ,, गोविन्दाय नमः
५४० ,, सुषेणाय नमः
५४१ ,, कनकाङ्गदिने नमः
५४२ ,, गुह्याय नमः

५४३ ॐ गभीराय नमः
५४४ ,, गहनाय नमः
५४५ ,, गुप्ताय नमः
५४६ ,, चक्रगदाधराय नमः
५४७ ,, वेधसे नमः
५४८ ,, स्वाङ्गाय नमः
५४९ ,, अजिताय नमः
५५० ,, कृष्णाय नमः
५५१ ,, दृढाय नमः
५५२ ,, सङ्कर्षणायाच्युताय नमः
५५३ ,, वरुणाय नमः
५५४ ,, वारुणाय नमः
५५५ ,, वृक्षाय नमः
५५६ ,, पुष्कराक्षाय नमः
५५७ ,, महामनसे नमः
५५८ ,, भगवते नमः
५५९ ,, भगघ्ने नमः
५६० ,, आनन्दिने नमः
५६१ ,, वनमालिने नमः
५६२ ,, हलायुधाय नमः
५६३ ,, आदित्याय नमः
५६४ ,, ज्योतिरादित्याय नमः
५६५ ,, सहिष्णवे नमः
५६६ ,, गतिसत्तमाय नमः
५६७ ,, सुधन्वने नमः
५६८ ,, खण्डपरशवे नमः
५६९ ,, दारुणाय नमः
५७० ,, द्रविणप्रदाय नमः
५७१ ,, दिविस्पृशे नमः

५७२ ॐ सर्वदृग्व्यासाय नमः
५७३ ,, वाचस्पतयेऽयोनिजाय नमः
५७४ ,, त्रिसाम्ने नमः
५७५ ,, सामगाय नमः
५७६ ,, साम्ने नमः
५७७ ,, निर्वाणाय नमः
५७८ ,, भेषजाय नमः
५७९ ,, भिषजे नमः
५८० ,, संन्यासकृते नमः
५८१ ,, शमाय नमः
५८२ ,, शान्ताय नमः
५८३ ,, निष्ठायै नमः
५८४ ,, शान्तये नमः
५८५ ,, परायणाय नमः
५८६ ,, शुभाङ्गाय नमः
५८७ ,, शान्तिदाय नमः
५८८ ,, स्रष्ट्रे नमः
५८९ ,, कुमुदाय नमः
५९० ,, कुवलेशयाय नमः
५९१ ,, गोहिताय नमः
५९२ ,, गोपतये नमः
५९३ ,, गोप्त्रे नमः
५९४ ,, वृषभाक्षाय नमः
५९५ ,, वृषप्रियाय नमः
५९६ ,, अनिवर्तिने नमः
५९७ ,, निवृत्तात्मने नमः
५९८ ,, संक्षेप्त्रे नमः
५९९ ,, क्षेमकृते नमः
६०० ,, शिवाय नमः

६०१ ॐ श्रीवत्सवक्षसे नमः
६०२ ,, श्रीवासाय नमः
६०३ ,, श्रीपतये नमः
६०४ ,, श्रीमतां वराय नमः
६०५ ,, श्रीदाय नमः
६०६ ,, श्रीशाय नमः
६०७ ,, श्रीनिवासाय नमः
६०८ ,, श्रीनिधये नमः
६०९ ,, श्रीविभावनाय नमः
६१० ,, श्रीधराय नमः
६११ ,, श्रीकराय नमः
६१२ ,, श्रेयसे नमः
६१३ ,, श्रीमते नमः
६१४ ,, लोकत्रयाश्रयाय नमः
६१५ ,, स्वक्षाय नमः
६१६ ,, स्वङ्गाय नमः
६१७ ,, शतानन्दाय नमः
६१८ ,, नन्दये नमः
६१९ ,, ज्योतिर्गणेश्वराय नमः
६२० ,, विजितात्मने नमः
६२१ ,, विधेयात्मने नमः
६२२ ,, सत्कीर्तये नमः
६२३ ,, छिन्नसंशयाय नमः
६२४ ,, उदीर्णाय नमः
६२५ ,, सर्वतश्चक्षुषे नमः
६२६ ,, अनीशाय नमः
६२७ ,, शाश्वतस्थिराय नमः
६२८ ,, भूशयाय नमः
६२९ ,, भूषणाय नमः

६३० ॐ भूतये नमः
६३१ ,, विशोकाय नमः
६३२ ,, शोकनाशनाय नमः
६३३ ,, अर्चिष्मते नमः
६३४ ,, अर्चिताय नमः
६३५ ,, कुम्भाय नमः
६३६ ,, विशुद्धात्मने नमः
६३७ ,, विशोधनाय नमः
६३८ ,, अनिरुद्धाय नमः
६३९ ,, अप्रतिरथाय नमः
६४० ,, प्रद्युम्नाय नमः
६४१ ,, अमितविक्रमाय नमः
६४२ ,, कालनेमिनिघ्ने नमः
६४३ ,, वीराय नमः
६४४ ,, शौरये नमः
६४५ ,, शूरजनेश्वराय नमः
६४६ ,, त्रिलोकात्मने नमः
६४७ ,, त्रिलोकेशाय नमः
६४८ ,, केशवाय नमः
६४९ ,, केशिघ्ने नमः
६५० ,, हरये नमः
६५१ ,, कामदेवाय नमः
६५२ ,, कामपालाय नमः
६५३ ,, कामिने नमः
६५४ ,, कान्ताय नमः
६५५ ,, कृतागमाय नमः
६५६ ,, अनिर्देश्यवपुषे नमः
६५७ ,, विष्णवे नमः
६५८ ,, वीराय नमः

६५९ ॐ अनन्ताय नमः
६६० ,, धनञ्जयाय नमः
६६१ ,, ब्रह्मण्याय नमः
६६२ ,, ब्रह्मकृते नमः
६६३ ,, ब्रह्मणे नमः
६६४ ,, ब्रह्मणे नमः
६६५ ,, ब्रह्मविवर्द्धनाय नमः
६६६ ,, ब्रह्मविदे नमः
६६७ ,, ब्राह्मणाय नमः
६६८ ,, ब्रह्मिणे नमः
६६९ ,, ब्रह्मज्ञाय नमः
६७० ,, ब्राह्मणप्रियाय नमः
६७१ ,, महाक्रमाय नमः
६७२ ,, महाकर्मणे नमः
६७३ ,, महातेजसे नमः
६७४ ,, महोरगाय नमः
६७५ ,, महाक्रतवे नमः
६७६ ,, महायज्वने नमः
६७७ ,, महायज्ञाय नमः
६७८ ,, महाहविषे नमः
६७९ ,, स्तव्याय नमः
६८० ,, स्तवप्रियाय नमः
६८१ ,, स्तोत्राय नमः
६८२ ,, स्तुतये नमः
६८३ ,, स्तोत्रे नमः
६८४ ,, रणप्रियाय नमः
६८५ ,, पूर्णाय नमः
६८६ ,, पूरयित्रे नमः
६८७ ,, पुण्याय नमः
६८८ ॐ पुण्यकीर्तये नमः
६८९ ,, अनामयाय नमः
६९० ,, मनोजवाय नमः
६९१ ,, तीर्थकराय नमः
६९२ ,, वसुरेतसे नमः
६९३ ,, वसुप्रदाय नमः
६९४ ,, वसुप्रदाय नमः
६९५ ,, वासुदेवाय नमः
६९६ ,, वसवे नमः
६९७ ,, वसुमनसे नमः
६९८ ,, हविषे नमः
६९९ ,, सद्गतये नमः
७०० ,, सत्कृतये नमः
७०१ ,, सत्तायै नमः
७०२ ,, सद्भूतये नमः
७०३ ,, सत्परायणाय नमः
७०४ ,, शूरसेनाय नमः
७०५ ,, यदुश्रेष्ठाय नमः
७०६ ,, सन्निवासाय नमः
७०७ ,, सुयामुनाय नमः
७०८ ,, भूतावासाय नमः
७०९ ,, वासुदेवाय नमः
७१० ,, सर्वासुनिलयाय नमः
७११ ,, अनलाय नमः
७१२ ,, दर्पघ्ने नमः
७१३ ,, दर्पदाय नमः
७१४ ,, दृप्ताय नमः
७१५ ,, दुर्धराय नमः
७१६ ,, अपराजिताय नमः

७१७ ॐ विश्वमूर्तये नमः
७१८ ,, महामूर्तये नमः
७१९ ,, दीप्तमूर्तये नमः
७२० ,, अमूर्तिमते नमः
७२१ ,, अनेकमूर्तये नमः
७२२ ,, अव्यक्ताय नमः
७२३ ,, शतमूर्तये नमः
७२४ ,, शताननाय नमः
७२५ ,, एकाय नमः
७२६ ,, नैकाय नमः
७२७ ,, सवाय नमः
७२८ ,, काय नमः
७२९ ,, कस्मै नमः
७३० ,, यस्मै नमः
७३१ ,, तस्मै नमः
७३२ ,, पदायानुत्तमाय नमः
७३३ ,, लोकबन्धवे नमः
७३४ ,, लोकनाथाय नमः
७३५ ,, माधवाय नमः
७३६ ,, भक्तवत्सलाय नमः
७३७ ,, सुवर्णवर्णाय नमः
७३८ ,, हेमाङ्गाय नमः
७३९ ,, वराङ्गाय नमः
७४० ,, चन्दनाङ्गदिने नमः
७४१ ,, वीरघ्ने नमः
७४२ ,, विषमाय नमः
७४३ ,, शून्याय नमः
७४४ ,, धृताशिषे नमः
७४५ ,, अचलाय नमः

७४६ ॐ चलाय नमः
७४७ ,, अमानिने नमः
७४८ ,, मानदाय नमः
७४९ ,, मान्याय नमः
७५० ,, लोकस्वामिने नमः
७५१ ,, त्रिलोकधृषे नमः
७५२ ,, सुमेधसे नमः
७५३ ,, मेधजाय नमः
७५४ ,, धन्याय नमः
७५५ ,, सत्यमेधसे नमः
७५६ ,, धराधराय नमः
७५७ ,, तेजोवृषाय नमः
७५८ ,, द्युतिधराय नमः
७५९ ,, सर्वशस्त्रभृतांवराय नमः
७६० ,, प्रग्रहाय नमः
७६१ ,, निग्रहाय नमः
७६२ ,, व्यग्राय नमः
७६३ ,, नैकश्रृङ्गाय नमः
७६४ ,, गदाग्रजाय नमः
७६५ ,, चतुर्मूर्त्तये नमः
७६६ ,, चतुर्बाहवे नमः
७६७ ,, चतुर्व्यूहाय नमः
७६८ ,, चतुर्गतये नमः
७६९ ,, चतुरात्मने नमः
७७० ,, चतुर्भावाय नमः
७७१ ,, चतुर्वेदविदे नमः
७७२ ,, एकपदे नमः
७७३ ,, समावर्ताय नमः
७७४ ,, अनिवृत्तात्मने नमः

७७५ ॐ दुर्जयाय नमः
७७६ ,, दुरतिक्रमाय नमः
७७७ ,, दुर्लभाय नमः
७७८ ,, दुर्गमाय नमः
७७९ ,, दुर्गाय नमः
७८० ,, दुरावासाय नमः
७८१ ,, दुरारिघ्ने नमः
७८२ ,, शुभाङ्गाय नमः
७८३ ,, लोकसारङ्गाय नमः
७८४ ,, सुतन्तवे नमः
७८५ ,, तन्तुवर्धनाय नमः
७८६ ,, इन्द्रकर्मणे नमः
७८७ ,, महाकर्मणे नमः
७८८ ,, कृतकर्मणे नमः
७८९ ,, कृतागमाय नमः
७९० ,, उद्भवाय नमः
७९१ ,, सुन्दराय नमः
७९२ ,, सुन्दाय नमः
७९३ ,, रत्ननाभाय नमः
७९४ ,, सुलोचनाय नमः
७९५ ,, अर्काय नमः
७९६ ,, वाजसनाय नमः
७९७ ,, शृङ्गिणे नमः
७९८ ,, जयन्ताय नमः
७९९ ,, सर्वविज्जयिने नमः
८०० ,, सुवर्णबिन्दवे नमः
८०१ ,, अक्षोभ्याय नमः
८०२ ,, सर्ववागीश्वरेश्वराय नमः
८०३ ,, महाह्रदाय नमः
८०४ ॐ महागर्ताय नमः
८०५ ,, महाभूताय नमः
८०६ ,, महानिधये नमः
८०७ ,, कुमुदाय नमः
८०८ ,, कुन्दराय नमः
८०९ ,, कुन्दाय नमः
८१० ,, पर्जन्याय नमः
८११ ,, पावनाय नमः
८१२ ,, अनिलाय नमः
८१३ ,, अमृतांशाय नमः
८१४ ,, अमृतवपुषे नमः
८१५ ,, सर्वज्ञाय नमः
८१६ ,, सर्वतोमुखाय नमः
८१७ ,, सुलभाय नमः
८१८ ,, सुव्रताय नमः
८१९ ,, सिद्धाय नमः
८२० ,, शत्रुजिते नमः
८२१ ,, शत्रुतापनाय नमः
८२२ ,, न्यग्रोधाय नमः
८२३ ,, उदुम्बराय नमः
८२४ ,, अश्वत्थाय नमः
८२५ ,, चाणूरान्ध्रनिषूदनाय नमः
८२६ ,, सहस्रार्चिषे नमः
८२७ ,, सप्तजिह्वाय नमः
८२८ ,, सप्तैधसे नमः
८२९ ,, सप्तवाहनाय नमः
८३० ,, अमूर्तये नमः
८३१ ,, अनघाय नमः
८३२ ,, अचिन्त्याय नमः

८३३ ॐ भयकृते नमः
८३४ ,, भयनाशनाय नमः
८३५ ,, अणवे नमः
८३६ ,, बृहते नमः
८३७ ,, कृशाय नमः
८३८ ,, स्थूलाय नमः
८३९ ,, गुणभृते नमः
८४० ,, निर्गुणाय नमः
८४१ ,, महते नमः
८४२ ,, अधृताय नमः
८४३ ,, स्वधृताय नमः
८४४ ,, स्वास्थाय नमः
८४५ ,, प्राग्वंशाय नमः
८४६ ,, वंशवर्द्धनाय नमः
८४७ ,, भारभृते नमः
८४८ ,, कथिताय नमः
८४९ ,, योगिने नमः
८५० ,, योगीशाय नमः
८५१ ,, सर्वकामदाय नमः
८५२ ,, आश्रमाय नमः
८५३ ,, श्रमणाय नमः
८५४ ,, क्षामाय नमः
८५५ ,, सुपर्णाय नमः
८५६ ,, वायुवाहनाय नमः
८५७ ,, धनुर्धराय नमः
८५८ ,, धनुर्वेदाय नमः
८५९ ,, दण्डाय नमः
८६० ,, दमयित्रे नमः
८६१ ,, दमाय नमः
८६२ ॐ अपराजिताय नमः
८६३ ,, सर्वसहाय नमः
८६४ ,, नियन्त्रे नमः
८६५ ,, नियमाय नमः
८६६ ,, यमाय नमः
८६७ ,, सत्त्ववते नमः
८६८ ,, सात्त्विकाय नमः
८६९ ,, सत्याय नमः
८७० ,, सत्यधर्मपरायणाय नमः
८७१ ,, अभिप्रायाय नमः
८७२ ,, प्रियार्हाय नमः
८७३ ,, अर्हाय नमः
८७४ ,, प्रियकृते नमः
८७५ ,, प्रीतिवर्धनाय नमः
८७६ ,, विहायसगतये नमः
८७७ ,, ज्योतिषे नमः
८७८ ,, सुरुचये नमः
८७९ ,, हुतभुजे नमः
८८० ,, विभवे नमः
८८१ ,, रवये नमः
८८२ ,, विरोचनाय नमः
८८३ ,, सूर्याय नमः
८८४ ,, सवित्रे नमः
८८५ ,, रविलोचनाय नमः
८८६ ,, अनन्ताय नमः
८८७ ,, हुतभुजे नमः
८८८ ,, भोक्त्रे नमः
८८९ ,, सुखदाय नमः
८९० ,, नैकजाय नमः

८९१ ॐ अग्रजाय नमः	९२० ॐ विद्वत्तमाय नमः
८९२ ,, अनिर्विण्णाय नमः	९२१ ,, वीतभयाय नमः
८९३ ,, सदार्मर्षिणे नमः	९२२ ,, पुण्यश्रवणकीर्तनाय नमः
८९४ ,, लोकाधिष्ठानाय नमः	९२३ ,, उत्तारणाय नमः
८९५ ,, अद्भुताय नमः	९२४ ,, दुष्कृतिघ्ने नमः
८९६ ,, सनात् नमः	९२५ ,, पुण्याय नमः
८९७ ,, सनातनतमाय नमः	९२६ ,, दुःस्वप्ननाशनाय नमः
८९८ ,, कपिलाय नमः	९२७ ,, वीरघ्ने नमः
८९९ ,, कपये नमः	९२८ ,, रक्षणाय नमः
९०० ,, अप्ययाय नमः	९२९ ,, सन्ताय नमः
९०१ ,, स्वस्तिदाय नमः	९३० ,, जीवनाय नमः
९०२ ,, स्वस्तिकृते नमः	९३१ ,, पर्यवस्थिताय नमः
९०३ ,, स्वस्तये नमः	९३२ ,, अनन्तरूपाय नमः
९०४ ,, स्वस्तिभुजे नमः	९३३ ,, अनन्तश्रिये नमः
९०५ ,, स्वस्तिदक्षिणाय नमः	९३४ ,, जितमन्यवे नमः
९०६ ,, अरौद्राय नमः	९३५ ,, भयापहाय नमः
९०७ ,, कुण्डलिने नमः	९३६ ,, चतुरस्राय नमः
९०८ ,, चक्रिणे नमः	९३७ ,, गभीरात्मने नमः
९०९ ,, विक्रमिणे नमः	९३८ ,, विदिशाय नमः
९१० ,, ऊर्जितशासनाय नमः	९३९ ,, व्यादिशाय नमः
९११ ,, शब्दातिगाय नमः	९४० ,, दिशाय नमः
९१२ ,, शब्दसहाय नमः	९४१ ,, अनादये नमः
९१३ ,, शिशिराय नमः	९४२ ,, भुवे नमः
९१४ ,, शर्वरीकराय नमः	९४३ ,, भुवो लक्ष्म्यै नमः
९१५ ,, अक्रूराय नमः	९४४ ,, सुवीराय नमः
९१६ ,, पेशलाय नमः	९४५ ,, रुचिराङ्गदाय नमः
९१७ ,, दक्षाय नमः	९४६ ,, जननाय नमः
९१८ ,, दक्षिणाय नमः	९४७ ,, जनजन्मादये नमः
९१९ ,, क्षमिणां वराय नमः	९४८ ,, भीमाय नमः

९४९	ॐ भीमपराक्रमाय	नमः	९७५	ॐ यज्ञवाहनाय	नमः
९५०	,, आधारनिलयाय	नमः	९७६	,, यज्ञभृते	नमः
९५१	,, अधात्रे	नमः	९७७	,, यज्ञकृते	नमः
९५२	,, पुष्पहासाय	नमः	९७८	,, यज्ञिने	नमः
९५३	,, प्रजागराय	नमः	९७९	,, यज्ञभुजे	नमः
९५४	,, ऊर्ध्वगाय	नमः	९८०	,, यज्ञसाधनाय	नमः
९५५	,, सत्पथाचाराय	नमः	९८१	,, यज्ञान्तकृते	नमः
९५६	,, प्राणदाय	नमः	९८२	,, यज्ञगुह्याय	नमः
९५७	,, प्रणवाय	नमः	९८३	,, अन्नाय	नमः
९५८	,, पणाय	नमः	९८४	,, अन्नादाय	नमः
९५९	,, प्रमाणाय	नमः	९८५	,, आत्मयोनये	नमः
९६०	,, प्राणनिलयाय	नमः	९८६	,, स्वयञ्जाताय	नमः
९६१	,, प्राणभृते	नमः	९८७	,, वैखानाय	नमः
९६२	,, प्राणजीवनाय	नमः	९८८	,, सामगायनाय	नमः
९६३	,, तत्त्वाय	नमः	९८९	,, देवकीनन्दनाय	नमः
९६४	,, तत्त्वविदे	नमः	९९०	,, स्रष्ट्रे	नमः
९६५	,, एकात्मने	नमः	९९१	,, क्षितीशाय	नमः
९६६	,, जन्ममृत्युजरातिगाय	नमः	९९२	,, पापनाशनाय	नमः
९६७	,, भूर्भुवः स्वस्तरवे	नमः	९९३	,, शङ्खभृते	नमः
९६८	,, ताराय	नमः	९९४	,, नन्दकिने	नमः
९६९	,, सवित्रे	नमः	९९५	,, चक्रिणे	नमः
९७०	,, प्रपितामहाय	नमः	९९६	,, शार्ङ्गधन्वने	नमः
९७१	,, यज्ञाय	नमः	९९७	,, गदाधराय	नमः
९७२	,, यज्ञपतये	नमः	९९८	,, रथाङ्गपाणये	नमः
९७३	,, यज्वने	नमः	९९९	,, अक्षोभ्याय	नमः
९७४	,, यज्ञाङ्गाय	नमः	१०००	,, सर्वप्रहरणायुधाय	नमः

इयं नामावलिः समाप्ता ।

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

शिवसहस्रनामावलिः

सङ्कल्पः

आचम्य, प्राणानायम्य, हस्ते जला-ऽक्षत-पुष्प-द्रव्याण्यादाय, अद्येत्या-द्युच्चार्य, शुभपुण्यतिथौ अमुकनाम्नो मम सकुटुम्बस्य सकलपापक्षयनिवृत्तिपूर्वक-दीर्घायुः-पुत्र-पौत्राद्यनवच्छिन्न-सन्ततिवृद्धिस्थिरलक्ष्म्यैहिका-ऽऽमुष्मिक-सकलकामना-सिद्धिद्वारा धर्मा-ऽर्थ-काम-मोक्ष-चतुर्विध-पुरुषार्थफलाप्तये श्रीसदाशिवप्रीत्यर्थं शिवसहस्रनामभिः सदाशिवोपरि सहस्रबिल्व-पत्रसमर्पणं करिष्ये ।

विनियोगः

अस्य श्रीसदाशिवसहस्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य नारायण ऋषिः श्रीसदाशिवो देवता, अनुष्टुप् छन्दः, सदाशिवो बीजम्, गौरी शक्तिः, श्रीसदाशिवप्रीत्यर्थं तद्दिव्यसहस्रनामभिः अमुकद्रव्य समर्पणे विनियोगः ।

ध्यानम्

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम् ।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम् ॥

१ ॐ	स्थिराय	नमः	६ ॐ	वरदाय	नमः
२ ,,	स्थाणवे	नमः	७ ,,	वराय	नमः
३ ,,	प्रभवे	नमः	८ ,,	सर्वात्मने	नमः
४ ,,	भीमाय	नमः	९ ,,	सर्वविख्याताय	नमः
५ ,,	प्रवराय	नमः	१० ,,	सर्वस्मै	नमः

११ ॐ सर्वकराय नमः
१२ ,, भवाय नमः
१३ ,, जटिने नमः
१४ ,, चर्मिणे नमः
१५ ,, शिखण्डिने नमः
१६ ,, सर्वाङ्गाय नमः
१७ ,, सर्वभावनाय नमः
१८ ,, हराय नमः
१९ ,, हरिणाक्षाय नमः
२० ,, सर्वभूतहराय नमः
२१ ,, प्रभवे नमः
२२ ,, प्रवृत्तये नमः
२३ ,, निवृत्तयें नमः
२४ ,, नियताय नमः
२५ ,, शाश्वताय नमः
२६ ,, ध्रुवाय नमः
२७ ,, श्मशानवासिने नमः
२८ ,, भगवते नमः
२९ ,, खेचराय नमः
३० ,, गोचराय नमः
३१ ,, अर्दनाय नमः
३२ ,, अभिवाद्याय नमः
३३ ,, महाकर्मणे नमः
३४ ,, तपस्विने नमः
३५ ,, भूतभावनाय नमः
३६ ,, उन्मत्तवेषप्रचछन्नाय नमः
३७ ,, सर्वलोकप्रजापतये नमः
३८ ,, महारूपाय नमः
३९ ,, महाकायाय नमः
४० ॐ वृषरूपाय नमः
४१ ,, महायशसे नमः
४२ ,, महात्मने नमः
४३ ,, सर्वभूतात्मने नमः
४४ ,, विश्वरूपाय नमः
४५ ,, महाहनवे नमः
४६ ,, लोकपालाय नमः
४७ ,, अन्तर्हितात्मने नमः
४८ ,, प्रसादाय नमः
४९ ,, हयगर्दभये नमः
५० ,, पवित्राय नमः
५१ ,, महते नमः
५२ ,, नियमाय नमः
५३ ,, नियमाश्रिताय नमः
५४ ,, सर्वकर्मणे नमः
५५ ,, स्वयम्भूताय नमः
५६ ,, आदये नमः
५७ ,, आदिकराय नमः
५८ ,, निधये नमः
५९ ,, सहस्राक्षाय नमः
६० ,, विशालाक्षाय नमः
६१ ,, सोमाय नमः
६२ ,, नक्षत्रसाधकाय नमः
६३ ,, चन्द्राय नमः
६४ ,, सूर्याय नमः
६५ ,, शनये नमः
६६ ,, केतवे नमः
६७ ,, ग्रहाय नमः
६८ ,, ग्रहपतये नमः

६९ ॐ वराय नमः
७० ,, अत्रये नमः
७१ ,, अत्र्यानमस्कर्त्रे नमः
७२ ,, मृगबाणार्पणाय नमः
७३ ,, अनघाय नमः
७४ ,, महातपसे नमः
७५ ,, घोरतपसे नमः
७६ ,, अदीनाय नमः
७७ ,, दीनसाधकाय नमः
७८ ,, संवत्सराय नमः
७९ ,, मन्त्राय नमः
८० ,, प्रमाणाय नमः
८१ ,, परामन्तपाय नमः
८२ ,, योगिने नमः
८३ ,, योज्याय नमः
८४ ,, महाबीजाय नमः
८५ ,, महारेतसे नमः
८६ ,, महाबलाय नमः
८७ ,, सुवर्णरेतसे नमः
८८ ,, सर्वज्ञाय नमः
८९ ,, सुबीजाय नमः
९० ,, बीजवाहनाय नमः
९१ ,, दशबाहवे नमः
९२ ,, अनिमिषाय नमः
९३ ,, नीलकण्ठाय नमः
९४ ,, उमापतये नमः
९५ ,, विश्वरूपाय नमः
९६ ,, स्वयंश्रेष्ठाय नमः
९७ ,, बलवीराय नमः
९८ ॐ अबलाय नमः
९९ ,, गणाय नमः
१०० ,, गणकर्त्रे नमः
१०१ ,, गणपतये नमः
१०२ ,, दिग्वाससे नमः
१०३ ,, कामाय नमः
१०४ ,, मन्त्रविदे नमः
१०५ ,, परमाय नमः
१०६ ,, मन्त्राय नमः
१०७ ,, सर्वभावकराय नमः
१०८ ,, हराय नमः
१०९ ,, कमण्डलुधराय नमः
११० ,, धन्विने नमः
१११ ,, बाणहस्ताय नमः
११२ ,, कपालवते नमः
११३ ,, अशनिने नमः
११४ ,, शतघ्निने नमः
११५ ,, खड्गिने नमः
११६ ,, पट्टिशिने नमः
११७ ,, आयुधिने नमः
११८ ,, महते नमः
११९ ,, स्रुवहस्ताय नमः
१२० ,, सुरूपाय नमः
१२१ ,, तेजसे नमः
१२२ ,, तेजस्करायनिधये नमः
१२३ ,, उष्णिषिणे नमः
१२४ ,, सुवक्त्राय नमः
१२५ ,, उदग्राय नमः
१२६ ,, विनताय नमः

१२७ ॐ दीर्घाय नमः
१२८ ,, हरिकेशाय नमः
१२९ ,, सुतीर्थाय नमः
१३० ,, कृष्णाय नमः
१३१ ,, शृगालरूपाय नमः
१३२ ,, सिद्धार्थाय नमः
१३३ ,, मुण्डाय नमः
१३४ ,, सर्वशुम्भंकराय नमः
१३५ ,, अजाय नमः
१३६ ,, बहुरूपाय नमः
१३७ ,, गन्धधारिणे नमः
१३८ ,, कपर्दिने नमः
१३९ ,, ऊर्ध्वरेतसे नमः
१४० ,, ऊर्ध्वलिङ्गाय नमः
१४१ ,, ऊर्ध्वशायिने नमः
१४२ ,, नभस्थलाय नमः
१४३ ,, त्रिजटाय नमः
१४४ ,, चीरवाससे नमः
१४५ ,, रुद्राय नमः
१४६ ,, सेनापतये नमः
१४७ ,, विभवे नमः
१४८ ,, अहश्चराय नमः
१४९ ,, नक्तञ्चराय नमः
१५० ,, तिग्ममन्यवे नमः
१५१ ,, सुवर्चसाय नमः
१५२ ,, गजघ्ने नमः
१५३ ,, दैत्यघ्ने नमः
१५४ ,, कालाय नमः
१५५ ,, लोकधात्रे नमः

१५६ ॐ गुणाकराय नमः
१५७ ,, सिंहशार्दूलरूपाय नमः
१५८ ,, आर्द्रचर्माम्बरावृताय नमः
१५९ ,, कालयोगिने नमः
१६० ,, महानादाय नमः
१६१ ,, सर्वकामाय नमः
१६२ ,, चतुष्पथाय नमः
१६३ ,, निशाचराय नमः
१६४ ,, प्रेतचारिणे नमः
१६५ ,, भूतचारिणे नमः
१६६ ,, महेश्वराय नमः
१६७ ,, बहुभूताय नमः
१६८ ,, बहुधराय नमः
१६९ ,, स्वर्भानवे नमः
१७० ,, अमिताय नमः
१७१ ,, गतये नमः
१७२ ,, नृत्यप्रियाय नमः
१७३ ,, नित्यनर्ताय नमः
१७४ ,, नर्तकाय नमः
१७५ ,, सर्वलालसाय नमः
१७६ ,, घोराय नमः
१७७ ,, महातपसे नमः
१७८ ,, पाशाय नमः
१७९ ,, नित्याय नमः
१८० ,, गिरिरुहाय नमः
१८१ ,, नभसे नमः
१८२ ,, सहस्रहस्ताय नमः
१८३ ,, विजयाय नमः
१८४ ,, व्यवसायाय नमः

१८५ ॐ अतीन्द्रियाय नमः
१८६ ,, अधर्षणाय नमः
१८७ ,, धर्षणात्मने नमः
१८८ ,, यज्ञघ्ने नमः
१८९ ,, कामनाशकाय नमः
१९० ,, दक्षयागापहारिणे नमः
१९१ ,, सुसहाय नमः
१९२ ,, मध्यमाय नमः
१९३ ,, तेजोपहारिणे नमः
१९४ ,, बलघ्ने नमः
१९५ ,, मुदिताय नमः
१९६ ,, अर्थाय नमः
१९७ ,, अजिताय नमः
१९८ ,, अवराय नमः
१९९ ,, गम्भीराय नमः
२०० ,, गभीराय नमः
२०१ ,, गम्भीरबलवाहनाय नमः
२०२ ,, न्यग्रोधरूपाय नमः
२०३ ,, न्यग्रोधाय नमः
२०४ ,, वृक्षकर्णस्थितये नमः
२०५ ,, विभवे नमः
२०६ ,, सुतीक्ष्णदशनाय नमः
२०७ ,, महाकायाय नमः
२०८ ,, महाननाय नमः
२०९ ,, विष्वक्सेनाय नमः
२१० ,, हरये नमः
२११ ,, यज्ञाय नमः
२१२ ,, संयुगापीडवाहनाय नमः
२१३ ,, तीक्ष्णतापाय नमः
२१४ ॐ हर्यश्वाय नमः
२१५ ,, सहाय नमः
२१६ ,, कर्मकालविदे नमः
२१७ ,, विष्णुप्रसादिताय नमः
२१८ ,, यज्ञाय नमः
२१९ ,, समुद्राय नमः
२२० ,, वडवामुखाय नमः
२२१ ,, हुताशनसहाय नमः
२२२ ,, प्रशान्तात्मने नमः
२२३ ,, हुताशनाय नमः
२२४ ,, उग्रतेजसे नमः
२२५ ,, महातेजसे नमः
२२६ ,, जन्याय नमः
२२७ ,, विजयकालविदे नमः
२२८ ,, ज्योतिषामयनाय नमः
२२९ ,, सिद्धये नमः
२३० ,, सर्वविग्रहाय नमः
२३१ ,, शिखिने नमः
२३२ ,, सुण्डिने नमः
२३३ ,, जटिने नमः
२३४ ,, ज्वालिने नमः
२३५ ,, मूर्तिजाय नमः
२३६ ,, मूर्धगाय नमः
२३७ ,, बलिने नमः
२३८ ,, वेणविने नमः
२३९ ,, पणविने नमः
२४० ,, तालिने नमः
२४१ ,, खलिने नमः
२४२ ,, कालकटङ्कटाय नमः

२४३ ॐ नक्षत्रविग्रहमतये नमः
२४४ ,, गुणबुद्धये नमः
२४५ ,, लयाय नमः
२४६ ,, अगमाय नमः
२४७ ,, प्रजापतये नमः
२४८ ,, विश्वबाहवे नमः
२४९ ,, विभागाय नमः
२५० ,, सर्वगाय नमः
२५१ ,, अमुखाय नमः
२५२ ,, विमोचनाय नमः
२५३ ,, सुसरणाय नमः
२५४ ,, हिरण्यकवचोद्भवाय नमः
२५५ ,, मेढ्रजाय नमः
२५६ ,, बलचारिणे नमः
२५७ ,, महीचारिणे नमः
२५८ ,, स्रुताय नमः
२५९ ,, सर्वतूर्यनिनादिने नमः
२६० ,, सर्वातोद्यपरिग्रहाय नमः
२६१ ,, व्यालरूपाय नमः
२६२ ,, गुहावासिने नमः
२६३ ,, गुहाय नमः
२६४ ,, मालिने नमः
२६५ ,, तरङ्गविदे नमः
२६६ ,, त्रिदशाननाय नमः
२६७ ,, त्रिकालधृगे नमः
२६८ ,, कर्मसर्वबन्धविमोचनाय नमः
२६९ ,, असुरेन्द्राणां बन्धनाय नमः
२७० ,, युधिशत्रुविनाशनाय नमः
२७१ ,, सांख्यप्रसादाय नमः
२७२ ॐ दुर्वाससे नमः
२७३ ,, सर्वसाधुनिषेविताय नमः
२७४ ,, प्रस्कन्दनाय नमः
२७५ ,, विभागज्ञाय नमः
२७६ ,, अतुल्याय नमः
२७७ ,, यज्ञभागविदे नमः
२७८ ,, सर्वचारिणे नमः
२७९ ,, सर्ववासाय नमः
२८० ,, दुर्वाससे नमः
२८१ ,, वासवाय नमः
२८२ ,, अमराय नमः
२८३ ,, हेमाय नमः
२८४ ,, हेमकराय नमः
२८५ ,, अयज्ञसर्वधारिणे नमः
२८६ ,, धरोत्तमाय नमः
२८७ ,, लोहिताक्षाय नमः
२८८ ,, महाक्षाय नमः
२८९ ,, विजयाक्षाय नमः
२९० ,, विशारदाय नमः
२९१ ,, सर्वकामदाय नमः
२९२ ,, सर्वकालप्रसादाय नमः
२९३ ,, सुबलाय नमः
२९४ ,, बलरूपधृगे नमः
२९५ ,, संग्रहाय नमः
२९६ ,, निग्रहाय नमः
२९७ ,, कर्त्रे नमः
२९८ ,, सर्पचीरनिवासाय नमः
२९९ ,, मुख्याय नमः
३०० ,, अमुख्याय नमः

३०१ ॐ देहाय नमः
३०२ ,, काहलये नमः
३०३ ,, सर्वकामवराय नमः
३०४ ,, सर्वदाय नमः
३०५ ,, सर्वतोमुखाय नमः
३०६ ,, आकाशनिर्विरूपाय नमः
३०७ ,, निपातिने नमः
३०८ ,, अवशाय नमः
३०९ ,, खगाय नमः
३१० ,, रौद्ररूपाय नमः
३११ ,, अंशवे नमः
३१२ ,, आदित्याय नमः
३१३ ,, बहुरश्मये नमः
३१४ ,, सुवर्चसिने नमः
३१५ ,, वसुवेगाय नमः
३१६ ,, महावेगाय नमः
३१७ ,, मनोवेगाय नमः
३१८ ,, निशाचराय नमः
३१९ ,, सर्ववासिने नमः
३२० ,, श्रियावासिने नमः
३२१ ,, उपदेशकराय नमः
३२२ ,, अकराय नमः
३२३ ,, मुनये नमः
३२४ ,, आत्मानरालोकाय नमः
३२५ ,, संभग्नाय नमः
३२६ ,, सहस्रदाय नमः
३२७ ,, पक्षिणे नमः
३२८ ,, पक्षरूपाय नमः
३२९ ,, अतिदीप्ताय नमः

३३० ॐ विशाम्पतये नमः
३३१ ,, उन्मादाय नमः
३३२ ,, मदनाय नमः
३३३ ,, कामाय नमः
३३४ ,, अश्वत्थाय नमः
३३५ ,, अर्थकराय नमः
३३६ ,, यशसे नमः
३३७ ,, वामदेवाय नमः
३३८ ,, वामाय नमः
३३९ ,, प्राचे नमः
३४० ,, दक्षिणाय नमः
३४१ ,, वामनाय नमः
३४२ ,, सिद्धयोगिने नमः
३४३ ,, महर्षये नमः
३४४ ,, सिद्धार्थाय नमः
३४५ ,, सिद्धसाधकाय नमः
३४६ ,, भिक्षवे नमः
३४७ ,, भिक्षुरूपाय नमः
३४८ ,, विपणाय नमः
३४९ ,, मृदवे नमः
३५० ,, अव्ययाय नमः
३५१ ,, महासेनाय नमः
३५२ ,, विशाखाय नमः
३५३ ,, षष्टिभागाय नमः
३५४ ,, गवाम्पतये नमः
३५५ ,, वज्रहस्ताय नमः
३५६ ,, विष्कम्भिने नमः
३५७ ,, चमूस्तम्भनाय नमः
३५८ ,, वृत्तावृत्तकराय नमः

३५९ ॐ तालाय नमः
३६० ,, मधवे नमः
३६१ ,, मधुकलोचनाय नमः
३६२ ,, वाचस्पत्याय नमः
३६३ ,, वाजसनाय नमः
३६४ ,, आश्रमपूजिताय नमः
३६५ ,, ब्रह्मचारिणे नमः
३६६ ,, लोकचारिणे नमः
३६७ ,, सर्वचारिणे नमः
३६८ ,, विचारविदे नमः
३६९ ,, ईशानाय नमः
३७० ,, ईश्वराय नमः
३७१ ,, कालाय नमः
३७२ ,, निशाचारिणे नमः
३७३ ,, पिनाकधृसे नमः
३७४ ,, निमित्तस्थाय नमः
३७५ ,, निमित्ताय नमः
३७६ ,, नन्दये नमः
३७७ ,, नन्दिकराय नमः
३७८ ,, हरये नमः
३७९ ,, नन्दीश्वराय नमः
३८० ,, नन्दिने नमः
३८१ ,, नन्दनाय नमः
३८२ ,, नन्दिवर्धनाय नमः
३८३ ,, भगहारिणे नमः
३८४ ,, निहन्त्रे नमः
३८५ ,, कालाय नमः
३८६ ,, ब्रह्मणे नमः
३८७ ,, पितामहाय नमः
३८८ ॐ चतुर्मुखाय नमः
३८९ ,, महालिङ्गाय नमः
३९० ,, चारुलिङ्गाय नमः
३९१ ,, लिङ्गाध्यक्षाय नमः
३९२ ,, सुराध्यक्षाय नमः
३९३ ,, योगाध्यक्षाय नमः
३९४ ,, युगावहाय नमः
३९५ ,, बीजाध्यक्षाय नमः
३९६ ,, बीजकर्त्रे नमः
३९७ ,, अध्यात्मानुगताय नमः
३९८ ,, बलाय नमः
३९९ ,, इतिहासाय नमः
४०० ,, सङ्कल्पाय नमः
४०१ ,, गौतमाय नमः
४०२ ,, निशाकराय नमः
४०३ ,, दम्भाय नमः
४०४ ,, अदम्भाय नमः
४०५ ,, वैदम्भाय नमः
४०६ ,, वश्याय नमः
४०७ ,, वशकराय नमः
४०८ ,, कलये नमः
४०९ ,, लोककर्त्रे नमः
४१० ,, पशुपतये नमः
४११ ,, महाकर्त्रे नमः
४१२ ,, अनौषधाय नमः
४१३ ,, अक्षराय नमः
४१४ ,, परब्रह्मणे नमः
४१५ ,, बलवते नमः
४१६ ,, शक्राय नमः

४१७ ॐ नीतये नमः

४१८ ,, अनीतये नमः

४१९ ,, शुद्धात्मने नमः

४२० ,, मान्याय नमः

४२१ ,, शुद्धाय नमः

४२२ ,, गतागताय नमः

४२३ ,, बहुप्रसादाय नमः

४२४ ,, सुस्वप्नाय नमः

४२५ ,, दर्पणाय नमः

४२६ ,, अमित्रजिते नमः

४२७ ,, वेदकाराय नमः

४२८ ,, मन्त्रकाराय नमः

४२९ ,, विदुषे नमः

४३० ,, समरमर्दनाय नमः

४३१ ,, महामेघनिवासिने नमः

४३२ ,, महाघोराय नमः

४३३ ,, वशिने नमः

४३४ ,, कराय नमः

४३५ ,, अग्निज्वालाय नमः

४३६ ,, महाज्वालाय नमः

४३७ ,, अतिधूम्राय नमः

४३८ ,, हुताय नमः

४३९ ,, हविषे नमः

४४० ,, वृषणाय नमः

४४१ ,, शङ्कराय नमः

४४२ ,, वर्चस्विने नमः

४४३ ,, धूमकेतनाय नमः

४४४ ,, नीलाय नमः

४४५ ,, अङ्गलुब्धाय नमः

४४६ ॐ शोभनाय नमः

४४७ ,, निरवग्रहाय नमः

४४८ ,, स्वस्तिदाय नमः

४४९ ,, स्वस्तिभावनाय नमः

४५० ,, भागिने नमः

४५१ ,, भागकराय नमः

४५२ ,, लघवे नमः

४५३ ,, उत्सङ्गाय नमः

४५४ ,, महाङ्गाय नमः

४५५ ,, महागर्भपरायणाय नमः

४५६ ,, कृणवर्णाय नमः

४५७ ,, सुवर्णाय नमः

४५८ ,, सर्वदेहिनामिन्द्रियाय नमः

४५९ ,, महापादाय नमः

४६० ,, महाहस्ताय नमः

४६१ ,, महाकायाय नमः

४६२ ,, महायशसे नमः

४६३ ,, महामूर्ध्ने नमः

४६४ ,, महामात्राय नमः

४६५ ,, महानेत्राय नमः

४६६ ,, निशालयाय नमः

४६७ ,, महान्तकाय नमः

४६८ ,, महाकर्णाय नमः

४६९ ,, महोष्ठाय नमः

४७० ,, महाहनवे नमः

४७१ ,, महानासाय नमः

४७२ ,, महाकम्बवे नमः

४७३ ,, महाग्रीवाय नमः

४७४ ,, श्मशानभाजे नमः

४७५ ॐ महावक्षसे नमः
४७६ ,, महोरस्काय नमः
४७७ ,, अन्तरात्मने नमः
४७८ ,, मृगालयाय नमः
४७९ ,, लम्बनाय नमः
४८० ,, लम्बितोष्ठाय नमः
४८१ ,, महामायाय नमः
४८२ ,, पयोनिधये नमः
४८३ ,, महादन्ताय नमः
४८४ ,, महादंष्ट्राय नमः
४८५ ,, महाजिह्वाय नमः
४८६ ,, महामुखाय नमः
४८७ ,, महानखाय नमः
४८८ ,, महारोम्णे नमः
४८९ ,, महाकेशाय नमः
४९० ,, महाजटाय नमः
४९१ ,, प्रसन्नाय नमः
४९२ ,, प्रसादाय नमः
४९३ ,, प्रत्ययाय नमः
४९४ ,, गिरिसाधनाय नमः
४९५ ,, स्नेहनाय नमः
४९६ ,, अस्नेहनाय नमः
४९७ ,, अजिताय नमः
४९८ ,, महामुनये नमः
४९९ ,, वृक्षाकराय नमः
५०० ,, वृक्षकेतवे नमः
५०१ ,, अनलाय नमः
५०२ ,, वायुवाहनाय नमः
५०३ ,, गण्डलिने नमः

५०४ ॐ मेरुधाम्ने नमः
५०५ ,, दधिपतये नमः
५०६ ,, अथर्वशीर्षाय नमः
५०७ ,, सामास्याय नमः
५०८ ,, ऋक्सहस्रामितेक्षणाय नमः
५०९ ,, यजुःपादभुजाय नमः
५१० ,, गुह्याय नमः
५११ ,, प्रकाशाय नमः
५१२ ,, जङ्गमाय नमः
५१३ ,, अमोघार्थाय नमः
५१४ ,, प्रसादाय नमः
५१५ ,, अभिगम्याय नमः
५१६ ,, सुदर्शनाय नमः
५१७ ,, उपकाराय नमः
५१८ ,, प्रियाय नमः
५१९ ,, सर्वाय नमः
५२० ,, कनकाय नमः
५२१ ,, काञ्चनच्छवये नमः
५२२ ,, नाभये नमः
५२३ ,, नन्दिकराय नमः
५२४ ,, भावाय नमः
५२५ ,, पुष्करस्थपतये नमः
५२६ ,, स्थिराय नमः
५२७ ,, द्वादशाय नमः
५२८ ,, त्रासनाय नमः
५२९ ,, आद्याय नमः
५३० ,, यज्ञाय नमः
५३१ ,, यज्ञसमाहिताय नमः
५३२ ,, नक्ताय नमः

५३३ ॐ कलये नमः
५३४ ,, कालाय नमः
५३५ ,, मकराय नमः
५३६ ,, कालपूजिताय नमः
५३७ ,, सगणाय नमः
५३८ ,, गणकाराय नमः
५३९ ,, भूतवाहनसारथये नमः
५४० ,, भस्मशयाय नमः
५४१ ,, भस्मगोप्त्रे नमः
५४२ ,, भस्मभूताय नमः
५४३ ,, तरवे नमः
५४४ ,, गणाय नमः
५४५ ,, लोकपालाय नमः
५४६ ,, अलोकाय नमः
५४७ ,, महात्मने नमः
५४८ ,, सर्वपूजिताय नमः
५४९ ,, शुक्लाय नमः
५५० ,, त्रिशुक्लाय नमः
५५१ ,, सम्पन्नाय नमः
५५२ ,, शुचये नमः
५५३ ,, भूतनिषेविताय नमः
५५४ ,, आश्रमस्थाय नमः
५५५ ,, क्रियावस्थाय नमः
५५६ ,, विश्वकर्मपतये नमः
५५७ ,, वराय नमः
५५८ ,, विशालशाखाय नमः
५५९ ,, ताम्रोष्ठाय नमः
५६० ,, अम्बुजाय नमः
५६१ ,, सुनिश्चलाय नमः
५६२ ॐ कपिलाय नमः
५६३ ,, कपिशाय नमः
५६४ ,, शुक्लाय नमः
५६५ ,, आयुषे नमः
५६६ ,, पराय नमः
५६७ ,, अपराय नमः
५६८ ,, गन्धर्वाय नमः
५६९ ,, आदितये नमः
५७० ,, तार्क्ष्याय नमः
५७१ ,, सुविज्ञेयाय नमः
५७२ ,, सुशारदाय नमः
५७३ ,, परश्वधायुधाय नमः
५७४ ,, देवाय नमः
५७५ ,, अनुकारिणे नमः
५७६ ,, सुबान्धवाय नमः
५७७ ,, तुम्बवीणाय नमः
५७८ ,, महाक्रोधाय नमः
५७९ ,, ऊर्ध्वरेतसे नमः
५८० ,, जलेशयाय नमः
५८१ ,, उग्राय नमः
५८२ ,, वंशकराय नमः
५८३ ,, वंशाय नमः
५८४ ,, वंशनादाय नमः
५८५ ,, अनिन्दिताय नमः
५८६ ,, सर्वाङ्गरूपाय नमः
५८७ ,, मायाविने नमः
५८८ ,, सुहृदाय नमः
५८९ ,, अनिलाय नमः
५९० ,, अनलाय नमः

५९१ ॐ बन्धनाय नमः
५९२ ,, बन्धकर्त्रे नमः
५९३ ,, सुबन्धनविमोचनाय नमः
५९४ ,, सयज्ञारये नमः
५९५ ,, सकामारये नमः
५९६ ,, महादंष्ट्राय नमः
५९७ ,, महायुधाय नमः
५९८ ,, बहुधानिन्दिताय नमः
५९९ ,, शर्वाय नमः
६०० ,, शङ्कराय नमः
६०१ ,, शङ्कराय नमः
६०२ ,, अधनाय नमः
६०३ ,, अमरेशाय नमः
६०४ ,, महादेवाय नमः
६०५ ,, विश्वदेवाय नमः
६०६ ,, सुरारिघ्ने नमः
६०७ ,, अहिर्बुध्न्याय नमः
६०८ ,, अनिलाभाय नमः
६०९ ,, चेकिताय नमः
६१० ,, हविषे नमः
६११ ,, अजैकपादे नमः
६१२ ,, कपालिने नमः
६१३ ,, त्रिशङ्कवे नमः
६१४ ,, अजिताय नमः
६१५ ,, शिवाय नमः
६१६ ,, धन्वन्तरये नमः
६१७ ,, धूमकेतवे नमः
६१८ ,, स्कन्दाय नमः
६१९ ,, वैश्रवणाय नमः
६२० ॐ धात्रे नमः
६२१ ,, शक्राय नमः
६२२ ,, विष्णवे नमः
६२३ ,, भिन्नाय नमः
६२४ ,, त्वष्ट्रे नमः
६२५ ,, ध्रुवाय नमः
६२६ ,, धराय नमः
६२७ ,, प्रभावाय नमः
६२८ ,, सर्वगवे नमः
६२९ ,, अर्यम्णे नमः
६३० ,, सवित्रे नमः
६३१ ,, रवये नमः
६३२ ,, उषङ्गवे नमः
६३३ ,, विधात्रे नमः
६३४ ,, मान्धात्रे नमः
६३५ ,, भूतभावनाय नमः
६३६ ,, विभवे नमः
६३७ ,, वर्णविभाविने नमः
६३८ ,, सर्वकामगुणावहाय नमः
६३९ ,, पद्मनाभाय नमः
६४० ,, महागर्भाय नमः
६४१ ,, चन्द्रवक्त्राय नमः
६४२ ,, अनिलाय नमः
६४३ ,, अनलाय नमः
६४४ ,, बलवते नमः
६४५ ,, उपशान्ताय नमः
६४६ ,, पुराणाय नमः
६४७ ,, पुण्यचञ्चवे नमः
६४८ ,, इत्यै नमः

६४९ ॐ कुरुकर्त्रे नमः
६५० ,, कुरुवासिने नमः
६५१ ,, पुरुहूताय नमः
६५२ ,, गुणौषधाय नमः
६५३ ,, सर्वाशयाय नमः
६५४ ,, दर्भचारिणे नमः
६५५ ,, सर्वप्राणिपतये नमः
६५६ ,, देवदेवाय नमः
६५७ ,, सुखासक्ताय नमः
६५८ ,, सदसते नमः
६५९ ,, सर्वरत्नविदे नमः
६६० ,, कैलासगिरिवासिने नमः
६६१ ,, हिमवद्गिरिसंश्रयाय नमः
६६२ ,, कूलहारिणे नमः
६६३ ,, कुलकर्त्रे नमः
६६४ ,, बहुविद्याय नमः
६६५ ,, बहुप्रदाय नमः
६६६ ,, वणिजाय नमः
६६७ ,, वधकिने नमः
६६८ ,, वृक्षाय नमः
६६९ ,, बकुलाय नमः
६७० ,, चन्दनाय नमः
६७१ ,, छन्दाय नमः
६७२ ,, सारग्रीवाय नमः
६७३ ,, महाजत्रवे नमः
६७४ ,, अलोलाय नमः
६७५ ,, महौषधाय नमः
६७६ ,, सिद्धार्थकारिणे नमः
६७७ ॐ छन्दोव्याकरणोत्तर-
सिद्धार्थाय नमः
६७८ ,, सिंहनादाय नमः
६७९ ,, सिंहदंष्ट्राय नमः
६८२ ,, सिंहगाय नमः
६८१ ,, सिंहवाहनाय नमः
६८२ ,, प्रभावात्मने नमः
६८३ ,, जगत्कालस्थानाय नम
६८४ ,, लोकहिताय नमः
६८५ ,, तरवे नमः
६८६ ,, सारङ्गाय नमः
६८७ ,, नवचक्राङ्गाय नमः
६८८ ,, केतुमालिने नम
६८९ ,, सभायनाय नमः
६९० ,, भूतालयाय नमः
६९१ ,, भूतपतये नमः
६९२ ,, अहोरात्राय नमः
६९३ ,, अनिन्दिताय नमः
६९४ ,, सर्वभूतवाहित्रे नमः
७९५ ,, सर्वभूतनिलयाय नमः
६९६ ,, विभवे नमः
६९७ ,, भवाय नमः
६९८ ,, अमोघाय नमः
६९९ ,, संयताय नमः
७०० ,, अश्वाय नमः
७०१ ,, भोजनाय नमः
७०२ ,, प्राणधारणाय नमः
७०३ ,, धृतिमते नमः
७०४ ,, मतिमते नमः

७०५ ॐ दक्षाय नमः
७०६ ,, सत्कृताय नमः
७०७ ,, युगाधिपाय नमः
७०८ ,, गोपालाय नमः
७०९ ,, गोपतये नमः
७१० ,, ग्रामाय नमः
७११ ,, गोचर्मवसनाय नमः
७१२ ,, हरये नमः नमः
७१३ ,, हिरण्यबाहवे नमः
७१४ ,, प्रवेशिनां गुहापालाय नमः
७१५ ,, प्रकृष्टारये नमः
७१६ ,, महाहर्षाय नमः
७१७ ,, जितकामाय नमः
७१८ ,, जितेन्द्रियाय नमः
७१९ ,, गान्धाराय नमः
७२० ,, सुवासाय नमः
७२१ ,, तपःसक्ताय नमः
७२२ ,, रतये नमः
७२३ ,, नराय नमः
७२४ ,, महागीताय नमः
७२५ ,, महानृत्याय नमः
७२६ ,, अप्सरोगणसेविताय नमः
७२७ ,, महाकेतवे नमः
७२८ ,, महाधातवे नमः
७२९ ,, नैकसानुचराय समः
७३० ,, चलाय नमः
७३१ ,, आवेदनीयाय नमः
७३२ ,, आदेशाय नमः
७३३ ,, सर्वगन्धसुखावहाय नमः
७३४ ॐ तोरणाय नमः
७३५ ,, तारणाय नमः
७३६ ,, वाताय नमः
७३७ ,, परिधिने नमः
७३८ ,, पतिखेचराय नमः
७३९ ,, संयोगवर्धनाय नमः
७४० ,, गुणाधिकवृद्धाय नमः
७४१ ,, अभिवृद्धाय नमः
७४२ ,, नित्यात्मसहाय नमः
७४३ ,, देवासुरपतये नमः
७४४ ,, पत्ये नमः
७४५ ,, युक्ताय नमः
७४६ ,, युक्तबाहवे नमः
७४७ ,, दिविसुपर्वदेवाय नमः
७४८ ,, आषाढाय नमः
७४९ ,, सुषाढाय नमः
७५० ,, ध्रुवाय नमः
७५१ ,, हरिणाय नमः
७५२ ,, हराय नमः
७५३ ,, आवर्तमानवपुषे नमः
७५४ ,, वसुश्रेष्ठाय नमः
७५५ ,, महापथाय नमः
७५६ ,, विमर्षशिरोहारिणे नमः
७५७ ,, सर्वलक्षणलक्षिताय नमः
७५८ ,, अक्षरथयोगिने नमः
७५९ ,, सर्वयोगिने नमः
७६० ,, महाबलाय नमः
७६१ ,, समाम्नायाय नमः
७६२ ,, असमाम्नायाय नमः

७६३ ॐ तीर्थदेवाय नमः
७६४ ,, महारथाय नमः
७६५ ,, निर्जीवाय नमः
७६६ ,, जीवनाय नमः
७६७ ,, मन्त्राय नमः
७६८ ,, शुभाक्षाय नमः
७६९ ,, बहुकर्कशाय नमः
७७० ,, रत्नप्रभूताय नमः
७७१ ,, रत्नाङ्गाय नमः
७७२ ,, महार्णवनिपानविदे नमः
७७३ ,, मूलाय नमः
७७४ ,, त्रिशूलाय नमः
७७५ ,, अमृताय नमः
७७६ ,, व्यक्ताऽव्यक्ताय नमः
७७७ ,, तपोनिधये नमः
७७८ ,, आरोहणाय नमः
७७९ ,, अधिरोधाय नमः
७८० ,, शीलधारिणे नमः
७८१ ,, महायशसे नमः
७८२ ,, सेनाकल्पाय नमः
७८३ ,, महाकल्पाय नमः
७८४ ,, योगाय नमः
७८५ ,, युगकराय नमः
७८६ ,, हरये नमः
७८७ ,, युगरूपाय नमः
७८८ ,, महारूपाय नमः
७८९ ,, महागहनाय नमः
७९० ,, वधाय नमः
७९१ ,, न्यायनिर्वपणाय नमः

७९२ ॐ पादाय नमः
७९३ ,, पण्डिताय नमः
७९४ ,, अचलोपमाय नमः
७९५ ,, बहुलोपमाय नमः
७९६ ,, महामालाय नमः
७९७ ,, शशिहरसुलोचनाय नमः
७९८ ,, विस्तारलवणकूपाय नमः
७९९ ,, त्रियुगाय नमः
८०० ,, सफलोदयाय नमः
८०१ ,, त्रिनेत्राय नमः
८०२ ,, विषाणाङ्गाय नमः
८०३ ,, मणिविद्धाय नमः
८०४ ,, जटाधराय नमः
८०५ ,, बिन्दवे नमः
८०६ ,, विसर्गाय नमः
८०७ ,, सुमुखाय नमः
८०८ ,, शराय नमः
८०९ ,, सर्वायुधाय नमः
८१० ,, सहाय नमः
८११ ,, निवेदनाय नमः
८१२ ,, सुखाजाताय नमः
८१३ ,, सुगन्धाराय नमः
८१४ ,, महाधनुषे नमः
८१५ ,, गन्धपालिभगवते नमः
८१६ ,, सर्वकर्मोत्थानाय नमः
८१७ ,, मन्थानबहुलबाहवे नमः
८१८ ,, सकलाय नमः
८१९ ,, सर्वलोचनाय नमः
८२० ,, तलयतालाय नमः

८२१ ॐ करस्थालिने नमः
८२२ ,, ऊर्ध्वसंहननाय नमः
८२३ ,, महते नमः
८२४ ,, छत्राय नमः
८२५ ,, सुच्छत्राय नमः
८२६ ,, विख्यातलोकाय नमः
८२७ ,, सर्वाश्रयक्रमाय नमः
८२८ ,, मुण्डाय नमः
८२९ ,, विरूपाय नमः
८३० ,, विकृताय नमः
८३१ ,, दण्डिने नमः
८३२ ,, कुण्डिने नमः
८३३ ,, विकुर्वाणाय नमः
८३४ ,, हर्यक्षाय नमः
८३५ ,, ककुभाय नमः
८३६ ,, वज्रिणे नमः
८३७ ,, शतजिह्वाय नमः
८३८ ,, सहस्रपदे नमः
८३९ ,, सहस्रमूर्ध्ने नमः
८४० ,, देवेन्द्राय नमः
८४१ ,, सर्वदेवमयाय नमः
८४२ ,, गुरवे नमः
८४३ ,, सहस्रबाहवे नमः
८४४ ,, सर्वाङ्गाय नमः
८४५ ,, शरण्याय नमः
८४६ ,, सर्वलोककृते नमः
८४७ ,, पवित्राय नमः
८४८ ,, त्रिककुन्मन्त्राय नमः
८४९ ,, कनिष्ठाय नमः
८५० ॐ कृष्णपिङ्गलाय नमः
८५१ ,, ब्रह्मदण्डविनिर्मात्रे नमः
८५२ ,, शतघ्नीपाशशक्तिमते नमः
८५३ ,, पद्मगर्भाय नमः
८५४ ,, महागर्भाय नमः
८५५ ,, ब्रह्मगर्भाय नमः
८५६ ,, जलेमद्भवाय नमः
८५७ ,, गभस्तये नमः
८५८ ,, ब्रह्मकृते नमः
८५९ ,, ब्रह्मिणे नमः
८६० ,, ब्रह्मविदे नमः
८६१ ,, ब्राह्मणाय नमः
८६२ ,, गतये नमः
८६३ ,, अनन्तरूपाय नमः
८६४ ,, नैकात्मने नमः
८६५ ,, स्वयंभुवतिग्मतेजसे नमः
८६६ ,, ऊर्ध्वगात्मने नमः
८६७ ,, पशुपतये नमः
८६८ ,, धातरंहसे नमः
८६९ ,, मनोजवाय नमः
८७० ,, चन्दनिने नमः
८७१ ,, पद्मनालाग्राय नमः
८७२ ,, सुरभ्युत्तारणाय नमः
८७३ ,, नराय नमः
८७४ ,, कर्णिकारमहास्रग्विणे नमः
८७५ ,, नीलमौलये नमः
८७६ ,, पिनाकधृषे नमः
८७७ ,, उमापतये नमः
८७८ ,, उमाकान्ताय नमः

८७९ ॐ जाह्नवीधृषे नमः
८८० ,, उमाधवाय नमः
८८१ ,, वरवराहाय नमः
८८२ ,, वरदाय नमः
८८३ ,, वरेण्याय नमः
८८४ ,, सुमहास्वनाय नमः
८८५ ,, महाप्रसादाय नमः
८८६ ,, दमनाय नमः
८८७ ,, शत्रुघ्ने नमः
८८८ ,, श्वेतपिङ्गलाय नमः
८८९ ,, पीतात्मने नमः
८९० ,, परमात्मने नमः
८९१ ,, प्रयतात्मने नमः
८९२ ,, प्रधानधृषे नमः
८९३ ,, सर्वपार्श्वमुखाय नमः
८९४ ,, त्र्यक्षाय नमः
८९५ ,, सर्वसाधारणवराय नमः
८९६ ,, चराऽचरात्मने नमः
८९७ ,, सूक्ष्मात्मने नमः
८९८ ,, अमृतगोवृषेश्वराय नमः
८९९ ,, साध्यर्षये नमः
९०० ,, आदित्यवसवे नमः
९०१ ,, विवस्वत्सवित्रमृताय नमः
९०२ ,, व्यासाय नमः
९०३ ,, सर्वसुसंक्षेपविस्तराय नमः
९०४ ,, पर्ययनराय नमः
९०५ ,, केतवे नमः
९०६ ,, संवत्सराय नमः
९०७ ,, मासाय नमः

९०८ ॐ पक्षाय नमः
९०९ ,, संख्यासमापनाय नमः
९१० ,, कलायै नमः
९११ ,, काष्ठायै नमः
९१२ ,, लवेभ्यो नमः
९१३ ,, मात्राभ्यो नमः
९१४ ,, मुहूर्ताहःक्षपाभ्यो नमः
९१५ ,, क्षणेभ्यो नमः
९१६ ,, विश्वक्षेत्राय नमः
९१७ ,, प्रजाबीजाय नमः
९१८ ,, लिङ्गाय नमः
९१९ ,, आद्याविनिर्गमाय नमः
९२० ,, सते नमः
९२१ ,, असते नमः
९२२ ,, व्यक्ताय नमः
९२३ ,, अव्यक्ताय नमः
९२४ ,, पित्रे नमः
९२५ ,, मात्रे नमः
९२६ ,, पितामहाय नमः
९२७ ,, स्वर्गद्वाराय नमः
९२८ ,, प्रजाद्वाराय नमः
९२९ ,, मोक्षद्वाराय नमः
९३० ,, त्रिविष्टपाय नमः
९३१ ,, निर्वाणाय नमः
९३२ ,, ह्रादनाय नमः
९३३ ,, ब्रह्मलोकाय नमः
९३४ ,, परागतये नमः
९३५ ,, देवासुरविनिर्मात्रे नमः
९३६ ,, देवासुरपरायणाय नमः

९३७ ॐ देवासुरगुरवे नमः
९३८ ,, देवाय नमः
९३९ ,, देवासुरनमस्कृताय नमः
९४० ,, देवासुरमहामात्राय नमः
९४१ ,, देवासुरगणाश्रयाय नमः
९४२ ,, देवासुरगणाध्यक्षाय नमः
९४३ ,, देवासुरगणाग्रण्ये नमः
९४४ ,, देवातिदेवाय नमः
९४५ ,, देवर्षये नमः
९४६ ,, देवासुरवरप्रदाय नमः
९४७ ,, देवासुरेश्वराय नमः
९४८ ,, विश्वाय नमः
९४९ ,, देवासुरमहेश्वराय नमः
९५० ,, सर्वदेवमयाय नमः
९५१ ,, अचिन्त्याय नमः
९५२ ,, देवतात्मने नमः
९५३ ,, आत्मसम्भवाय नमः
९५४ ,, उद्भिदे नमः
९५५ ,, त्रिविक्रमाय नमः
९५६ ,, वैद्याय नमः
९५७ ,, विरजाय नमः
९५८ ,, नीरजाय नमः
९५९ ,, अमराय नमः
९६० ,, ईड्याय नमः
९६१ ,, हस्तीश्वराय नमः
९६२ ,, व्याघ्राय नमः
९६३ ,, देवसिंहाय नमः
९६४ ,, नरर्षभाय नमः
९६५ ,, विबुधाय नमः
९६६ ॐ अग्रवराय नमः
९६७ ,, सूक्ष्माय नमः
९६८ ,, सर्वदेवाय नमः
९६९ ,, तपोमयाय नमः
९७० ,, सुयुक्ताय नमः
९७१ ,, शोभनाय नमः
९७२ ,, वज्रिणे नमः
९७३ ,, प्रासानाम्प्रभवाय नमः
९७४ ,, अव्ययाय नमः
९७५ ,, गुहाय नमः
९७६ ,, कान्ताय नमः
९७७ ,, निजसर्गाय नमः
९७८ ,, पवित्राय नमः
९७९ ,, सर्वपावनाय नमः
९८० ,, शृङ्गिणे नमः
९८१ ,, शृङ्गप्रियाय नमः
९८२ ,, बभ्रवे नमः
९८३ ,, राजराजाय नमः
९८४ ,, निरामयाय नमः
९८५ ,, अभिरामाय नमः
९८६ ,, सुरगणाय नमः
९८७ ,, विरामाय नमः
९८८ ,, सर्वसाधनाय नमः
९८९ ,, ललाटाक्षाय नमः
९९० ,, विश्वदेवाय नमः
९९१ ,, हरिणाय नमः
९९२ ,, ब्रह्मवर्चसाय नमः
९९३ ,, स्थावरपतये नमः
९९४ ,, नियमेन्द्रियवर्धनाय नमः

९९५ ॐ सिद्धार्थाय	नमः	२ ॐ ब्रह्मणे	नमः
९९६ ,, सिद्धभूतार्थाय	नमः	३ ,, भक्तानां परमागतये	नमः
९९७ ,, अचिन्त्याय	नमः	४ ,, विमुक्ताय	नमः
९९८ ,, सत्यव्रताय	नमः	५ ,, मुक्ततेजसे	नमः
९९९ ,, शुचये	नमः	६ ,, श्रीमते	नमः
१००० ,, व्रताधिपाय	नमः	७ ,, श्रीवर्धनाय	नमः
१ ,, पराय	नमः	८ ,, जगते	नमः

॥ इयं नामावलिः समाप्ताः ॥

।। श्री हरिहराद्वैतस्तोत्रम् ।।

धर्मार्थकाममोक्षाख्यचतुर्वर्गप्रदायिनौ ।
वन्दे हरिहरौ देवौ त्रैलोक्यपरिपायिनौ ।।१।।

एकमूर्तिर्द्विधाभिन्नौ संसारार्णवतारकौ ।
वन्देऽहं कामदौ देवौ सततं शिवकेशवौ ।।२।।

दयामयौ दीनदरिद्रतापहौ
महोजसौ मान्यतमौ सदा समौ ।
उदारलीलाललितौ सितासितौ
नमामि नित्यं शिवकेशवावहम् ।।३।

अनन्तमाहात्म्यनिधी विधिस्तुतौ
श्रिया युतौ लोकविधानकारिणौ ।
सुरासुराधीशनुतौ नु तौ जगत्-
पती विधत्तां शिवकेशवौ शिवम् ।।४।।

जगत्त्रयीपालननाशकारकौ
प्रसन्नहासौ विलसत्सदाननौ ।
महाबलौ मञ्जुलमूर्तिधारिणौ
शिवं विधत्तां शिवकेशवौ सदा ।।५।।

महस्विनौ मोदकरौ परौ वरौ
मुनीश्वरैः सेवितपादपङ्कजौ ।
अजौ सुजातौ जगदीश्वरौ सदा
शिवं विधत्तां शिवकेशवौ मम ।।६।।

नमोऽस्तु नित्यं शिवकेशवाभ्यां
स्वभक्तसंरक्षणतत्पराभ्याम् ।
देवेश्वराभ्यां करुणाकराभ्यां
लोकत्रयीनिर्मितिकारणाभ्याम् ।।७।।

सलीलशीलौ महनीयमूर्ती
दयाकरौ मञ्जुलसच्चरित्रौ ।
महोदयौ विश्वविनोदहेतू
नमामि देवौ शिवकेशवौ तौ ।।८।।

त्रिशूलपाणिं वरचक्रपाणिं
पीताम्बरं स्पष्टदिगम्बरं च ।
चतुर्भुजं वा दशबाहुयुक्तं
हरिं हरं वा प्रणमामि नित्यम् ।।९।।

कपालमालाललितं शिवं च
सद् वैजयन्तीस्रगुदारशोभम् ।
विष्णुं च नित्यं प्रणिपत्य याचे
भवत्पदाम्भोरुहयोः स्मृतिः स्यात् ।।१०।।

शिव त्वमेवासि हरिस्वरूपो
हरे त्वमेवासि शिवस्वरूपः ।
भ्रान्त्या जनास्त्वां द्विविधस्वरूपं
पश्यन्ति मूढा ननु नाशहेतोः ।।११।।

हरे जना ये शिवरूपिणं त्वां
त्वद्रूपमीशं कलयन्ति नित्यम् ।
ते भाग्यवन्तः पुरुषा कदाऽपि
न यान्ति भास्वत्तनयस्य गेहम् ।।१२।।

शम्भो जना ये हरिरूपिणं त्वां
भवत्स्वरूपं कमलालयेशम् ।
पश्यन्ति भक्त्या खलु ते महान्तो
यमस्य नो यान्ति पुरं कदाचित् ।।१३।।

शिवे हरौ भेदधियाऽऽधियुक्ता
मुक्तिं लभन्ते न जना दुरापाम् ।
भुक्तिं च नैवेह परन्तु दुःखं
संसारकूपे पतिताः प्रयान्ति ॥१४॥

हरे हरौ भेददृशो भृशं वै
संसारसिन्धौ पतिताः सतापाः
पापाशया मोहमयान्धकारे
भ्रान्ता महादुःखभरं लभन्ते ॥१५॥

सन्तो लसन्तः सुतरां हरौ च
हरे च नित्यं बहुभक्तिमन्तः ।
अन्तर्महान्तौ शिवकेशवौ तौ
ध्यायन्त उच्चैर्मुदमाप्नुवन्ति ॥१६॥

हरौ हरे चैक्यमुदारशीलाः
पश्यन्ति शश्वत्सुखदायिलीलाः ।
ते भुक्तिमुक्ती समवाप्य नूनं
सुखं दुरापं सुतरां लभन्ते ॥१७॥

शिवे शिवेशे ऽपि च केशवे च
पद्मापतौ देववरे महान्तः ।
भेदं न पश्यन्ति परन्तु सन्त-
स्तयोरभेदं कलयन्ति सत्यम् ॥१८॥

रमापतिं वा गिरिजापतिं वा
विश्वेश्वरं वा जगदीश्वरं वा ।
पिनाकपाणिं खलु शार्ङ्गपाणिं
हरिं हरं वा प्रणमामि नित्यम् ॥१९॥

सुरेश्वरं वा परमेश्वरं वा
वैकुण्ठलोकस्थितमच्युतं वा ।
कैलासशैलस्थितमीश्वरं वा
विष्णुं च शम्भुं च नमानि नित्यम् ॥२०॥

हरिर्दयार्द्राशयतां प्रयातो
हरो दयालूत्तमभावमाप्तः ।
अनेकदिव्यास्त्रधरः परेशः
पायादजस्त्रं कृपया नतं माम् ॥२१॥

शेषो ऽस्ति यस्याभरणत्वमाप्तो
यद्वा सुशय्यात्वमितः सदैव ।
देवः स को ऽपीह हरिर्हरो वा
करोतु मे मञ्जुलमङ्गलं द्राक् ॥२२॥

हरिं हरं चापि भजन्ति भक्त्या
विभेदबुद्धिं प्रविहाय नूनम् ।
सिद्धा महान्तो मुनयो महेच्छाः
स्वच्छाशया नारदपर्वताद्याः ॥२३॥

सनत्कुमारादय उन्नतेच्छा
मोहेन हीना मुनयो महान्तः ।
स्वान्तस्थितं शङ्करमच्युतं च
भेदं परित्यज्य सदा भजन्ते ॥२४॥

शिष्टा वसिष्ठादय आत्मनिष्ठाः
श्रेष्ठस्वधर्मावनकर्मवित्ताः ।
हृत्तापहारं मलहीनचित्ता
हरिं हरं चैकतया भजन्ते ॥२५॥

अन्ये महात्मान उदारशीला
भृग्वादयो ये परमर्षयस्ते ।
पश्यन्ति चैक्यं हरिशर्वयोः श्री-
संयुक्तयोरत्र न संशयोऽस्ति ॥२६॥

इन्द्रादयो देववरा उदारा-
स्त्रैलोक्यसंरक्षणदत्तचित्ताः ।
हरिं हरं चैकसुरूपमेव
पश्यन्ति भक्त्या च भजन्ति नूनम् ॥२७॥

सर्वेषु वेदेषु खलु प्रसिद्धो
वैकुण्ठकैलासगयोस्तु धाम्नोः ।
मुकुन्दबालेन्दुवतंसयोः स-
च्चरित्रयोरीश्वरयोरभेदः ॥२८॥

सर्वाणि शास्त्राणि वदन्ति नूनं
हरेर्हरस्यैक्यमुदारमूर्तेः ।
नास्त्यत्र सन्देहलवोऽपि सत्यं
नित्यं जना धर्मधना वदन्ति ॥२९॥

सर्वैः पुराणैरिदमेवमुक्तं
यद्विष्णुशम्भ्वोर्महनीयमूर्त्योः ।
ऐक्यं सदैवास्ति न भेदलेशोऽ-
प्यस्तीह चिन्त्यं सुजनैस्तदेवम् ॥३०॥

भेदं प्रपश्यन्ति नराधमा ये
विष्णौ च शम्भौ च दयानिधाने ।
ते यान्ति पापाः परितापयुक्ता
घोरं विशालं निरयस्य वासम् ॥३१॥

भूताधिपं वा विबुधाधिपं वा
रमेश्वरं वा परमेश्वरं वा ।
पीताम्बरं वा हरिदम्बरं वा
हरिं हरं वा पुरुषा भजध्वम् ॥३२॥

महस्विवर्यं कमनीयदेह-
मुदारसारं सुखदायिचेष्टम् ।
सर्वेष्टदेवं दुरितापहारं
विष्णुं शिवं वा सततं भजध्वम् ॥३३॥

शिवस्य विष्णोश्च विभात्यभेदो
व्यासादयोऽपीह महर्षयस्ते ।
सर्वज्ञभावं दधतो नितान्तं
वदन्ति चैवं कलयन्ति सन्तः ॥३४॥

महाशया धर्मविधानदक्षा
रक्षापरा निर्जितमानसा ये ।
तेऽपीह विज्ञाः समदर्शिनो वै
शिवस्य विष्णोः कलयन्त्यभेदम् ॥३५॥

हरिरेव हरो हर एव हरि-
र्नहि भेदलवोऽपि तयोः प्रथितः ।
इति सिद्धमुनीशयतीशवरा
निगदन्ति सदा विमदाः सुजनाः ॥३६॥

हर एव हरिर्हरिरेव हरो
हरिणा च हरेण च विश्वमिदम् ।
प्रविनिर्मितमेतदवेहि सदा
विमदो भव तौ भज भावयुतः ॥३७॥

हरिरेव बभूव हरः परमो
हर एव बभूव हरिः सरमः ।
हरिता हरता च तथा मिलिता
रचयत्यखिलं खलु विश्वमिदम् ॥३८॥

वृषध्वजं वा गरुडध्वजं वा
गिरीश्वरं वा भुवनेश्वरं वा ।
पतिं पशूनामथवा यदूनां
कृष्णं शिवं वा विबुधा भजन्ते ॥३९॥

भीमाकृतिं वा रुचिराकृतिं वा
त्रिलोचनं वा समलोचनं वा ।
उमापतिं वाऽथ रमापतिं वा
हरिं हरं वा मुनयो भजन्ते ॥४०॥

हरिः स्वयं वै हरतां प्रयातो
हरस्तु साक्षाद्धरिभावमाप्तः ।
हरिर्हरश्चापि जगज्जनाना-
मुपास्यदेवौ स्त इति प्रसिद्धिः ॥४१॥

हरिर्हि साक्षाद्धर एव सिद्धो
हरो हि साक्षाद्धरिरेव चास्ते ।
हरिर्हरश्च स्वयमेव चैको
द्विरूपतां कार्यवशात् प्रयातः ॥४२॥

हरिर्जगत्पालनकृत्प्रसिद्धो
हरो जगन्नाशकरः परात्मा ।
सुरूपमात्रेण भिदामवाप्तौ
द्वावेकरूपौ स्त इमौ सुरेशौ ॥४३॥

दयानिधानं विलसद्विधानं
देवप्रधानं ननु सावधानम् ।
सानन्दसन्मासभासमानं
देवं शिवं वा भज केशवं वा ॥४४॥

श्रीकौस्तुभाभरणमिन्दुकलावतंसं
कालीविलासिनमथो कमलाविलासम् ।
देवं मुरारिमथवा त्रिपुरारिमीशं
भेदं विहाय भज भो भज भूरिभक्त्या ॥४५॥

विष्णुः साक्षाच्छम्भुरेव प्रसिद्धः
शम्भुः साक्षाद्विष्णुरेवास्ति नूनम् ।
नास्ति स्वल्पो ऽपीह भेदावकाशः
सिद्धान्तो ऽयं सज्जनानां समुक्तः ॥४६॥

शम्भुर्विष्णुश्चैकरूपो द्विमूर्तिः
सत्यं सत्यं गद्यते निश्चितं सत् ।
अस्मिन् मिथ्या संशयं कुर्वते ये
पापाचारास्ते नरा राक्षसाख्याः ॥४७॥

विष्णौ शम्भौ नास्ति भेदावभासः
संख्यावन्तः सन्त एवं वदन्ति ।
अन्तः किञ्चित् संविचिन्त्य स्वयं द्राक्
भेदं त्यक्त्वा तौ भजस्व प्रकामम् ॥४८॥

विष्णोर्भक्ताः शम्भुविद्वेषसक्ताः
शम्भोर्भक्ता विष्णुविद्वेषिणो ये ।
कामक्रोधान्धाः सुमन्दाः सनिन्दा
विन्दन्ति द्राक् ते नरा दुःखजालम् ॥४९॥

विष्णौ शम्भौ भेदबुद्धिं विहाय
भक्त्या युक्ताः सज्जना ये भजन्ते ।
तेषां भाग्यं वक्तुमीशो गुरुर्नो
सत्यं सत्यं वच्म्यहं विद्धि तत्वम् ॥५०॥

हरेर्विरोधी च हरस्य भक्तो
हरस्य वैरी च हरेश्च भक्तः ।
साक्षादसौ राक्षस एव नूनं
नास्त्यत्र सन्देहलवोऽपि नूनम् ॥५१॥

शिवं च विष्णुं च विभिन्नदेहं
पश्यन्ति ये मूढधियोऽतिनीचाः ।
ते किं सुसद्भिः सुतरां महद्भिः
सम्भाषणीया पुरुषा भवन्ति ? ॥५२॥

अनेकरूपं विदितैकरूपं
महान्तमुच्चैरतिशान्तचित्तम् ।
दान्तं नितान्तं शुभदं सुकान्तं
विष्णुं शिवं वा भज भूरिभक्त्या ॥५३॥

हरे मुरारे हर हे पुरारे
विष्णो दयालो शिव हे कृपालो ।
दीनं जनं सर्वगुणैर्विहीनं
मां भक्तमार्तं परिपाहि नित्यम् ॥५४॥

हे हे विष्णो शम्भुरूपस्त्वमेव
हे हे शम्भो विष्णुरूपस्त्वमेव ।
सत्यं सर्वे सन्त एवं वदन्तः
संसाराब्धिं ह्यञ्जसा सन्तरन्ति ॥५५॥

विष्णुः शम्भुः शम्भुरेवास्ति विष्णुः
शम्भुर्विष्णुर्विष्णुरेवास्ति शम्भुः ।
शम्भौ विष्णौ चैकरूपत्वमिष्टं
शिष्टा एवं सर्वदा सञ्जपन्ति ॥५६॥

देवी सम्पद् विद्यते यस्य पुंसः
श्रीमान् सोऽयं सर्वदा भक्तियुक्तः ।
शम्भुं विष्णुं चैकरूपं द्विदेहं
भेदं त्यक्त्वा सम्भजन्मोक्षमेति ॥५७॥

येषां पुंसामासुरीसम्पदास्ते
मृत्योर्ग्रासाः कामलोभाभिभूताः ।
क्रोधेनान्धा बन्धयुक्ता जनास्ते
शम्भुं विष्णुं भेदबुद्ध्या भजन्ते ॥५८॥

कल्याणकारं सुखदप्रकारं
विनिर्विकारं विहितोपकारम् ।
स्वाकारमीशं नकृतापकारं
शिवं भजध्वं किल केशवं वा ॥५९॥

सच्चित्स्वरूपं करुणासुकूपं
गीर्वाणभूपं वरधर्मयूपम् ।
संसारसारं सुरुचिप्रसारं
देवं हरिं वा भज भो हरं वा ॥६०॥

आनन्दसिन्धुं परदीनबन्धुं
मोहान्धकारस्य निकारहेतुम् ।
सद्धर्मसेतुं रिपुधूमकेतुं
भजस्व विष्णुं शिवमेकबुद्ध्या ॥६१॥

वेदान्तसिद्धान्तमयं दयालुं
सत्सांख्यशास्त्रप्रतिपाद्यमानम् ।
न्यायप्रसिद्धं सुतरां समिद्धं
भजस्व विष्णुं शिवमेकबुद्ध्या ॥६२॥

पापापहारं रुचिरप्रचारं
कृतोपकारं विलसद्विहारम् ।
सद्धर्मधारं कमनीयदारं
सारं हरिं वा भज भो हरं वा ॥६३॥

हरौ हरे भेदमवेक्षमाणः
प्राणी नितान्तं खलु तान्तचेताः ।
प्रेताधिपस्यैति पुरं दुरन्तं
दुःखं च तत्र प्रथितं प्रयाति ॥६४॥

भो भो जना ज्ञानधना मनाग–
प्यचर्ये हरौ चापि हरे च नूनम् ।
भेदं परित्यज्य मनो निरुध्य
सुखं भवन्तः खलु तौ भजन्तु ॥६५॥

आनन्दसन्मन्दिरमिन्दुकान्तं
शान्तं नितान्तं भुवनानि पान्तम् ।
भान्तं सुदान्तं विहितासुरान्तं
देवं शिवं वा भज केशवं वा ॥६६॥

हे हे हरे कृष्ण जनार्दनेश
शम्भो शशाङ्काभरणाधिदेव ।
नारायण श्रीश जगत्स्वरूप
मां पाहि नित्यं शरणं प्रपन्नम् ॥६७॥

विष्णो दयालोऽच्युत शार्ङ्गपाणे
भूतेश शम्भो शिव शर्व नाथ ।
मुकुन्द गोविन्द रमाधिपेश
मां पाहि नित्यं शरणं प्रपन्नम् ॥६८॥

कल्याणकारिन् कमलापते हे
गौरीपते भीम भवेश शर्व ।
गिरीश गौरीप्रिय शूलपाणे
मां पाहि नित्यं शरणं प्रपन्नम् ॥६९॥

हे शर्व हे शङ्कर हे पुरारे
हे कृष्ण हे केशव हे मुरारे ।
हे दीनबन्धो करुणैकसिन्धो
मां पाहि नित्यं शरणं प्रपन्नम् ॥७०॥

हे चन्द्रमौले हरिरूप शम्भो
हे चक्रपाणे शिवरूप विष्णो ।
हे कामशत्रो खलु कामतात
मां पाहि नित्यं भगवन्नमस्ते ॥७१॥

सकललोकपशोकविनाशिनौ
परमरम्यतया प्रविकाशिनौ ।
अघसमूहविदारणकारिणौ
हरिहरौ भज गूढ़ भिदां त्यज ॥७२॥

हरिः साक्षाद्धरः प्रोक्तो हरः साक्षाद्धरिः स्मृतः ।
उभयोरन्तरं नास्ति सत्यं सत्यं न संशयः ॥७३॥

यो हरौ च हरे साक्षादेकमूर्तौ द्विधास्थिते ।
भेदं करोति मूढ़ात्मा स याति नरकं ध्रुवम् ॥७४॥

यस्य बुद्धिर्हरौ चापि हरे भेदं च पश्यति ।
स नरोऽधमतां यातो रोगी भवति मानवः ॥७५॥

यो हरौ च हरे चापि भेदबुद्धिं करोत्यहो ।
तस्मान्मूढ़तमो लोके नान्यः कश्चन विद्यते ॥७६॥

मुक्तिमिच्छसि चेत्तर्हि भेदं त्यज हरौ हरे ।
अन्यथा जन्मलक्षेषु मुक्तिः खलु सुदुर्लभा ॥७७॥

विष्णोः शिवस्य चाभेदज्ञानान्मुक्तिः प्रजायते ।
इति सद्वेदवाक्यानां सिद्धान्तः प्रतिपादितः ॥७८॥

विष्णुः शिवः शिवो विष्णुरिति ज्ञानं प्रशस्यते ।
एतज्ज्ञानयुतो ज्ञानी नान्यथा ज्ञानमिष्यते ॥७९॥

हरिर्हरो हरश्चापि हरिस्तीति भावयन् ।
धर्मार्थकाममोक्षाणामधिकारी भवेन्नरः ॥८०॥

हरिं हरं भिन्नरूपं भावयत्यधमो नरः ।
स वर्णसङ्करो नूनं विज्ञेयो भावितात्मभिः ॥८१॥

हरे शम्भो हरे विष्णो शम्भो हर हरे हर ।
इति नित्यं जपञ्जन्तुर्जीवन्मुक्तो हि जायते ॥८२॥

न हरिं च हरं चापि भेदबुद्धया विलोकयेत् ।
यदीच्छेदात्मनः क्षेमं बुद्धिमान्कुशलो नरः ॥८३॥

हरे हर दयालो मां पाहि पाहि कृपां कुरु ।
इति सञ्जपनादेव मुक्तिः पाणौ प्रतिष्ठिता ॥८४॥

हरिं हरं द्विधा भिन्नं वस्तुतस्त्वेकरूपकम् ।
प्रणमामि सदा भक्त्या रक्षतां तौ महेश्वरौ ॥८५॥

फलश्रुति :—

इदं हरिहरस्तोत्रं सूक्तं परमदुर्लभम् ।
धर्मार्थकाममोक्षाणां दायकं दिव्यमुत्तमम् ॥८६॥

शिवकेशवयोरैक्यप्रतिपादकमीडितम् ।
पठेयुः कृतिनः शान्ता दान्ता मोक्षाभिलाषिणः ॥८७॥

एतस्य पठनात् सर्वाः सिद्धयो वशगास्तथा ।
देवयोर्विष्णुशिवयोर्भक्तिर्भवति भूतिदा ॥८८॥

धर्मार्थी लभते धर्ममर्थार्थी चार्थमश्नुते ।
कामार्थी लभते कामं मोक्षार्थी मोक्षमश्नुते ॥८९॥

दुर्गमे घोरसङ्ग्रामे कानने वधबन्धने ।
कारागारेऽस्य पठनाज्जायते तत्क्षणं सुखी ॥९०॥

वेदे यथा सामवेदो वेदान्तो दर्शने यथा ।
स्मृतौ मनुस्मृतिर्यद्वद् वर्णेषु ब्राह्मणो यथा ॥९१॥

यथाऽऽश्रमेषु संन्यासो यथा देवेषु वासवः ।
यथाश्वत्थः पादपेषु यथा गङ्गा नदीषु च ॥९२॥

पुराणेषु यथा श्रेठं महाभारत मुच्यते ।
यथा सर्वेषु लोकेषु वैकुण्ठः परमोत्तमः ॥९३॥

यथा तीर्थेषु सर्वेषु प्रयागः श्रेष्ठ ईरितः ।
यथा पुरीषु सर्वासु वरा वाराणसी पुरी ॥९४॥

यथा दानेषु सर्वेषु चान्नदानं महत्तमम् ।
यथा सर्वेषु धर्मेषु चाहिंसा परमा स्मृता ॥९५॥

यथा सर्वेषु सौख्येषु भोजनं प्राहुरुत्तमम् ।
तथा स्तोत्रेषु सर्वेषु स्तोत्रमेतत्परात्परम् ॥९६॥

अन्यानि यानि स्तोत्राणि तानि सर्वाणि निश्चितम् ।
अस्य स्तोत्रस्य नो यान्ति षोडशीमपि सत्कलाम् ॥९७॥

भूतप्रेतपिशाचाद्या बालवृद्धग्रहाश्च ये ।
ते सर्वे नाशमायान्ति स्तोत्रस्यास्य प्रभावतः ॥९८॥

यत्रास्य पाठो भवति स्तोत्रस्य महतो ध्रुवम् ।
तत्र साक्षात् सदा लक्ष्मीर्वसत्येव न संशयः ॥९९॥

अस्य स्तोत्रस्य पाठेन विश्वेशौ शिवकेशवौ ।
सर्वान्मनोरथान्पुंसां पूरयेतां न संशयः ॥१००॥

पुण्यं पुण्यं महत्पुण्यं स्तोत्रमेतद्धि दुर्लभम् ।
भो भो मुमुक्षवः सर्वे यूयं पठत सर्वदा ॥१०१॥

इत्यच्युताश्रमस्वामिविरचितं श्रीहरिहराद्वैतस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

शुक्ल यजुर्वेद की उच्चारणगत संक्षिप्त विशेषतायें

१——शुक्ल यजुर्वेद के मन्त्रभाग में ह्रस्व ऋकार तथा लृकार का एकार घटित पाठ होता है यथा—ऋचं व्वाचम्—रेचंव्वाचम् । क्लृप्तं च मे क्लेप्तं च मे ।

२——र तथा ऊष्मवर्ण (श ष स ह) पर में हों तो हलन्त मकार सम्बन्धी अनुस्वार का उच्चारण 'गुँकार' के रूप में होता है । यह अनुस्वार ह्रस्व स्वर के बाद में हो तो इसका दीर्घ उच्चारण, दीर्घ स्वर के बाद में हो तो ह्रस्व-उच्चारण, अनुस्वार के पश्चात् संयुक्ताक्षर हो तो गुरुभूत उच्चारण तथा ह्रस्व अथवा दीर्घ स्वर से पर होनेपर भी ऋकार संयुक्त हकारादि वर्ण आगे हो तो दीर्घ उच्चारण होता है । ह्रस्व एवं दीर्घ अनुस्वार का चिह्न पुस्तक में क्रमशः ॶ-ઠ० इस रूप में प्रदर्शित किया गया है । यथा—आगत ઠ० रथेन—आगत ऽगूँ रथेन । मरुता ॶ शर्द्धः-मरुताऽगुँ शर्द्धः । भूमि ઠ० सर्व्वतः-भूमिऽगूँ सर्व्वतः । निर ઠ हसः—निरऽगूँ हसः । बर्हिषद ॶ स्वर्व्विदम्—बर्हिषदऽगुँस्स्वर्व्विदम् । देवाना ઠ० हृदयेभ्यः—देवानाऽगूँ हृदयेभ्यः ।

३——अन्य व्यञ्जनों से असंयुक्त किन्तु पदादि में स्थित, रेफसंयुक्त, हकारसंयुक्त एवं मूलतः द्विर्भाव में स्थित—अन्तःस्थ (य र ल व) वर्णान्तर्गत यकार का उच्चारण चवर्गीय 'जकार' के रूप में होता है । यथा-यज्ञेन-जज्ञेन । सूर्यम्-सूर्ज्जम् । गेह्याय-गेह्जाय । हृदय्याय-हृदज्जाय ।

(**विशेष**——उपसर्ग के बादवाले यकार का य के रूप में ही उच्चारण होता है, जैसे—
अपि यथा- इत्यादि)

४——श, ष तथा ह ये वर्ण रेफसंयुक्त हों तो रेफ का उच्चारण रेकार सदृश होता है । यथा-दर्शतम्-दरेशतम् । चर्षणीनाम्-चरेषणीनाम् । बर्हिषि-बरेहिषि, इत्यादि ।

५——अन्तःस्थ वर्णान्तर्गत लकार का शकार तथा हकार के साथ योग होने पर लकार का उच्चारण भी लेकार सदृश होता है । यथा——शतवल्शा-शतवलेशा । व्वल्हामसि-व्वलेहामसि, इत्यादि ।

(**विशेष**---नियम ४ एवं ५ में प्रदर्शित उच्चारण महर्षि याज्ञवल्क्यप्रणीत शिक्षा में 'स्वरभक्ति' संज्ञा से वर्णित है)

६---पदादि में स्थित, रेफसंयुक्त तथा हकारसंयुक्त वकार का द्वित्त 'व्वकार' के रूप में उच्चारण होता है। यथा-वेदाहम्-व्वेदाहम्। य॒दपूर्वम्-य॒दपूर्व्वम्। गह्वरेष्ठाय-गह्व्वरेष्ठाय इत्यादि।

(**विशेष**---उपसर्ग के बाद में वर्तमान वकार को द्वित्व नहीं होता-यथा अनु वीरयध्वम्-इत्यादि)

७---ट वर्ग (ट, ठ, ड, ढ, ण) एवं ककार संयुक्त षकार को छोड़कर अन्यत्र सभी स्थानों में मूर्द्धन्य षकार का उच्चारण कवर्गीय खकार के रुप में होता है। यथा-षोडश-खोडश। इषुहस्तैः इखुहस्तैः। अन्नेषु-अन्नेखु, इत्यादि।

यद्यपि यहाँ पर शुक्ल यजुर्वेद के उच्चारणान्तर्गत मात्र कुछ विशेषताओं की ओर सङ्केत किया है-तथापि उच्चारणादि समस्त विषयों के विशेष परिज्ञानार्थं महर्षि याज्ञवल्क्य-प्रणीत शिक्षा एवं महर्षि कात्यायन-प्रणीत प्रतिज्ञासूत्र और प्रतिशाख्य का अनुशीलन नितान्त उपादेय है।

शिव शिवेति शिवेति शिवेति वा । हर हरेति हरेति हरेति वा ॥
भव भवेति भवेति भवेति वा । मृड मृडेति मृडेति मृडेति वा ॥
भज मनः शिवमेव निरन्तरं । जप मन हरमेव निरन्तरम् ॥